

महान-क्रान्तिकारी

7, 1957 [1957]

रासबिहारी बोस

(क्रान्ति के सूत्रधार)

रचयक

श्री शंकर सहाय सक्सेना

(भूतपूर्व निदेशक, कालेज शिक्षा, राजस्थान)

रचयिता — क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, बलिदानों की प्रशस्ति या शहीद पुराण, एक भारतीय तीर्थ यात्री (नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की जीवनी), देश जिन्हें भूल गया (बलिदानों की जीवनी), विजोलिया किसान आन्दोलन का इतिहास, पण्डित (श्री विजयसिंह पण्डित की जीवनी), जो देश के लिए लड़े (लोकनायक माणिक्यलाल वर्मा की जीवनी) आदि ।

प्रकाशक

मुक्तवाणी प्रकाशन

पुस्तक प्रकाशक

मॉडर्न मार्केट

बोकानेर-334 001

प्रकाशक

मुक्तवाणी प्रकाशन

प्रकाशक व विज्ञेता

माडन मार्केट

बीबानर-33 4001

★ सर्वाधिकार प्रकाशक के
आधीन सुरक्षित हैं ।

★ लेखक श्री शंकर सहाय सक्सेना

★ सप्तरण 1988-89

मुद्र

निष्ठा-भारती प्रेम

४४ बाजार

बीबानर-334 001

महान-क्रान्तिकारी



*I was a fighter,
One fight more,
The last and
The best*

Rashbihari Bose

25/4/92

रासबिहारी बोस

*"I was a fighter,
one light more,
The last and the
best"*

Ras Behari Bose
25/4/1942

*"मैं एक योद्धा था,
एक युद्ध और,
अन्तिम और सर्वोत्तम"*

रास बिहारी बोस
२५/४/१९४२



मुख्यमन्त्री राजस्थान



भूमिका

श्री शंकर महाय जी मकसेना राजस्थान के उन विद्वानों में हैं जो हमारे स्वाधीनता-सपना के पटना-चक्र के प्रत्यक्षदर्शी रहे हैं। विशेष रूप से राजस्थान में राजनीतिक जागरण के जो जन-आंदोलन हुए और उनका संचालन जिन स्वाधीनता सेनानियों ने किया, उनमें वे निश्चय से परिचित रहें हैं। व्यक्तिगत तौर पर वे अत्यंत आदरास्पद रहें हैं और इस नाते मुझमें इस पुस्तक की भूमिका लिखने का आग्रह

करने उठाने मरे प्रति अपनी गह्र आत्मीयता का परिचय दिया है।

मुझे यह देखकर प्रश्नता होती है कि सक्सेनाजी न एक ऐसे कार्य को हाथ में उठाया है, जो अब तक लगभग उपेक्षित रहा है। राजस्थान में जिन विभूतियों ने अपने जीवन के समस्त सुखा का उत्सव कर इस प्रदेश में अग्रजी सत्ता और साम तत्वाद के विरुद्ध शूलनाद किया था, उनकी जानकारी जन-जन तक पहुंचनी चाहिए, ताकि हमारी आज की पीढ़ी और भावी पीढ़ी यह जान सके कि किस आजादी की छाहटले हम आज फूल-फल रहे हैं, उसका खिरवा कितने सपनों और बलिदानों के बीच रोपा गया था। उहान क्रांतिकारी आंदोलन, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, भिजोलिया का किसान आंदोलन, विजयसिंह जी पण्डित और माणिक्य लाल जी वर्मा पर जो प्रथम प्रकाशित किबे है वे अपनी तथ्यात्मकता और प्रामाणिकता के लिए सुविदित हैं। इसी शृंगला में महान् क्रांतिकारी रासबिहारी वास पर लिखी गई उनकी यह पुस्तक नवीनतम बड़ी के रूप में हमारे सामने है।

सक्सेनाजी उन पीढ़ी के विद्वान हैं जो लक्ष्य-उम के लिए गहन अध्ययन, तथ्या वेपण और निष्पन्न दृष्टि को अनिवाय मानते हैं। उनकी इस पुस्तक की सामग्री इसका जीवन्त प्रमाण है।

स्वर्गीय रासबिहारी बोस वित्तने तेजस्वी आतिकारी थे और दश की दासता से मुक्त कराने के लिए वे वित्तने विकल थे, इसका ब्यौरा सक्सेनाजी ने काल क्रम से बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। वे एक उग्र राष्ट्रवादी थे और राजस्थान के आतिशारियों से उनके घनिष्ठतम सम्बंध थे। लाड हाडिंग पर बम फेंकने की जो योजना उन्होंने बनाई थी, उसमें इसीलिए हमारे प्रदेश के प्रसिद्ध आतिकारी जारावर सिंह जी और प्रतापसिंह जी की सक्रिय भूमिका थी। इस बम प्रकरण पर सक्सेनाजी ने विस्तार से प्रकाश डाला है और अनेक ऐसे तथ्यों को उद्घाटित किया है, जो अब तक अज्ञात थे। समूची पुस्तक में रासबिहारी बोस की जीवन यात्रा और उनके देश-भक्ति पूण काय कलाप को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि इस कृति में औपयामिक रसात्मकता उत्पन्न हो गई है जो पाठक को बराबर बाधे रहती है।

मैं श्रद्धेय शंकर सहाय जी सक्सेना को इस श्रेष्ठ पुस्तक के लेखन के लिए अपनी हार्दिक बधाई देता हूँ और अनुशोध करता हूँ कि वे राष्ट्र भक्त विभूतियों की यशोनाथाओं को प्रकाशित करने का यह क्रम निरंतर जारी रखें।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक भी उनकी पूर्व कृतियों की तरह ही विद्वानों द्वारा समाहृत होगी और इसका व्यापक प्रचार प्रसार होगा।

दिनांक 12 10 88

शिवचरण माधुर

प्रेषित — श्री अरुण सक्सेना

सचालक

मुक्तवाणी प्रकाशन

पुरतक प्रकाशक एव विक्रेता

माडन मार्केट, बीकानेर-334 001





महान् क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस पुरतक की प्रस्तावना

मुक्तवाणी प्रकाशन, के संचालक श्री अरुण सक्सेना द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'महान् क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस' का प्रस्तुत प्रयास प्रशंसनीय है। देश प्रेम व सामाजिक उत्थान के लिए उनके हृदय में जो अग्नि धधक रही है, उसकी स्फुलिंग, अमर शहीदा की जीवनियों के रूप में, वे आने वाली पीढ़ियों को सौंप देना चाहते हैं। इसीलिए ये भारत के महान् सपूतों के जीवन चरित्र व उनसे सम्बद्ध प्रेरणादायी घटनाओं का निरन्तर प्रकाशन करते आ रहे हैं।

स्वनामधेय श्री रासबिहारी बोस उन कतिपय व्यक्तियों में से एक हैं जिन्होंने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के परचात निष्प्राण पडे भारत में जान फूँकी थी और स्वतंत्रता की अग्नि पुनः प्रज्वलित की थी वे क्रान्ति के अप्रदूत थे अमरीका में भारतीय स्वतंत्रता की झलक जगाने वाले लाला हरदयाल के शब्दों में—“हम नहीं जानते यह मुक्तिदाता रासबिहारी बोस कहाँ से आया। वह भारतीयों की सत्त्व कामनाओं तथा उत्थवासा के उत्तर में आशीर्वाद के रूप में आया है। उसने हमें गहन निद्रा से जगा दिया। दासों और कायरों के मध्य उस अकेले ने यह दिखला दिया कि भारत में पुष्पत्व मर नहीं गया है। अपनी वज्रवाणी से उसने भारत की भूमि पर स्वतंत्रता का विजय रोप किया।”

श्री रासबिहारी बोस का तप-प्राय जीवन व उबरक मरिदष्क अनेक ऐसी योजनाओं का धात रहा जिसने ब्रिटिश साम्राज्य को जड़ से हिला दिया उस समय का सर्वाधिक शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य अपने कुशलतम युगचरों के भरपूर प्रयत्न के बाद भी उन पर हाथ न रख सभा था। किसी न ठीक ही कहा है कि 'देश की खातिर लहू अपना बहाना फज है, गोलियाँ सीने पे खाकर मुस्कुराना फज है आखिरी दम तक कदम आगे बढ़ाना फज है' और कर इस पर बतन का तू अगर जा बाज है, ये मेरी जाबाज गोया मुल्क की आवाज है, यह उक्ति उनके जीवन पर चरिताय होती है। अतः इस महान् स्वतंत्रता सेनानी के जीवन से सम्बन्धित यह पुस्तक अपने उद्देश्य में सफल होगी तथा राष्ट्र के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी। श्री रासबिहारी बोस का जीवन अनुकरणीय है। जैसे ध्रुवतारे तब हम पहुँच नहीं सकते फिर भी उससे हमें दिशा निर्देश मिलता है उसी प्रकार स्वतंत्रता संग्राम के इन दैदीप्यमान नक्षत्रों की ऊँचाई तक चाहे हम न पहुँच पायें वे हम भारतीयों के लिए आदर्श की एक दिशा निर्धारित करते रहेंगे।

पुस्तक के प्रकाशक व लेखक दानी ही इस नाय के लिए बधाई के पात्र हैं। मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक भावी पीढ़ी के लिये प्रेरणा का स्रोत रहेगी।

[बी० डी० कल्ला]

शिक्षामन्त्री, राजस्थान सरकार

महान् क्रांतिकारी रासबिहारी बोस (क्रान्ति के सूत्रधार)

विषय सूची

		पृष्ठ
प्रस्तावना		1
		3
अध्याय	1 पूर्वाभास	8
"	2 रासबिहारी परम्परा म	16
"	3 लाठ हथियार बम फटा बम	27
"	4 उधार ली, हुइ पत्नी	36
"	5 रासबिहारी की सगुरता	45
"	6 बम का मदेह	52
"	7 रासबिहारी का जापान गाना	56
"	8 रासबिहारी के जापान में प्रारम्भिक बय	64
"	9 बस का तोषित्त त विवाट	72
"	10 रण्डिवन रण्डिवन लीग	85
"	11 रासबिहारी बास जापान म	94
"	12 नताजी का आगमन	100
"	13 दो विद्रोहों का नेता	104
परिशिष्ट		

प्रस्तावना

भारत की आजादी की लड़ाई के साथ जिनका योद्धा-ता भी सम्बन्ध है, उनके लिए रासबिहारी बोस के नाम की जानकारी प्राश्नयजनक नहीं है। किंतु नई पीढ़ी के लिए जिनकी इतिहास से थोड़ी भी जानकारी नहीं है, उनके लिए रासबिहारी बोस एक घनजाना नाम है। भारत की आजादी की लड़ाई के महान सेनानी, महात्मा प्रतिकारी और क्रांति के हूनघार, महान विप्लवी रासबिहारी बोस एक विरपरिचित नाम है।

रासबिहारी बोस कहने के साथ ही एक ऐसी मूर्ति सामने आती है जिसका जीवन त्याग-वा एक अपूर्व उदाहरण रहा है। जिसकी महानता और धमरता को मृत्यु ने और अधिक बढ़ा दिया है। भारत की आजादी की लड़ाई में जो अद्वितीय रहा है। वह रासबिहारी बोस १८२७ के बाद का पहला क्रांतिकारी नेता है जिसने भारतीय सैनिकों को मिला कर ब्रिटिश साम्राज्यशाही को उखाड़ फेंकने के लिए सशक्त-क्रांति का आयोजन किया। विदेशों में, जिसने समस्त बिसरे हुए भारतीयों को संगठित कर आजादी के संघर्ष को आगे बढ़ाया और मजबूत किया, उस व्यक्ति को स्वतंत्र भारत में भी स्वतंत्रता प्राप्त करने के ३८ वर्ष बाद उचित सम्मान नहीं मिले, एक लज्जाजनक राष्ट्रीय दुघटना ही कही जा सकती है।

१९१२ में राजकीय समारोह के साथ दिल्ली में प्रवेश करते समय भारत के तत्कालीन वाईसराय लॉर्ड हाडिंग के ऊपर बम प्रहार कर जिस व्यक्ति रासबिहारी बोस ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ों को हिला दिया, जिसका क्रांतिकारी संग-ठन फ्लेम से लेकर गंगा के डेल्टा और बर्मा के जंगलों तक फैला हुआ था, ब्रिटिश साम्राज्य के विच्छेद सशक्त-क्रांति की जिसने निश्चित योजना बना रखी थी, और अपने इस काम के लिए जिस व्यक्ति ने एक और सॉन फ्रान्सिसवा से बर्लिन तक और दूसरी ओर टोकियो से काबुल तक अपना प्रभाव फैला रखा था, उसके बारे में देश में कुछ वृद्ध व्यक्तियों को अवश्य जानकारी है। किंतु नई पीढ़ी के युवकों को लेश मात्र भी नहीं।

मुख्य देश द्रोहिणा की मुगबरी के कारण १९१२ में सफल क्रांति प्रसक्त हुई। र रासबिहारी को अपना देश छोड़ कर १९१५ में जापान जाना पडा। जून, १९१५ में वे की ए टगोर के नाम से जाना पडुचे। यहा आने के बाद भी वे एक दण भी बालसी नहीं रहे। सघाई जाकर उन्होंने जमा सोमा से सम्बंध स्थापित किया और चीनी एजेंसिया की माफन प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारत में हथियार भेजन का प्रयत्न किया। या भी सफल नहीं हो सका। तब रासबिहारी बोस टाकियो चले आए।

ब्रिटिश सरकार का उनके एक भागण के बाद घट जात हो गया कि वे की एन टगोर नहीं हैं बल्कि महान क्रांतिकारी रासबिहारी बोस हैं। तब उसन जापान सरकार पर य दबाव डाला कि उनको बंद करके अग्रज सरकार की दिया जाए। इसी बीच चीन के महान क्रांतिकारी यो सनयात सैन ने भी भाग कर जापान में तोयामा क यहा आकर आश्रय लिए। रासबिहारी बोस ने इसी बीच जापानी महिला से विवाह कर लिया और जापानी नागरिकता प्राप्त कर ली।

महान विप्लवी रासबिहारी बोस ने १९२६ में पान एशियन भीम की स्थापना की। भारत से बाहर रहकर भी भारत की आजादी की लड़ाई का सक्रिय बनाने के उद्देश्य से उन्होंने भारत से बाहर रहने वाले भारतीयों को संगठित कर उनमें आजादी की भावना भरने का प्रयत्न किया। उन्होंने भारत के सम्बंध में सोलह पुस्तकें लिखी।

१९४३ में श्री सुभाष चंद्र बोस ने INA (आजाद हिंद फौज) का निर्माण किया। और देग का 'करो या मरो' का नारा दिया। २१ अक्टूबर, १९४३ को आजाद हिंद सरकार की स्थापना हुई। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने महान क्रांतिकारी रासबिहारी बोस को सरकार का सर्वोच्च सलाहकार नियुक्त किया। लगातार परिश्रम करने के कारण वो महान क्रांतिकारी नेता रोग ग्रस्त हो गया और २१ जनवरी १९४७ को रासबिहारी बास ने सदश के लिए आखिरी बंद कर ली। उनका जापान में इतना सम्मान किया गया कि उनके मृत शरीर को राजकीय सवारी पर, जिसमें कि जापान के सम्राट की ही सवारी जाता थी जो-जो भी के मंदिर के प्रांगण में ले जाया गया। उनकी वर सरकारी अधिकारियों को मिलने वाला सर्वोच्च आदर—सर्वेष्ठ क्लास ऑडर से सम्मानित किया गया।

अल्प त लज्जा की बात यह है कि आज स्वतंत्र भारत में कोई स्मारक उनके नाम का नहीं है। यह भारतीयों की महान कृत्तता है।

—शकर सहाय सकसेना



प्रथम अध्याय

पूर्वाभास

क्रांतिकारी आंदोलन का श्री गणेश महाराष्ट्र और बंगाल में उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशकों में हो चुका था। महाराष्ट्र में उदयपुर के ठाकुर साहब के नेतृत्व में गुप्त क्रांतिकारी संगठन खड़ा हो गया था और ठाकुर साहब, उदयपुर में भारतीय सेना की तीन रजिमेंटों को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए तैयार कर लिया था। उही उदयपुर के ठाकुर साहब ने श्री अरविंदु घोष का क्रांतिकारी संगठन में दीक्षित किया था जबकि वे बड़ौदा में थे।

श्री अरविंदु ने बड़ौदा में रहते हुए बंगाल में क्रांतिकारी आन्दोलन को आरम्भ किया और उसका नेतृत्व प्रदान किया और बाद का ताँक बड़ौदा से बंगाल ही चले आए और बंगाल के क्रांतिकारी आंदोलन को उनका सीधा नेतृत्व प्राप्त हुआ। कहने का अर्थ यह है कि भारत में क्रांतिकारी आंदोलन का आरम्भ महान क्रांतिकारी रास बिहारी बोस के बहुत पहले आरम्भ हो चुका था परन्तु जिस विशाल क्षेत्र अर्थात् समस्त उत्तर भारत में क्रांतिकारियों को संगठित कर उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत में पशावार से लेकर कनकता तक भारतीय सेनाओं को विद्रोह के लिए तैयार करने तथा भारत में ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए जसा विस्तृत और विशाल आयोजन रास-बिहारी बोस के नेतृत्व में हुआ वसा विप्लव का आयोजन १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता के युद्ध के उपरान्त भारत में नहीं हुआ था।

देश के दुर्भाग्यवश वह देश व्यापी विद्रोह सफल नहीं हुआ, और रास बिहारी बोस विदेशों से अस्त्र शस्त्र प्राप्त करने, तथा ब्रिटिश सरकार के गुप्तचरों से वचन के लिए जापान चले गए। वह महान देशभक्त और क्रांतिकारी अपनी मृत्यु गँव्या पर भी भारत की स्वतंत्रता के लिए जूझना रहा। जब से रास बिहारी बोस ने होश सम्हाला और मृत्यु की अन्तिम घड़ी तक जो महान देशभक्त क्रांतिकारी भारत माता का अग्रंजों की दासता से मुक्त करने के लिए सघन चरता रहा और १९५७ में जो देश को स्वतंत्र-

जब बालक राम बिहारी बोग कुछ उड़े हुए और मूढ़ म मध्यम क लिए जाने लगे तो उनका मन नीरव पाठ्य पुस्तका म रही गया था । व उड़्ड छात्रा म गिने जाते थे । जब वे 'डूपले कॉलेज चन्द्रनगर (जो अब फाई नाल विद्यामंदिर कहलाता है) की दूसरी कक्षा के छात्र थे तब उनका अपन अत्यापना स भगडा हो गया । इस कारण उनका उस स्कूल को छोड़ना पडा और वे बलात्ता के माटन मूढ़ म भर्ती हो गए । जहा रास त्रिहारी का मन पाठ्य पुस्तका का पटा म रही लगता था वहा थे उन प्रकार की पुस्तका ता बडे चान म पढत थे जिनम बीरानिन कार्यों अथवा शीय का वरण होता था । वे 'घान द मठ', 'पतापीर युद्ध' (पतासी का युद्ध) जमी पुस्तका को जिनम भारतीयो द्वारा दंग का अग्रता की दासता स स्वतंत्र करने के लिए बलि दा की पथा वर्णित हाती बटी तत्सनीनता के साथ पढत थ जिनम उनके कामल मानस पटन पर दश प्रेम और मानृभूमि की स्वतंत्रता क लिए बलिदान तथा त्याग करने की भावना गहराई स अरित हा गई । उम दशप्रेम तथा क्राति की भावना जमजात थी । मानव रास बिहारी बोग म भारत व मूढ़ान दशभक्त क्रांतिकारी का निर्माण हा रहा था । उनका बलि च द्र चटर्जी की पुस्तका न गूहा प्रभावित किया था । च दरनगर क डूपले कॉलेज म अपन अत्यापना स भगडा हा जान पर ब कवकता अपन पिता क पास घा गए जा बगाल सरकार क सचिवालय म काम करत थ । दशभक्ति तथा शीय की कथा जहा उनको रचिदर थी वहा व साठी बनाने म अत्यन्त निपुण थे । एक सामान्य बगाली छात्र की भाति व ज्ञात और शीय राद छात्र नही थे । माना आराम और शाति का जीवन उनके लिए नही था । उनकी प्रकृति तथा उनका उड़्ड स्वभाव उनका नित नए साहसिक काम के लिए प्रेरित करता रहता था ।

उसी समय 'निरालम्ब स्वामी' उपनाम जतींद्र नाथ व घावाध्याय अरिबिदु घोष के उग्र राष्ट्रवाद के सदेश को लेकर बगाल म क्रांतिकारी आंदोलन का फलाने तथा गुप्त क्रांतिकारी समठन की लडा करने आए । रास त्रिहारी वास च दरनगर के अग्र क्रांतिकारिया के साथ उनस बहुत अघिा प्रभावित हुए । वे चारुचंद्र राय क सुहृद सम्मिलन के सदस्य बन गए । इस समठन का मुख्य उद्देश्य देश म क्रांतिकारी आंदोलन का प्रसार करना था । उस समय रास बिहारी बोग केवत पंद्रह बप के थे परंतु उनके अंतर म क्रांतिकारी विचार गहराई स बठ गए थे और समस्त क्राति के द्वारा भारत स अ प्रेजो का निकाल बाहर करने का विचार उनके मस्तिष्क म धूमने लगा था ।

इसी उद्देश्य से व सेना म भर्ती होना चाहत थ । पहल उहोन च दरनगर म क व भारतीय सेना म प्रवेश प्राप्त करने का प्रयत्न किया परंतु वे असफल रहे । उनको सेना म नही लिया गया । उसके उपरान उ ठाने कलकत्ता म ब्रिटिश सेना म भर्ती होने का प्रयत्न किया किंतु वहा भी उह रही लिया गया । उस समय बगालिया को सेना म न लेने का नियम था क्योंकि एमी मानना थी कि बगाली सेना के लिए उपयुक्त नही होते । जब उह वहा सफलता नही मिली तो वे घर स भाग खडे हुए और जयपुर राज्य की सेना म भर्ती होने के लिए चल पडे । परंतु माथ म उनके पिता क एक मित्र मिल गए वे उन्हें पकड कर चन्द्रनगर ले आए ।

जब रास बिहारी बोग के पिता की शिमला म राजकीय प्रेस म महाराज का

पद मिला और वे कनकसा से शिमला गए थे तब रामबिहारी पुन चन्द्रनगर आ गए थे। जहाँ उनके अनिष्ट विराधी बंधु रतन थे। सेना में नहीं होने में असफल हो जान पर रास बिहारी वापस न पढाई छाड़ दी थी व ब्राह्मिकारी बन गए थे और क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए आतुर थे।

जब उनके माता पिता न देखा कि लड़के ने पढना छोड़ दिया है तो वे निराश हुए परंतु माँ उन्हें लेकर शिमला गई जहाँ उनके पिता ने उनको राजकीय प्रेम में बापा हाउस के स्थान पर नियुक्त करवा दिया। परंतु वहाँ भी रास बिहारी अधिक दिनों काम नहीं कर सके। वहाँ बाप करते हुए रामबिहारी का अग्रजो भाया के लिखन तथा बालन का अग्रजा सम्मान हो गया और उन्होंने टक्कन सीग लिया। प्रेस में कुछ कमचारियाँ न गड़बड़ की रामबिहारी के पिता का सदेह हुआ गया कि उस गड़बड़ी में रासबिहारी का हाथ था अस्तु उन्होंने रास बिहारी को त्याग पत्र बन के लिख कर दे दिया। रामबिहारी बोस ने प्रेस की सेवा में त्यागपत्र दे दिया।

उनके पिता न देहरादून की फोरस्ट रिमच इस्टीट्यूट में रास बिहारी वास की नियुक्ति करवा दी। दहली साहौर पड़यत्र अभियान के फसले में उन्हें देहरादून फोरेस्ट रिमच इस्टीट्यूट के रसायन विभाग के अध्यक्ष सरदार पूरनसिंह की रमायन शाला में लैबरेटरी असिस्टेंट के पद पर नियुक्त हुए थे।

रासबिहारी बोस १९०६ में देहरादून फोरस्ट रिमच इस्टीट्यूट में नियुक्त हुए जबकि वे बाईस वर्ष के थे।

यह हम पहले ही लिख चुके हैं कि जब रास बिहारी बोस पंद्रह वर्ष के थे और चन्द्रनगर में थे तभी वे निरालम्ब स्वामी (जितेन्द्र नाथ बदायाध्याय) के द्वार प्रभावित हुए थे और मुहूद सम्मेलन के सदस्य बन गए थे। पंद्रह वर्ष की अल्प आयु में ही उन्होंने अपना समस्त जीवन मातृभूमि का स्वतंत्र करन के लिए अर्पित कर दिया था।

देश की राजनीतिक स्थिति

उस समय देश की राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन आ रहा था और उग्र राष्ट्रीयता की भावना बढ़नी ही गई थी। स्वामी विवेकानंद ने धार्मिक प्रवृत्तियों पर आधारित जित राष्ट्रवाद का संदेश दिया था वह देश में गूँज रहा था। दशभक्ति तथा सामाजिक सुधार के विचार जिन्हें राजा राम मोहन राय ने देश का दिया और जिनको विद्या सागर बकिमचंद्र तथा रवीन्द्र नाथ टगोर आदि ने और अधिक विकसित कर प्रसारित किया देश में फल रहे थे। श्री अरविंदु ने इंदु प्रकाश में 'यूल्फस फार ओल्ड' (पुराना के स्थान पर नए दीपक) शीषक लखमाला में राष्ट्रीय महासभा (इंडियन नेशनल कांग्रेस) का उस समय नरम दल के नेताओं से प्रभावित थी की नीति थी तथा उन नेताओं की ऐसी कटु और तीव्र आलोचना की कि तत्कालीन कांग्रेस नेता तिलमिला उठे।

कांग्रेस के विषय में लिखते हुए उन्होंने लिखा —

'कांग्रेस के बारे में मुझे यह कहना है इसने उद्देश्य भ्रान्त है, तथा उन्हें

चरिताथ करने में इसकी भावनाओं में सच्चाई, ईमानदारी और पूरा मनोयोग दिखाई नहीं देता। जो साधन इसमें अपनाए हैं वे नितान्त अनुपयुक्त हैं और जिन नताओं में इसे प्राप्त है वे नेता बनने योग्य व्यक्ति नहीं हैं। अर्थात् इस समय हम अपने नतुत्व में चल रहे हैं—यदि बिस्वुस अर्थ नहीं तो एव प्रायः वाले नेतृत्व में 'उन्होंने कांग्रेस की सरकार की भिक्षा मागने की नीति को अमान्य कर दिया। उन्होंने पहली बार देश में सशक्त स्वर में कहा कि 'देश की स्वतंत्रता रूधिर और अग्नि में पवित्र होकर ही प्राप्त होती है।'

उनके लक्ष्य से कांग्रेस क्षेत्र में एसी खलबली और धोभ उत्पन्न हुआ कि वे उन लक्ष्य के लक्ष्य की तालमेल में लग गए। परन्तु श्री अरिबिदु क्योकि बडौदा राज्य की सेवा में थे इस कारण उन्होंने अपना नाम में व लिये थे अस्तु लेखक का पता नहीं चल सका। तब 'वायमूर्ति महादेव गाविंद रानाड' ने 'इन्दु प्रकाश' के सम्पादक देशपांडे से कहा कि 'यदि वे इस प्रकार के लेख छापते रहें तो सरकार उनका गिरफ्तार कर लगी।'

इसी समय श्री अरिबिदु ने देश की हीन दशा की घोषणा शक्ति प्राप्त करने की ओर अपने प्रेरणादायक लेख में देश का नीचे लिख शब्दों में प्रकट किया।

"यदि हम अपनी सभ्यता को खोले और हमारे पासपास पृथ्वी के अथ देशों में जो हा रहा है उस पर शक्तिपात करें तो जहाँ भी हमारी शक्ति जावेगी। तो हम देखेंगे कि हमारी शक्ति के समान शक्ति का महान और विशाल पुत्र खड़ा है, द्रति गति से उभरने वाली अग्नी शक्ति का विस्तार हा रहा है। हमारे चारों ओर विराट रूप में बल और शक्ति का प्रदर्शन हा रहा है। धूमकेतु के समान शक्ति की विकरालधारा प्रवाहित हो रही है। सब कोई बड़ा और मजबूत बन रहा है। युद्ध की शक्ति धन की शक्ति, विज्ञान की शक्ति आज पहले की अपेक्षा से दस गुनी अधिक शक्तिशाली और प्रचंड हैं। सौ गुनी अधिक भयंकर शीघ्रगामी तथा अपने वाय में व्यस्त है, हजार गुनी अपने साधनों अस्त्र शस्त्रों और मीजारा में बहुपुत्र हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि मानव समाज में शक्ति का ऐसा विस्तार और विकास मानव जाति के इतिहास में कभी नहीं हुआ था। प्रत्येक स्थान पर माता वाय कर रही है। उनके महान शक्तिशाली और निर्माणकारी हाथों में अदृशित रूपों के राधास असुर और शैताना निमित्त होकर इस पृथ्वी रूपी अखांडे में उतर रहे हैं। हमने पश्चिम में धीमी गति से परन्तु महान शक्तिशाली साम्राज्यों के उदय को देखा। हमने जापान के तीव्र गति से और आरोग्य तथा सतुष्ट होने वाले नवजीवन को विरसिन हाते देखा। कुछ म्लेच्छ शक्तियाँ हैं जो काली अथवा रक्तवर्ण कमिज रंग की होती हैं उनमें तमोगुण और रजो गुण की अधिकता होती है। अथ अथ शक्तियाँ हैं जो त्याग और आत्म बलिदान की अग्नि में अवगाहन कर शुद्ध होकर निकलती हैं। परन्तु अपनी नई प्रावस्था में सभी माता हैं जो कि सज्जन और पुन निर्माण का वाय करती हैं। माता पुराना में नवीन भावना उडेलती हैं और वह नवों को जीवन प्रदान करती हैं।

किंतु भारत में श्वास की गति बहुत धीमी है उसके पुन निर्माण में बहुत दूर लग रही है। भारत का अत्यंत प्राचीन माता है रास्त्व में पुन जन्म लेने के लिए

प्रयत्नशील है ।

वह जस्ट धीरे धीरे गांधी का नाम जानना प्रयत्न कर रही है परन्तु उसका प्रयत्न व्यर्थ हो जाता है । उसका राग क्या है ? वह जानना ही विनाश है और शक्तिशाली का सपना है उसका सपना—सा राग गन्ना रहा है । धरम ही हमम बाई वडा दाप ह । हमम बाई जीवन के लिए मानस्यता तथा मानिस वस्तु की रमी है । हमम बा रमी है उसका मोत्र निवाता गठिन रही है । हमार पाम भ पगव गदुण है परन्तु हमम शक्ति का अभाव रही ह । हम अास्त्र हीन ह । हमने शक्ति का त्याग निया इसािन शक्ति न हम त्याग निया । माता मार हुन्या म, हमार मतिता म और हमारी मुजाफा म रही है ।

यदि भारत का जीवित रहना हुआ तो उस पुनः संरक्षण प्रनाश होगा । जिन प्रकार प्राचीन काल में जीवन शक्ति की बेगवती धारा भारत में प्रवाहित होती थी उसी प्रकार उस पुनः जीवन शक्ति का प्राप्ति करना होगा । जिन प्रकार समुद्र का जल हिल्लोल कभी प्रशांत और कभी प्रचंड होता है उसी प्रकार भारत का अर्थनी इच्छानुसार कम अथवा शक्ति का समुद्र बनाना होगा । हमम बहुत स तामन निता न व वशीभूत हान के कारण अक्रमण्यता के भीमताय वाले देश के प्रभाव व प्रभावित हारर आजतन कहत हैं कि यह असम्भव है । भारत का पतन हुआ गया है उसमें स्थिर तथा जावन शक्ति का अभाव है वह इतना अधिक निबल हुआ है कि वह अक्षय रही है । सक्ता हमारी जाति का विनाश अवश्य सम्भावी है । यह मूलतापूण और धालस्य व पडे हुए अक्रमण्य लोग का कथन है । बाई भी व्यक्ति या राष्ट्र निबल रही हाता जब तक कि वह स्वयं अपनी भूला स अपने का निबल न बना ल । फिनी व्यक्ति अथवा राष्ट्र का विनाश और पतन नहीं होता जब तक कि वह जान बूझ कर उसका अग्रगण्य न करे ।

भारत का विनाश अथवा पतन नहीं हो सकता क्योंकि मानव समाज के विभिन्न समूहों में भारत का अस्मत्त भव्य तथा उच्चतम भाग्य सुनिश्चित और नियति द्वारा सुरक्षित है ।

श्री अरिबिंदु के ऐसे प्रेरणा गान प्रतिध्वनित होने वाले और आत्मा को झरझोर धन वाले शब्दों ने तक्षण रान बिहारी के मस्तिष्क में गहन देशभक्ति की भावना को जागृत कर दिया । श्री अरिबिंदु के शक्ति प्राप्त करने के उद्बोधन युवक रास बिहारी दास का गहन विघ्ननाम और तीव्र भाषना वाला क्रांतिकारी बन दिया । मातृभूमि का दासता की श्रृंखलाओं में बंधी उस वधन मुक्त करने के लिए उसका स्वतंत्र करने के लिए उसके अंतर में अमित पिपासा उत्पन्न हो गई । श्री उद्बोधन पत्रों वप की अवस्था में ही देश की स्वतंत्रता के लिए अपने जीवन व उत्सर्ग करने का व्रत ले लिया । यह तो हम पहले ही लिख चुके हैं कि जितने द्रव्य वानेपापाय (वनर्जी) का वाद को निरासम्ब स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए उनके बडोदा से श्री अरिबिंदु ने बंगाल में क्रांतिकारी संगठन खड़ा करने के लिए भेजा था उस हाने चदरनगर में रास बिहारी दास तथा अथ युवकों को क्रांतिकारी पथ में दीक्षित किया ।

उस समय देश में लाइ उजन द्वारा १९०५ में जा बंगाल का भयकर दो

सूवा में बाट दिया गया था। उसमें समस्त देश में वमाल में विशेषकर उग्र राष्ट्रवाद फूट पड़ा था। कांग्रेस में भी सोनमाय तिनक नाना लाजपतराय तथा त्रिपिनचन्द्र पाल के नेतृत्व में उग्र राष्ट्रवाद की भावना बल पकड़ रही थी। मृत्यु कांग्रेस अधिवेशन में कांग्रेस नरम दम और सरपटन में बंध गई। 'तात्मा तिनक' तत्र ग्रेजा में भीम मागन के स्थान पर उग्र राष्ट्रवाद का मदन लिया। उद्दान वहा स्वराज्य हमारो जन्म-सिद्ध अधिनार है।'

मुजफ्फरपुर घम कांड में उपरांत सरदार का दमन चार तरफा व माय चना सोनमाय न बहा कि सरदार का इन दुषटनाया के मूल कारणों की ग्योत्र कटनी चाहिए और उनको दूर कर देना चाहिए। एम कांड सरदार द्वारा जामन के अधिद्व निग गण बग मग के परिणाम हैं अत उगम्य वा ही समाप्त कर देना चाहिए। इमी आशय के उद्देश्य अधन पत्र बेमरी में लेग १ वम गाला का रहस्य, २ व उपाय टिकाऊ नही, ३ देश का दुर्दैव लिये। सरकार न उन पर राजद्रोह का अधिभाग चलाया और २२ जुलाई १९०८ का उनका ६ वर्ष के निर्वासन (अडमन) का दण्ड दे दिया गया। माने देश में इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई।

तो युवक राम विहारी दश में जा उग्र राष्ट्रवाद की बगवती धारा प्रवाहित हो रही थी उसमें अदगाहन कर मातृभूमि को नशस्त्र विद्रोह तथा क्रांति के द्वारा स्व-राज्य करने के स्वप्न अधन जीवन के प्रारम्भ में ही देखन लग थे।

रामविहारी बोस का उत्तर भारत के क्रांतिकारियों के नेता के रूप में उदय

यह हम पहले ही कह आण है कि युवक रामविहारी बाम प्रसिद्ध क्रांतिकारी जितेंद्र माहा चटर्जी के सम्पर्क में आण। घममग के कारण जा उग्र राष्ट्रीयता का विराम हुआ उस समय जितेंद्र माहन चटर्जी न गव गुप्त सस्था बाई जिसका रहस्य अ ग्रेजा, विशेषकर अ ग्रेज सैमिहा में भारतीयों के साथ अधमान जनक स्पवत्राण करने उनके प्रति अस्पृहाचार करने के निग धदना ना था।



दूसरा अध्याय

रासबिहारी चन्द्रनगर में

देहरादून में नियुक्त होने पर आरम्भ में रासबिहारी बंस टगोर विला में रहे जो कि प्रफुल्ल नाथ टगोर के उद्यान में बना हुआ विशाल मकान था। उस विशाल उद्यान और कोठी के प्रबंधक श्री अनुसु चन्द्र बंस ने रासबिहारी बंस को आरम्भ में वहाँ रहने की सुविधा ही नहीं दी वरन् आगे भी वे उनकी आर्थिक सहायता करने रहे। जब रासबिहारी बंस टगोर विला को छोड़कर आया रहने लगे तो भी वे बहुधा वहाँ आते और अपने युवक मित्रों से विभिन्न विषयों पर चर्चा करते थे। टगोर विला में एक सौ बीघा भूमि थी उसमें आम और लीची के सघन बाग थे जहाँ रासबिहारी और उनके तरुण साथी गुप्त वार्ता के लिए अनुकूल स्थान पाकर बहुधा मिलते थे। रासबिहारी बंस ने वहाँ बस बनाने की भी व्यवस्था की थी। इस कार्य में अनुसुचन्द्र बंस उस कोठी और बाग के कोष से उनकी आर्थिक सहायता करते थे। अंगल सरकार के गुप्तचर विभाग के रिपोर्ट के अनुसार उस बाग में रासबिहारी बंस अनुसु घोष (गुप्तचर विभाग के प्रलेख में बंस को घोष दिख गया।) टगोर विला के प्रबंधक का नाम अनुसु बंस था। हरिपद बंस और अलेन बर्नार्ज प्रतिदिन मिला करते थे। वे आपस में गहरे मित्र बन गए थे। गुप्तचर विभाग के प्रलेख के अनुसार इन्तानावाद उच्च न्यायालय के प्रतिद्वन्द्वी बख्त महीने आकर टगोर विला में रहे थे। रासबिहारी तथा उनके मित्र उनसे प्रतिदिन मिलते थे।

जितेन्द्र मोहन चटर्जी से सम्पर्क

जितेन्द्र मोहन चटर्जी महारनपुर के निवासी थे। उन्होंने वहाँ एक गुप्त क्रांतिकारी समिति स्थापित कर रखी थी जिसका मुख्य उद्देश्य अंग्रेज सैनिकों के मुख्यतः स्टेशनों पर दुर्व्यवहार का बदला लेना था। ब्रिटिश शासन का भारत से उखाड़ फेंकना था। १९०६ में जितेन्द्र मोहन चटर्जी अपनी बड़ी बहन के चड़े लड़के के

मे देहरादून आए थे। वे उस विवाह में सम्मिलित होने के लिए अपने वहनोई श्री पूरन चन्द्र बनर्जी के यहाँ कुछ दिन टिक्के। श्री रासबिहारी बोस भी उस विवाह में सम्मिलित हुए थे। जितेन्द्र मोहन चटर्जी और रासबिहारी ने गहरी आत्मीयता उत्पन्न हो गई जो कि भारत में क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा उपयोगी सिद्ध हुई।

बंगाल के उपरांत पंजाब तथा उत्तर प्रदेश में भी क्रांतिकारियों के महत्वपूर्ण केंद्र स्थापित हो गए थे। इन क्रांतिकारी केंद्रों को संगठित करने में बंगाल के क्रांतिकारियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी।

यह हम पहले लिख चुके हैं कि श्री भरिबिन्दु घोष जब बड़ौदा में थे तो उन्होंने जतीन्द्रनाथ बघोपाध्याय (बनर्जी) जो बाद में निरालम्ब स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए बंगाल में क्रांतिकारी संगठन स्थापित करने के लिए भेजा था। बाद में उन्होंने अपने भाई वारीन्द्र कुमार घोष को भी बंगाल में बय करने के लिए भेजा। दुर्भाग्यवश वारीन्द्र का जतीन्द्रनाथ से गहरा मतभेद हो गया। जतीन्द्रनाथ ने बंगाल को छोड़ दिया। और वे क्रांतिकारी भावना का प्रसार करने के लिए निक्ल पड़े।

१९०६ में जब वे पंजाब में आए तो उन्होंने लालचन्द्र फनक, किशन सिंह, अमर शहीद (भगत सिंह के पिता) डाक्टर हरी चरण मुखर्जी (अम्बाला के) पेशावर के डाक्टर चारु चन्द्र घोष स्यालकोट के लाला अमर दास इत्यादि को देश का स्वतंत्र करने के लिए क्रांतिकारी संगठन गढ़ा करने की प्रेरणा दी। बाद में इस क्रांतिकारी संगठन का लाला राजपत राय सरदार अजीत सिंह (अमर शहीद भगत सिंह के दादा) सूफ़ी अम्बा प्रसाद तथा लाला हरदयाल से भी सम्बन्ध स्थापित हो गया था।

जब १९०८ में लाला हरदयाल इंग्लैंड से भारत वापस लौटे तो वे इस क्रांतिकारी दल की ओर आकर्षित हुए। उन्होंने शीघ्र ही उस दल में सम्पत्ति और निष्ठावान् कार्यकर्त्तियों को आकर्षित कर लिया उनमें जितेन्द्र मोहन चटर्जी प्रमुख थे। जब लाला हरदयाल पुनः इंग्लैंड जाने लगे ★ तो उन्होंने जितेन्द्र मोहन चटर्जी का देहली स्टेशन पर मास्टर अमीरचन्द से परिचय करवाया और बतलाया कि वे उनके अत्यन्त विभवस्त पात्र एवं सहायक हैं और उनके इंग्लैंड चले जाने के उपरांत दल का नेतृत्व करेंगे। अमीरचन्द देहली के अत्यन्त प्रभावशाली क्रांतिकारी नेता थे। उन्होंने अपने भासपाम अवध बिहारी, बनराज, बाल भुवन्द जैसे सम्पत्ति और निष्ठावान् क्रांतिकारियों को इकट्ठा कर रखा था। जितेन्द्र मोहन कुछ दिनों मास्टर अमीरचन्द के पास रहकर सहारनपुर चले गए और अपने राजनीतिक गुट लाला हरदयाल के द्वारा उनको बतलाये हुए काम में जुट गए। लाला हरदयाल के दिए हुए परिचय पत्रों की नेत्र उन्होंने सम्पन्न बढ़ाया और क्रांतिकारी दल में नए मदस्य भर्ती किए। उन्होंने अपने हाथ से लिखकर क्रांतिकारी दल के भावी कार्य का कार्यक्रम बनाया। उन्होंने रासबिहारी के पास सदेश-

★ लाला राजपतराय का यह ज्ञात हो गया था कि सरकार ने लाला हरदयाल को गिरफ्तार करने का निश्चय कर लिया है अस्तु उन्होंने लाला हरदयाल को भारत से चले जाने का परामर्श दिया था।

वाहक भेजे कि वे उनका सम्पर्क वगात के क्रांतिकारी दला से करवा दें। चन्द्रनगर के प्रमुख और अत्यन्त साहसी क्रांतिकारी श्रीपचन्द्र घोष वा जितेन्द्र मोहन, का परिचय रासबिहारी बोस के माध्यम से ही हुआ था।

श्रीपचन्द्र का जितेन्द्र मोहन से परिचय हा जाने के उपरांत वह कई बार (१९०६-१९१०) सहारापुर उनसे मिलाने आए। वे 'अभीर' के छद्म नाम से राम बिहारी बोस (मानिक) को पत्र लिखत थे।

जितेन्द्र मोहन द्वारा हाय मे लिखे हुए पार्ले के कार्यक्रम की पाहुलिपि पुस्तिका को सरदार अजीत सिंह के पत्र 'भूगसियाल' के कार्यालय म भिज गई। यही नहीं उन्हें यह भी पता चला कि उनका लेखक कौन है। जैसे ही जितेन्द्र मोहन को यह पता चला कि पुलिस को उनकी लिखी हुई दल के कार्यक्रम की पुस्तिका मिल गई है। उन्होंने क्रांतिकारी दल के नेतृत्व का भार रासबिहारी बोस को सौंपकर इंग्लैंड कानून का अध्ययन करने के लिए जाने का निश्चय कर लिया। उन्होंने रासबिहारी बोस को सहारापुर बुलाया उन्हें दल के सम्बन्ध म सभी आवश्यक सूचनाएँ दी और १९१० मे वे इंग्लैंड के लिए चल दिए। पुलिस उनका गिरफ्तार करने का प्रयत्न ही करती रही। जब पुलिस जितेन्द्र मोहन का पता लगाने का प्रयत्न कर रही थी सभी सरदार अजीत सिंह तथा सूफी अम्बा प्रसाद की गिरफ्तारी के वारंट निकाले गए क्योंकि "भूगसियाल" तथा 'स्वराज्य पत्रा को चलाने वान के ही थे। मरनार अजीत सिंह और सूफी अम्बा प्रसाद १९०६ मे ईरान चले गए।

रासबिहारी बोस ने देहरादून मे क्रांतिकारिया का दल एकत्रित कर लिया था और वे भावी कार्यक्रम की रण रत्ना तयार कर रहे थे। जितेन्द्र मोहन के इंग्लैंड चले जाने के उपरांत पंजाब के क्रांतिकारिया का नेतृत्व भी उनके हाथ म आ गया। अब वे देहरादून म बठकर पंजाब और उत्तर प्रदेश के क्रांतिकारी छात्रों का संचालन करने लगे।

मोतीलाल राय से सम्पर्क

१९११ के आरम्भ मे श्री राम बिहारी बोस अपनी माता के बीमार होने का समाचार पाकर चन्द्रनगर आए। उनमे बानपन के अभिन्न और घनिष्ठ मित्र श्रीपचन्द्र घोष वा चन्द्रनगर के क्रांतिकारियों के नेता श्री मोतीलाल राय से उनका परिचय कराया। श्री मोतीलाल राय श्री चरिबिन्दु घोष के परम निष्ठावान अनुयायी थे। जब रासबिहारी बोस श्री मोतीलाल राय से मिल ता वे श्री मोतीलाल राय से बहुत प्रभावित हुए। श्री मोतीलाल राय न रासबिहारी बोस को मोता के आदेश 'आत्म गमपण का प्रेरणा दायक मदेश दिया। रासबिहारी बोस उसमे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने सर्वोच्च लक्ष्य अर्थात् मातृभूमि का स्वाधीन बनाने के अपने सम्पूर्ण जीवन का पूणतया समर्पित करने का सत्यनिष्ठा स व्रत ले लिया।

श्री मोतीलाल राय न रासबिहारी बोस द्वारा शपथ लिए जाने की घटना नीचे लिखे शब्दों म वर्णन किया है।

"मुझे यह निश्चय है कि जब रासबिहारी बोस मेरे क्रांतिकारी शिष्य

सहयोगी श्रीपचन्द्र घोष के साथ मुझमें मिलने आए थे। हम दोनों उस ऐतिहासिक कथम वेंडे थे जिसमें कुछ महीने पूर्व श्री अरिबिन्दु घोषनी परारी प्रवस्था में छिपकर रहे थे। ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे अंतरस प्रेरणादायक शब्द निकले जबकि मैं श्री अरिबिन्दु द्वारा मुझे बतलाए हुए आत्मसमर्पण अध्यात्मिक याग की व्याख्या कर रहा था। ऐसा प्रतीत होता था मानो रासबिहारी गहन मौन के साथ उन शब्दों का पी रहे थे। चर्चा के समाप्त होने पर एनाएक वे ध्यात मग्न हो गए और अत्यंत उत्साह के साथ उनके मुख से शब्द निकले 'ममलमय भगवान् वायराज हैं यह आध्यात्मिक संचालन शक्ति हैं क्या मातीलाल ? अब मुझे सत्कार में अपना शोष तो हथेली पर रखकर विचरण करना होगा मैं सत्यमेव एसा ही बरूना।' इस प्रकार मातीलाल राय के आत्मसमर्पण की व्याख्या के फल स्वरूप रासबिहारी बोस ने आत्मसमर्पण के पथ को अपना लिया।

उसी बीच में रासबिहारी बोस की माता का स्वर्गवास हुआ गया और क्योंकि उनका अन्वेषण समाप्त हो गया था वे वापस देहरादून चले गए। परंतु इससे पश्चात् शीघ्र ही उन्होंने सितम्बर १९११ में लम्बा भ्रमण से लौटकर और च दरनगर वापस आ गए तो रासबिहारी बोस, मातीलाल राय, श्रीपचन्द्र घोष और अनुशीलन समिति के श्री प्रतुलचन्द्र गंगाली ने क्रांतिकारी दल के वायसराय के सम्यक् में सम्मिलित किया। उसी समय दिसम्बर १९११ में दिल्ली दरबार में सम्पादन बगभग के समाप्त किए जाने और बलमत्ता के स्थापना पर दिल्ली का भारत की राजधानी बनाने की घोषणा कर दी। जब एक ओर श्री मातीलाल राय, श्रीपचन्द्र घोष तथा रासबिहारी बोस के मध्य तथा दूसरी ओर अनुशीलन समिति के प्रमुख प्रतुलचन्द्र गंगाली के मध्य भारत में सशस्त्र विद्रोह की रूप रेखा पर चर्चा तथा वाद-विवाद होता था तभी तत्कालीन वायसराय लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की वृत्तिका न उन तरफ क्रांतिकारियों के मस्तिष्क में मूल-रूप लिया था। वे भारत के वायसराय पर बम फेंक कर यह प्रदर्शित करना चाहते थे कि भारत ब्रिटिश शासन का सहज नहीं बल्कि सपत्ता वह ब्रिटेन की दासता की समाप्ति करने पर कटिबद्ध है। अभी तक अंग्रेज शासन के सत्कार में यह दिवारा पीटते थे कि भारत-वासी ब्रिटिश शासन से अत्यंत सतुष्ट हैं और वे सम्राट के प्रति आभार और श्रद्धा रखते हैं। सम्राट के प्रतिनिधि पर बम फेंक कर वे सत्कार का बताना चाहते थे कि भारतीय ब्रिटिश शासन को समाप्त कर उसकी दासता से मुक्त होना चाहते हैं।

श्री मातीलाल राय के अनुसार भारत के वायसराय लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने का विचार श्री श्रीपचन्द्र घोष के मस्तिष्क की उत्पत्ति थी। रासबिहारी बोस ने तुरन्त उस क्रांतिकारी विचार का मूर्ति रूप देने का निश्चय कर लिया। इसी विचार-से वे अपने साथ देहरादून बसत विश्वास का लिए। प्रकट रूप में बसत विश्वास रासबिहारी बोस का रसोदमा तथा सेवक था परंतु वे उसका बम फेंकने के लिए बंगाल से देहरादून लाए थे। बसत विश्वास तथा ममथयाथ विश्वास नदिया जिले के पोरामाछा गांव के निवासी थे और आपस में चचेरे भाई थे। वे 'अमरीजी समवाय' को १९०८ में अमरेन्द्रनाथ चटर्जी तथा खिराद गंगाली ने स्थापित किया था। 'श्रीपचन्द्र घोष' के समवाय क्रांतिकारी हलचलों का प्रमुख नेत्र बन गया। इस आत्मार्थिक समवाय पर तनी बंगाल के क्रांतिकारी धार थे। च दरनगर के श्री मातीलाल राय तथा श्रीपचन्द्र घोष

वहा नियमित रूप से घाते थे ।

पोरागाछा स्कूल के हेडमास्टर श्री खिरोद गामुली ने धारम्भ में बसंत विश्वास और मन्मथ विश्वास को थमजीवी समयाय बं बाम करन के लिए चुना था । परन्तु अमरेन्द्रनाथ चटर्जी ने उन्हें क्रांतिकारी बाय के लिए श्री मोतीलाल राय का सोप निया श्री मोतीलाल राय ने उनका परिचय श्री रासबिहारी बोस से कराया रासबिहारी बोस ने साउ हाडिंग पर बम फेंकने के लिए बसंत विश्वास को चुना ।

वे बसंत विश्वास को अगन साय देहरादून ले गए उसको वहा क्रांतिकारी बाय का प्रशिक्षण दिया गया । कई महीना तब प्रशिक्षण दे चुकन के बाद बसंत विश्वास को वे लाहौर ले गए और वहां एम डिस्पेसरी में गौनर करवा लिया । उस डिस्पेसरी का नाम 'पापुलर डिस्पेसरी था ।'

१३ अक्टूबर, १९१२ को अथवा उमके आसपास रासबिहारी ने अग्रवाल आश्रम के समीप एक बमरे में एक गुप्त गांठी बुनाई । उसमें उनके अतिरिक्त अग्रवाल बिहारी, दीनानाथ और बाल मुकुन्द उपस्थित थे । उस गुप्त मीटिंग में यह निश्चय किया गया कि बायसराय पर बम फेंका जावे और एक विज्ञप्ति उस कांड की प्रशंसा करते हुए निकाली जाव । अथवा बिहारी, दीनानाथ और बाल मुकुन्द सगठन के शीप नेता नियुक्त किए गए । ★

इसके कुछ दिना बाद ही रासबिहारी सारी व्यवस्था को देखने तथा तत्सम्बन्ध अतिम व्यवस्था करने के लिए चन्दरनगर गए अपनी चन्दरनगर की यात्रा में रासबिहारी, अग्रवाल सरक्यूलर रोड, ललकता में राजा बजार में अनुशौलन समिति के केन्द्र के सामने जिसका सञ्चालन श्री अमृतलाल हाजरा करते थे, के सामने एक भेस में श्री नलिन विशोर गुहा से मिले । श्री रासबिहारी बोस ने श्री गुहा से कहा कि वे "स्वाधीन भारत" में एक लेख लिखकर बायसराय के देहली में प्रवेश के सम्बन्ध में किए जाने वाले प्रदर्शन की भत्सना करे और यह घोषित करें कि यह राष्ट्रीय अपमान है और भारत में हिंसों के विरुद्ध है । श्री रासबिहारी बोस ने श्री गुहा को इस सम्बन्ध में एक छोटे से कागज पर टकण की हुई कुछ सूचनाएँ भी दी जो कि वे अपनी कमीज के मुँहे हुए बप में छिपाए हुए थे । नलनी विशोर गुहा ने रासबिहारी बोस के आदेश के अनुसार लेख लिखकर स्वाधीन भारत में प्रकाशित करवाया यद्यपि उस समय उनको यह नहीं मालूम था कि बायसराय पर बम फेंकने का पड्यत्र हा रहा है ।

योजना के अनुसार बसंत विश्वास लाहौर से २१ दिसम्बर, १९१२ को देहली गया और अथवा बिहारी भी उसके पीछे देहली की ओर चल पडा, देहली में बसंत कुमार विश्वास अमीरचन्द के मकान पर ठहरा और ऐसा प्रतीत होता है कि बम कांड के समय अथवा बिहारी भी लाहौर के बाहर था । २३ दिसम्बर १९१२ को जिस दिन

★ श्री एम हेरीमन अतिरिक्त सज्जन जज का देहली लाहौर पड्यत्रों सम्बन्धी फसलाता ५ अक्टूबर, १९१४ । दीन नाथ को सरकार कथाकि वह एप्रूबर बन गया था महत्त्व देना चाहती थी इस कारण जज ने उसको भी सगठन का नेता लिख दिया वास्तव में यह प्रमुख क्रांतिकारी नेता नहीं था ।

बम फेंका गया रासबिहारी भी देहली पहुँचे । उनका देहली पहुँचने का उद्देश्य यह था कि उनके व्यक्तिगत निर्देशन में बम फेंका जावे ।

जितेन्द्र मोहन चटर्जी का बोस से सम्पर्क

१९०६ में वे अपने भतीजे के विवाह में सम्मिलित होने देहरादून आए और वहाँ उनका रास बिहारी से सम्पर्क हुआ । रासबिहारी बोस भी उस विवाह में सम्मिलित हुए थे । जितेन्द्र मोहन चटर्जी तथा रासबिहारी बोस की मित्रता भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के लिए अमूल्य निधि सिद्ध हुई ।

पंजाब और उत्तर प्रदेश उस समय संयुक्त प्रांत बंगाली क्रांतिकारी आंदोलन के महत्वपूर्ण केन्द्र थे । पंजाब में क्रांतिकारी भावना को तीव्र करने का श्रेय जितेन्द्र मोहन चटर्जी (बाद का वे स्वामी निरालम्ब नाम से प्रसिद्ध हुए) और उनके बाद रासबिहारी बोस को है जितेन्द्र मोहन चटर्जी का बंगाली क्रांतिकारियों से जय अलग्नाव हो गया तो १९०६ में पंजाब आए । उन्होंने वहाँ एक क्रांतिकारी युवक समूह संगठित किया । और उसमें भारत का क्रांतिकारी तरीका से स्वतंत्र करने की भावना जागृत की । उस समूह में लालचंद फनक, किशन सिंह (सरदार भगतसिंह के पिता) लाला लाजपत राय, सरदार अजीत सिंह तथा डाक्टर हरिचरण, डाक्टर चारुचन्द घोष तथा लाला अमरदास ।

१९०८ में जब लाला हरदयाल इंग्लैंड से आए तो स्वभावतः वे इस क्रांतिकारी युवक दल की ओर आकर्षित हुए और उन्होंने इन युवकों को नेतृत्व प्रदान किया, उन्होंने शीघ्र ही इन युवक क्रांतिकारियों को अपने समीप और अपने विश्वास में ले लिया । जितेन्द्र मोहन चटर्जी उनमें प्रमुख थे ।

अगस्त, १९०८ में जब लाला हरदयाल मुंबई से लौट आए तो इस युवक क्रांतिकारियों के दल का नेतृत्व स्वभावतः जितेन्द्र मोहन चटर्जी के कंधों पर आया । वास्तव में लाला हरदयाल जब देहली से बम्बई और वहाँ से यूरोप को जा रहे थे तो उन्होंने अमीर चंद से कहा कि मेरे बाद जितेन्द्र मोहन चटर्जी मेरे स्थान पर राष्ट्रीय चेतना जन साधारण में जगाने का कार्य करेंगे । अमीर चंद देहली में एक स्कूल में अध्यापक थे उन्होंने भी अपने आसपास कुछ युवकों को राष्ट्रीय कार्य के लिए जमा कर लिया था जिनमें अरबबिहारी, बलराज और बालमुकुन्द प्रमुख थे । जितेन्द्र मोहन चटर्जी ने लाला हरदयाल के परिचय पत्रों का लेकर देहली में अनेक व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित कर लिया और नए युवक अपने दल में भर्ती किए । उन्होंने अपने दल के लिए एक क्रांतिकारी नामक्रम बनाया । उन्होंने देहरादून रासबिहारी बोस के पास सदेशवाहक भेजकर बहलाया कि वे बंगाल के क्रांतिकारियों से उनका सम्पर्क स्थापित करावें । रासबिहारी बोस ने द्वारा ही उन्होंने चंडरनगर के प्रसिद्ध क्रांतिकारी नेता शिरीषचंद्र घोष से सम्पर्क स्थापित किया । शिरीषचंद्र घोष ने उसके उपरांत १९०९-१० में कई बार सहारनपुर आकर जितेन्द्र मोहन चटर्जी से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित किया । वे रासबिहारी बोस से उनके छद्म नाम "अमीर" से पत्र-व्यवहार करते थे ।

मुछ ही दिने बाद जितेद्र मोहन चटर्जी को पुलिस से बचने के लिए भूमिगत होना पठा। बात यह थी कि जितेद्र मोहन चटर्जी १ क्रांतिकारी दल का जो क्रांतिकारी वायव्रम बनाया था वह एक पुस्तिका में लिखा था। उस पुस्तिका की पाहुलिपि उहोने सरदार अजीत सिंह को भेजी थी। पुलिस को वह पुस्तिका अजीत सिंह की पश्चात 'भगसयाल' के कार्यालय में तलाशी सेन पर मिली। क्याचि पुस्तिका स्वयं जितेद्र मोहन चटर्जी के द्वारा लिखी हुई थी। पुलिस का उसके लेखक का पता लगाने में कठिनाई नहीं हुई।

"भगसयाल" और "स्वराज्य" पत्र सरदार अजीत सिंह तथा सूफी अम्बा प्रमाद निकालते थे अस्तु उनकी गिरफ्तारी के बादट निवाले गए। पुलिस जितेद्र मोहन चटर्जी को गिरफ्तार करने के लिए आवाग पाताल एक कर रही थी। जितेद्र मोहन ने क्रांतिकारी गुप्त दल का भार रास बिहारी बोस को सौंपकर देश से बाहर जाने का निश्चय किया। उहोने रासबिहारी बोस को सहरनपुर से बुलाया और उह क्रांतिकारी दल सम्बन्धी समस्त जानकारी देकर, ये इंग्लैंड कानून का अध्ययन करने चले गए। (१९१०)

जितेद्र मोहन चटर्जी के भारत से चले जाने के बाद रास बिहारी बोस पंजाब तथा उत्तर प्रदेश के क्रांतिकारी दल के नेता बने। और देहरादून का उनका निवास स्थान क्रांतिकारी दल का प्रमुख स्थान बन गया। गुप्तचर विभाग के अधिकारी 'डेन-हम' ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था कि बंगाल और पंजाब के क्रांतिकारी देहरादून में एक दूसरे से मिलते थे।

१९११ के आरम्भ में रास बिहारी बोस अपनी माता के अस्वस्थ होने का समाचार पाकर चदरनगर आए। और उनके मित्र शिरीषचन्द्र घोष ने उनका परिचय चदरनगर के क्रांतिकारी दल के नेता श्री मोतीलाल राय से कराया। माती लाल राय श्री अरिबिन्दु घोष के परम भक्त और अनुयायी थे। उहोने चदरनगर में प्रयत्न सच के संगठन किया था। रासबिहारी बोस, मोतीलाल राय के "आत्म समर्पण योग" से बहुत प्रभावित हुए और उहोने शपथ ले ली कि वे देश को स्वतंत्र करने के लिए अपना जीवन लगा देंगे।

जब वे चदरनगर में ही थे उनकी माता श्री का स्वयंवास हो गया उनका प्रवर्ण समाप्त हो गया था अस्तु, रासबिहारी बोस चदरनगर लौट आए। शीघ्र ही रासबिहारी बोस न लम्बी छुट्टी ले ली और सितम्बर, १९११ में वे फिर चदरनगर लौट आए। जब वे चदरनगर में आए तो स्वाभाविक था कि मोतीलाल राय, शिरीषचन्द्र घोष और रासबिहारी बोस आपस में मिलकर बात करते। इस अवधि में उन तीनों की अनुशीलन समिति के प्रमुख चन्द्र गंगोली से चर्चा होती थी इस चर्चा में तत्कालीन वायसराय लार्ड हाडिंग पर बम फेंकने के विचार ने ज म लिया। क्रांतिकारियों का मुख्य उद्देश्य उच्च अंग्रेज अधिकारियों के हृदय में भय का संचार कराना भारत सरकार की नई नीति दमन तथा समझौते की नीति की निरर्थकता को सिद्ध करना तथा ब्रिटिश सरकार के विश्व के देशों में इस प्रकार को "कि भारतीय ब्रिटेन के शासन को दबी बरदान मानते हैं" असत्य सिद्ध करना था।

श्री मोतीलाल राय के अनुसार वायसराय लाड हार्डिंग पर बम फेंकने का विचार शिरीषचन्द्र घोष के मस्तिष्क की उपज थी। रामबिहारी बोस ने उस विचार को काय रूप में परिणित करने का तुरन्त निणय कर लिया। इसी उद्देश्य से उन्होंने कलकत्ता से अमरेन्द्रनाथ चटर्जी से बसन्त कुमार विश्वास को जो श्रमजीवी, समवाय, में काम करता था, माग लिया और उसे अपने साथ देहरादून ले आए। देहरादून में उन्होंने बसन्त कुमार विश्वास को भावी काय के लिए प्रशिक्षण दिया।



तीसरा अध्याय

छाड़ हाजिग पर कब फेंका गया

धम-धम आदोलन के कारण देश में जो उग्र राष्ट्रीयता का विस्फोट हुआ उससे ब्रिटिश सरकार गम्भीर रूप में चिंतित हो उठी। ब्रूटनीतिज्ञों ने सरकार की परामर्श लिया कि इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) अत्यंत प्राचीन काल से भारत की राजधानी रही है। महाभारत काल से देश इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) को भारत की राजधानी के रूप में देखता आ रहा है। मुगल काल में भी भारत की राजधानी होने का उसे गौरव प्राप्त था इस कारण प्रत्येक भारतीय का दिल्ली में मनोवैज्ञानिक और भावना का सम्बन्ध रहा है। कलकत्ता जिसका निर्माण अंग्रेजों ने किया उसका भारत के जनमानस से कोई सम्बन्ध नहीं है। अतएव यदि कलकत्ता के स्थान पर दिल्ली को भारत की राजधानी बनाया जावे तो भारतीय जनता पर इसका अशुभ मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ेगा, वह इसका स्वागत करेगी साथ ही भारतीय जातिकारियों के मुख्य प्रभाव क्षेत्र बंगाल से भी यह दूर हो जावेगी।

इसके अतिरिक्त अंग्रेज राजनीतिज्ञों की यह भी धारणा थी कि भारतीय सम्राट में ईश्वर का अंश मानते हैं अस्तु यदि स्वयं सम्राट भारत में आकर दिल्ली को राजधानी बनाने की घोषणा करें साथ ही धमधम को समाप्त कर दें तो भारतीय जनमानस धाज जो धुँध है, शांत हो जावेगा और सम्राट भक्ति का प्रबल श्रोत फूट पड़ेगा जो ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ों को भारत में रूढ़ करेगा।

योजना के अनुसार १२ दिसम्बर, १९११ का एक विराट दरबार किया गया स्वयं सम्राट पाचवें जाज उसमें भाग लेने के लिए भारत आए। भारत सरकार ब्रिटिश साम्राज्य की अजेय शक्ति उसके महान वभाव और अनुलनीय राजनीतिक प्रभाव का भारत के जनमानस पर अमिट छाप डालना चाहती थी। अस्तु दरबार का आयोजन ऐसा भव्य और शान शोकेत से किया कि मुगल वादशाहों की इतिहास चर्चित शान शोकेत भी उसके समक्ष पीकी पड़ जाव। उस ऐतिहासिक दरबार में भारत के सम्रा

महान् क्रांतिकारी, रासबिहारी बोस

देशी नरेश अपने राजसी वैभव तथा सम्राट भक्ति का प्रदर्शन करने आए थे। भारत के प्रत्येक भाग तथा त्रिदेशों से लाखों की मर्याद म लोग भारतीय परम्परा के उस वैभव का आयोजन को देखने आए थे।

सम्राट ने इस दरवार में बग भग को समाप्त करने तथा दिल्ली को भारत की राजधानी बनाने की घोषणा की। नई दिल्ली का शिला-यास भी सम्राट के हाथों से ही कराया गया। इस आयोजन से भारत के जन मानस पर अत्यन्त मनुजूल प्रभाव पड़ा। सम्राट के प्रति भारतीयों ने असीम श्रद्धा प्रदर्शित की इस लिए ब्रिटिश सरकार बहुत सन्तुष्ट हुई। यही कारण था कि जब नई दिल्ली बन कर तैयार हो गई तो भारत सरकार ने राजधानी के रूप में उसके उद्घाटन के समारोह को भी उसी शान शौर्य से करने का निश्चय किया।

योजना इस प्रकार थी। कलकत्ता से जब साठ हाडिंग की स्पेशल ट्रेन नई दिल्ली आये तो भारत के समस्त देशी नरेश तथा उच्च अधिकारी उनका स्वागत करें। स्टेशन खूब सजसा जाय और वहाँ से वायसराय वायसरीन के साथ सजे हुए हाथी पर बैठ कर दिल्ली में प्रवेश करें। सभी भारतीय नरेश अपने प्रहरियों के साथ सम्पूर्ण राजनी वैभव म जुलूस में साथ चले। सम्पूर्ण दिल्ली सजसा जावे। उस विशाल जुलूस में भारत सरकार तथा देशी राज्यों की सेनाएं अपने बैड के साथ खूब परे। जुलूस ऐसा गान्धार हो कि भारतीय चमिन हो जावे। वे ब्रिटिश सम्राज्य की अजेय शक्ति का द्यन और प्रनुभव कर सकें। ब्रिटिश सरकार इस अवसर का राजनीतिक उपयोग करना चाहती थी। अंग्रेज भारतीयों के मानस पर यद् अग्नि करना चाहते थे कि ब्रिटिश शासन भारत के लिए एक बरदान है।

उधर भारत के महान् क्रांतिकारी नेता रासबिहारी बोस भारत की राजधानी दिल्ली में ब्रिटिश सत्ता और शक्ति के प्रतीक भारत के गवर्नर जनरल को सौदा और उनके प्रहरियों की श्राव के सामने भार कर ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती देने की योजना बना रहे थे।

साठ हाडिंग भी सजी हुई स्पेशल ट्रेन कलकत्ता से वायसराय की लेकर जब दिल्ली पहुँची तो उनका शान्ती स्वागत हुआ तोपी की गगनभेदी गडपडाहट में साठ हाडिंग एक बहुत ऊँचे हाथी पर जिस पर चार चोरी की बहुमूल्य भूल और सोने चादी का भारी टोम गगा जमुनी हौदा रक्का था, वायसरीन के साथ सवार हुए और वह भव्य और विशाल जुलूस चला। जुलूस के मार्ग पर जिानी भी इगारतें थी दशका से ज्यादा खच भरी थी। साठ हाडिंग के पीछे बलरागपुर राज्य का जमादार महाराज सिंह सोा के काम का छत्र लिए बठा था। साठ हाडिंग के पीछे सभी भारतीय नरेश और भारत सरकार के सर्वोच्च अधिकारी थे। आगे सेनाए चल रही थी और सनिक बैड मोहक। ध्वनि बजा रहे थे।

जस ही जुलूस जादनी चीन में घटा घर के आगे बढकर पजाब नेमानल बैंक भवन के सामने पहुँचा कि गगनभेदी भवाक घडावा हुआ और एक धम हौदे के पिछले भाग पर आवर पडा। हौदे का पिछला भाग घास्त हो गया, हौदे का पिछला भाग

गया। छत्रपति महावीर सिंह मर कर रस्ती में पर उनमें जान से लटका गया। मायसराय ने दाहिने वंश में घाव डब डब टंड टंड टंड गहरा घाव हो गया। उनका सात आठ घोर भी घाव लग। दूग पटना का गणेश राय लाड हाथिग के शब्दों में इस प्रकार है—

‘प्रातः काल अत्यन्त गृहाणां था। हाथियों का वह भय पुनस्त प्राप्य मान शीघ्रतः और गरिमा का समव शाली विष उपस्थित कर रहा था। हम वनीस गाहन से गुजरे जहां से जनता को हटा दिया गया था। वहां मुझे बिना किसी प्रकट कारण के घाने वाली दुघटना का आभास हुआ। मैं अपनी पत्नी के बच्चे “मैं अपने को प्रकट दुर्घटी अनुभव कर रहा हूँ। मुझे विरस है कि कोई भयानक दुघटना घटने वाली है। उन्होंने उत्तर दिया कि इसका कारण केवल मात्र यह है कि आप खब गए हैं और आप सब समारोहों को ना पसंद करते हैं। फिर भी मैं अपने बच्चे का दुहराता रहा। कुछ ही क्षणों के उपरांत जुलूस चांगी चीज में घुसा। उस पर सकारण उन समूह भरा था। मेरा अभूतपूर्व उत्साह से उस जन समूह में स्वागत किया। तीन री गज से आगे नहीं गया होऊंगा कि भयानक विस्फोट हुआ। मेरा हाथी रव गया। मृत्यु के समय जसी निस्तब्धता छा गई। मेरा शिरःक्षण गडक पर पड़ा था। मैंने अपनी पत्नी की ओर देखा मैंने देखा लिया कि वे सबुशल है। फिर मैंने मुहकर हीदे के पीछे देखा जिस पर कुछ पीला पंजुडर था तब मैंने कहा कि वह बम था। मेरी पत्नी ने पूछा कि क्या मेरे चोट लगी है। मैंने उत्तर दिया कि मुझे ऐसा लगा कि किसी ने मेरी पीठ पर भयकर वेग से आघात किया और मुझ पर खीलता हुआ पानी डाल दिया हो। पुलिस के मुख्य अधिकारी ने अपने भाले की नोक पर मेरे शिरःक्षण को दिया और घाना चाही। मैंने कहा जुलूस को पूर्ववत् आगे बढ़ो दो। परंतु जब मेरी पत्नी ने पीछे देखा तो वह ज्ञात हुआ कि मैं बुरी तरह जखमी हो गया हूँ और जमादार जो मुझ पर सज्जन लगाए था मर गया है। उसका मृत शरीर हीने की रस्तियों में उलभा हुआ है। मैंने तुरंत हाथी को रुकवा दिया और जब उसका मृत शरीर हटाया जा रहा था तो अधिक रक्त वह जाने के कारण मैं सज्ञा भू य हो गया। जब मुझे होश आया तो मैंने अपने को सडक के किनारे पश पर पाया और मेरी सुभूषा हो रही थी। मैंने आवा दी कि सभा का कार्य पूरा निर्धारित योजना के अनुसार किया जावे और मैंने अपना लेखित भाषण समारोह में मेरी परिपद में वरिष्ठ सदस्य द्वारा पढा जान के लिए दे दिया। उनके उपरांत मैं वेहोशी की अवस्था में मोटर में मायसराय भवन ले जाया गया।’

‘वाद को मुझे ध्यान आया कि मेरा निजी भारतीय नौकर जो कि उससे पहले दिन मेरे साथ शिकार में था और जिसने खाकी शिकारी बर्दी के ऊपर गहरे लाल रंग की ऊनी बर्दी अपने को शीत से बचाने के लिए पहन रखी थी। वह भी हाथी पर बिनी फ्रेड (मायसरीन) के पीछे सडा था बम विस्फोट के उपरांत मैं उस हाथी पर से खाकी बर्दी में उतरते देखा। वह जुलूस की लाल बर्दी में नहीं था। मैंने उससे कहा कि वह यहां खाकी बर्दी में क्या कर रहा था? वाद को मुझे पता चला कि विस्फोट के कारण उसकी बर्दी तार-तार होकर उड गई और उसके शरीर पर चालीस घाव लगे थे। मैंने

जा रहा उमने नहीं गुना। यथाति उसवे दोना बात के पदों फट गए थ। जैसे कि मर मान वा भी एक पर्दा फट गया था। मरा वा ठीक हा गया परन्तु वह बेचारा सदा के लिए बहरा हा गया। मैं उसका दुःखी पेशन दिलवाई।'

एक विचित्र बात यह हुई कि विस्फोट इतना भयानक था कि वह ६ मीन की दूरी पर भी सुनाई पडा। परन्तु न ता विनी फ्रेड (वायसरीन) और न मुझे वह सुनाई दिया। मेरा अनुमान है कि हमारी श्रवण शक्ति नष्ट हो गई थी।

"मेरे जस्म बहुत कष्ट दायक थे। उह ठीक होने म बहुत देर लगी। शरीर स बम के पण निवाला के लिए कई छाट आपरेशन करन पडे। बमो के बणा के साथ शारीक बोलें ग्रामोफोन की सुइया आदि निवली।"

इस घटना का लेडी हाडिंग न बरण करत हुए लिखा है —

"जब हम चादनी चौक से निवस रहे थे जहा चारो ओर जय-जयकार और तालियों की ध्वनि सुनाई दे रही थी मुझे एक साथ भयकर धक्का लगा और मैं भाग की ओर गिर गई। जब मैं उठकर अपनी जगह बठ गई तो मरी आला के सामने आघेरा सा प्रतीत हुआ और सर म भयकर झन झनाहट के साथ भयकर पीडा हुई।"

जब हम पुन भाग बढ़े ता मैने सुना कुछ आवाज आ रही थी। "शाबाश बहादुर"

श्री ब्रम्बले डी आई जी पुलिस यू पी न अपनी गवाही म कहा था "जैसे ही मैंने चादनी चौक म ईस्ट इंडिया रेलवे बुकिंग आफिस को पार किया; मैंने अपने पीछे एक भयानक धडाके की आवाज सुनी। मैं जान गया कि वह बम है परन्तु उसके साथ ही बाड के छज्जे पर से आवाज आई 'शाबाश मारा' वह सराहना तथा हण पूण आवाज थी। मैं समझ गया कि वाई मम्बीर घटना घटी है। मैंने अपने घोडे को पीछे घुमाया ता देखा कि हिज ऐक्सी लैसी के हौदे की पीठ से घुमा निवस रहा है मैं हाथों के पास गया तो देखा कि छत्र हौदे के पीछे गिरा हुआ था और जमादार का मृत शरीर हौदे के पीछे लटक रहा था। हौदे की पीठ उड गई थी। हिज ऐक्सीलसी बहोश होकर हौदे म गिर गए थे। मैंने हाथों को रुक्वाया उन्हें नीचे उतारा।"

क्रातिकारियों ने इस बाड की प्रशसा करते हुए एक विशप्ति लाखों की सख्या म बितरित की। उसमे लिखा था कि गीता, वेद, मुरान सब हमे आदेश देते है कि मातृभूमि के शत्रु को फिर वह किसी भी जाति, सम्प्रदाय, रग और धम का बयो न हो मारना हमारा धम है। भाय बडे या छाट क्रातिकारी कार्यों की हम बात नहीं करते परन्तु गत दिसम्बर मास म देहली मे जो दबी शक्ति प्रगट हुई वह इस बात का निस्स देह प्रमाण है कि भारत के भाग्य को स्वयं भावान बदल रहे हैं।

लिबर्टी पत्र का प्रकाशन

रासबिहारी ने देश मे क्रातिकारी विचारधारा को फलान के लिए लिबर्टी नामक विज्ञप्ति प्रकाशित करना शुरू किया। उसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध देश मे पार असतोप तथा क्रातिकारी विचार धारा का प्रचार करना था। अक्टूबर १९१२ म क्रातिकारी दल की मीटिंग म बिसरी अध्यक्षता रासबिहारी घोस ने

को भी यह निगम किया गया कि लिबर्टी नामा नाम रहित विजप्ति प्रथम प्रशासित की जाये। मई, १९१३ में उक्त निगम को काय हो देने के लिए लिबर्टी विजप्ति प्रशासित की गई। लिबर्टी का प्रकाशन अप्रैल, १९१३ में एक दूसरी प्रासिद्धी दन की घोषणा में पारित प्रस्ताव के पत्र स्वयं हुआ। जिसमें प्रथम विहारी, वान मुन्द और दीना नाथ थे। उस विजप्ति के लेखक और सम्पादन प्रथम विहारी थे पर उस पर नाम किसी का नहीं दिया जाता था। वह छापती नपुंसकता में थी और उत्तर भारत में उसका विवरण साहोदर से होता था। लिबर्टी विजप्ति के विचारों तथा भाषा का नमूना नीचे लिखी टिप्पणी में देविए —

“क्रांति अभी भी मनुष्या का काय नहीं रहा। सदैव क्रांति भगवान की स्वयं की इच्छा से होती है। भगवान उसको करने के लिए अपने प्रीजार (मनुष्य) चुन लेता है। जिन्हें वह महान परिवर्तन लाने के लिए चुनता है उन्हें भरपूर दली शक्ति प्रदान कर देता है। उनमें दली शक्ति प्रवेश कर जाती है। भगवान न सुगीराम बोस, प्रफुल्ल चामसी, बनाईलाल दत्त, मदन लाल धीगरा तथा अन्य क्रांतिकारी शहीद जिनकी पावन स्मृति हमें प्रेरणा देती है, के द्वारा स्वयं के काय किए थे। अन्तर्गत ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि पर देहली में बम फेंकने वाला और कोई नहीं स्वयं सब शक्तिमान भगवान की दली शक्ति ही थी।

शहीदा की महान आत्मा का ऋण जो हमारे ऊपर है उसको हम तभी चुका सकते हैं जबकि भारत के युवा बहुत बड़ी संख्या में उन स्वयंवासी शहीदों के योग्य उत्तराधिकारी बनने के लिए भागे भावें।

आज के समय की एक दुर्दांत क्रांति सबसे बड़ी आवश्यकता है भाइयो उठ खड़े हो जाओ जाओ। छुट-पुट क्रांतिकारी काठ जैसे कि अभी देहली में हुआ (धामस राय पर बम फेंकने) अत्याचारियों के हृदय में भय उत्पन्न कर सकते हैं परंतु वे वाञ्छित फल (स्वतंत्रता) नहीं ला सकते। इस तरह के काय हमारे कार्य में बहुत सहायक हाते हैं परंतु हम अपने अन्तिम लक्ष्य को नहीं भूल जाना चाहिए। और उस लक्ष्य का प्राप्त करने के लिए वास्तविक कार्य को करने के लिए समय नहीं खोना चाहिए। अस्तु हमें उठ खड़े होना चाहिए और उस महान क्रांति जो हमारा लक्ष्य है को शीघ्र शीघ्र करना चाहिए।

रासबिहारी इस विजप्ति को पढ़कर बहुत प्रसन्न हुए। प्रथम विहारी ने उनके विचारों का शक्तिशाली शब्दों में प्रकाशन किया था। रासबिहारी ने दीनानाथ को एक पत्र में बधाई भेजी और लिखा कि अब पत्राव में वह बड़ा और महत्वपूर्ण कार्य करना बड़े और महत्वपूर्ण काय से रासबिहारी बोस का प्रथम पत्राव में सशस्त्र विद्रोह से था। धाहिये। जुलाई १९१३ में लिबर्टी विजप्ति की दूसरी सीरीज प्रकाशित हुई और उसमें देशवासियों से क्रांति के लिए तैयार हो जाने का आह्वान किया गया।

बम फिसने फेंका •

आज तक यह विवाद का विषय बना हुआ है कि वास्तव में बम विरान फेंका। इस सम्बन्ध में तीनों नामों की चर्चा की जाती है। (१) स्वयं महाविप्लवा

नायक रासबिहारी बोस, (२) बसन्त विश्वास और (३) जारावर सिंह बारहठ ।

वास्तव में बम किसने फेंका यह भारत में केवल एक ही व्यक्ति जानता था । वे थे लाला हनुमन्त सहाय पर तु उन्होंने कभी शपथ ले रखी थी अस्तु वे नहीं बताना चाहते थे कि बम किसने फेंका । उनकी मृत्यु के तीन वर्ष पूर्व जब लेखक ने उनसे इस सम्बन्ध में पूछा तो उन्होंने मुझे लिखित उत्तर दिया "कि मैं इस विवाद में नहीं पड़ना चाहता ।" श्री हनुमन्त सहाय को रासबिहारी बोस ने उन लोगों को 'जो कि बम फेंकने में सम्मिलित थे' उ ह घटना स्थल से सुरक्षित निकाल ले जान की व्यवस्था करने के लिए रखा था । वे घटना स्थल पर उपस्थित थे ।

इस सम्बन्ध में तीनों क्रांतिकारियों के पक्ष में जो प्रमाण मिलते हैं वे नीचे लिखे अनुसार हैं—

रासबिहारी बोस

स्वयं डा. हार्डिंग (वायसराय) ने अपनी पुस्तक 'माई इंडियन डेस (भारत-वर्ष में मेरे वर्ष) में लिखा है—

जब मैं देहरादून स्टेशन से वाट में अपने बगले में जा रहा था मुझे एक भारतीय अपने गफान के फाटके के सामने खड़ा मिला । उसका साथ कई अन्य व्यक्ति भी खड़े थे । उन सब ने मुझे अत्यन्त प्रदर्शनकारी ढंग से अभिवादन किया । मेरे यह प्रश्नों पर कि यह कौन लोग हैं मुझे बताया गया कि उनमें से प्रमुख भारतीय नेता दो दिन पूर्व एक सावजनिक सभा की अध्यक्षता की थी जिसमें आपके ऊपर जो आक्रमण हुआ उसकी भत्सना की गई थी और आप के प्रति सहानुभूति का प्रस्ताव रखा गया था । बाद को यह प्रमाणित हो गया कि ठीक उसी व्यक्ति ने मेरे ऊपर बम फेंका था ।

बात यह थी कि वायसराय बम काट के बाद देहरादून विश्राम करने के लिए देहली से गए थे । दो दिन पूर्व रासबिहारी ने इस कांड की निन्दा के लिए एक सावजनिक सभा बुलाई थी और स्वयं उसकी अध्यक्षता की थी । बम काट के तुरन्त बाद वे देहरादून पहुँच गए थे ।

माई परमानन्द रामबिहारी के निवृत्त सहयोगी और मित्र थे । उन्होंने अपने कई लेखों में वायसराय पर बम फेंकने का श्रेय रासबिहारी बोस को दिया था । श्री मिश्रीर से उन्होंने स्वयं कहा था कि बम रासबिहारी बोस ने फेंका था ।

भारत के गुप्तचर विभाग के निदेशक श्री क्लीवलैंड ने इस सम्बन्ध में ३१ मार्च १९३३ को अपने लम्बे नोट में जो लिखा वह इस प्रकार है—

"अमृतसर के भीरनकाट का मूलसिंह जो गदर पार्टी का नेता था और जेव सरकार का मुखविर बन गया (मूलसिंह का नेता इस लिए किया कि सरकारी मुखविर में वह महत्व बनाना चाहता था) उसने बताया कि एक दिन रामबिहारी का अत्यन्त विश्राम प्राप्त सहयोगी पिन्ने उनके पास आया उगवे साथ एक बैगाली था । उसका नाम मूलसिंह न हुनिमा बताया वह ठीक रामबिहारी वाग का हुलिया था । मूलसिंह उससे बात करने हुए पूछा कि क्या वह जानता है कि देहली में वायसराय पर बम

निम्न विवरण

जिसन फेंका था। उगन उत्तर दिशा में "ग" या "न" या कपूथाना त रामनरतपत्रक भी मुभग यही कहा कि बम फेंका वाला बड़ी व्यक्ति था। बाद में मरम उगन हा मुभन स्वोभार किया कि बम मीने फेंका था।

३० जून, १९४२ का मरम रामबिहारी बाग न इडिपन इडिपन ६६ लोम क अध्याश की हैमियन से जा वक्तव्य प्रसारित किया था उमम उहोन कहा था "लमन तोम बन हुए जब मीने बायसराय पर बम फेंका था और मी देहनी, लाहौर तथा बनारस पड्यत्रो का सत्रिय सदस्य था। मुझे विदेशी सहायता प्राप्त करने के लिए देश को छोड़ पर विदेश जाना पडा।"

[रामबिहारी बन रामबिहारी बन स्मारक समिति वसन्तता गृष्ठ २२२]

टाकियो मे जब श्री टी पहलो राम श्री रास बिहारी बोस से मिले थे तो स्व श्री बोस ने पहलो राम से कहा था।

'मीने ही हाडिग पर पजाब नशनन बन की इमारत की छा पर स बम फेंका था" (प्रवीप जालघर २२ फरवरी, १९६८)

महाबिप्लयी नायक रासबिहारी की एक माध जीवित सतान श्रीमती हिगुजी ने टोकिया म श्री कुशवत को बतलाया कि मेरे पिता ने लाड हाडिग पर बम फेंका था।

[फादर धू ए बाम्ब-हिदुस्तान टाइम्स 'ग्यु देहली' १९ माच, १९६१]

बसन्त विदवास

भारत मे अधिकांश ब्रातिवारीया और विशेषकर बगाली ब्रातिवारीया का मानना है कि बसन्त कुमार विश्वास ने लाड हाडिग पर बम फेंका।

कुरमात भाइकेल ओडायर जो उस समय पजाब का गवरनर था। उसने अपनी पुस्तक "इण्डिया ऐज आई नो इट" मे गृष्ठ १६९ पर इस सम्बन्ध मे इस प्रकार लिखा है।

"दो बगाली जो बलकत्ता से बम लाए थे और उहोने लाहौर मे लारेंस बलक के पास बम रखे था" जिससे ललब का चपरासी मारा गया। उन दोनों को फासी हुआ था। दूसरे बगाली ने फासी लगने के कुछ दिन पहले गुप्तचर विभाग के अधिकारिया को बतलाया कि उसने एक मुसलमान स्त्री के बेश मे बुरक के बदर चादनी चौक मे पजाब नेशनल बैंक के सामने खडे होकर बम फेंका था जिससे बायसराय का छत्रधार मारा गया और बायसराय जरमी हो गए। ओडायर ने उन दोनों बगालिया का नाम नहीं दिया।

लाड हाडिग पर २३ दिसम्बर, १९१२ को बम फेंका गया था। उससे दो ब उभरात इस सम्बन्ध मे 'डी पटी' अतिरिक्त पुलिस सुपरिन्टेंडेंट देहली ने ११ नवम्बर १९१४ को सरकार को अपनी रिपोर्ट दी। उस विस्तृत रिपोर्ट के अंत मे उमन लि 'बम कांड का वास्तविक सृजनकर्ता बसन्त कुमार विश्वास था और आयोजक कुटिल प्रमुल प यन्कारी नेता रासबिहारी बोस था।'

लेखक ने इस सच मे यथेष्ट जाच पठताल की। उसे एक साक्षी और

10439
5 5 89

जो वसन्त कुमार विश्वास को बम फेंकने का श्रेय देता है। राजस्थान में उदयपुर जिले में गटिया ग्राम के निवासी श्री ईश्वर दास यासिया रामबिहारी के क्रांतिकारी दल के सक्रिय सदस्य थे और मास्टर अमीर चंद के पास उदयपुर क्रांतिकारी दल का भाग्य बरत थे। मास्टर अमीर चंद, रास बिहारी बोस के अत्यन्त विश्वास पात्र थे। उन्होंने लेखक को बतलाया कि बम वसन्त कुमार विश्वास न फेंका था। मास्टर अमीर चंद रास बिहारी के दाहिने हाथ थे। बम फेंकने की योजना की व्यवस्था उनका महत्वपूर्ण भाग रहा था। और इसी कारण उनको देहली पडवतन में उनको फासी हुई थी। "रोल ऑफ ग्लानर" के प्रसिद्ध लेखक श्री बाली चरण घोष का भी मानना है कि फासी के पूर्व वसन्त कुमार विश्वास ने बतिया लोगो को बतलाया कि मुस्लिम महिला के बेश में उसने ही लाइ हांडिंग पर बम फेंका था। यही कारण है कि बंगाल में अधिकांश क्रांतिकारी वसन्त कुमार विश्वास को ही बम फेंकने का श्रेय देते हैं।

जेम्स कम्पबेल केर ने अपनी पुस्तक "पोलीटिकल ट्रवल इन इंडिया" पृष्ठ ३३० पर लिखा है कि वसन्त कुमार विश्वास ने मुस्लिम महिला के बेश (बुक) में नही देहली के युवक की बदन धारण करके बम फेंका। रासबिहारी बोस उनके पास ही खड़े थे।

जोरावर सिंह वारहठ

राजस्थान के लोग जोरावर सिंह वारहठ को बम फेंकने वाले के रूप में जानते हैं। प्रसिद्ध क्रांतिकारी ठाकुर नेशरी सिंह वारहठ के पुत्र कुंवर प्रतापसिंह वारहठ श्री रासबिहारी बोस के अत्यन्त निकट और विश्वास पात्र थे। जब रास बिहारी बोस ने लाइ हांडिंग पर बम फेंकने की योजना बनाई तो उन्होंने प्रताप सिंह और जोरावर सिंह को दिल्ली बुला भेजा। कहा जाता है कि रास बिहारी बोस ने जोरावरसिंह को बम फेंकने के लिए चुना था। इस सम्बन्ध में लेखक को राजस्थान के वरिष्ठ राजनीतिक नेता तथा पत्रकार श्री रामनारायण चौधरी ने नीचे लिखे आशय का पत्र भेजा था।

"हांडिंग बम केस में मेरे सहपाठी छोटेलाल जी भी अभियुक्त थे। केशरीसिंह वारहठ के पुत्र भी उस कांड में शरीक थे। उन दोनों ने मुझे बतलाया था कि बम जोरावर सिंह ने डाला था। बम बाबू रासबिहारी बोस शरीर से इतने भारी थे कि यह फुटी का काम उनके बेश का नहीं हा सकता था। वारहलाल मेरे पास तो इन दो साथियों के कथन का ही आशय है और उनके लिए मैं यह मान ही नहीं सकता कि वे असत्य बात कहें।

ठाकुर नेशरी सिंह वारहठ की पत्नी श्रीमती राजलक्ष्मी देवी ने लेखक को बतलाया कि १९३६ में जबकि वे चौदह वर्ष की थी तब फरार अवस्था में जोरावर सिंह ने उन्हें दिल्ली में चांदी चौक में बह इमारत दिखाई थी और बतलाया था कि वहां से बम पहन कर उन्होंने लाइ हांडिंग पर बम फेंका था।

जोरावर सिंह पकड़े नहीं जा सके २६ सन्धे वर्षों तक वे मेमाड दक्षिणी राजस्थान तथा मीनाभऊ के पहाड़ा व जंगलो में फगरी अवस्था में छिपे हुए भटकते रहे।

१९१३ में बाटा में उनका स्मरणवाक्य हुआ। इस कारण जो भी बाटे से दो चार भूमि हम रहस्य की जानते थे उहाने इसका गुप्त रक्ता प्रगट नहीं किया। जब वे फारस तक वे अंतिम दिना में वे गीतामऊ राज्य में अधिा रह। उस समय श्री गणेश सिंह जगन्नाथ उनको गिफ्ट सम्पत्ति में प्राप्त थे। श्री जगन्नाथ ने लेखक को बतलाया कि जोरावर सिंह ने उह बतलाया था कि "लाड हाडिंग जब हाथी पर बैठकर निरत तो स्वयं उन पर मैं एष ऊची इमारत से बम फेंका था।

राजस्थान में प्रतापगढ़ जिले के सरेई ग्राम के राजाजी, जगमालसिंह जाड़ाज जो उस समय उत्तरीय बप के युवक थे उहाने बतलाया कि जोरावर सिंह अपनी प्रजात प्रवस्था में उनके पिता के पास आकर रहते थे। कई बप के उपरान्त जबकि उन पर पूरा विश्वास हो गया तो उनके बहुत पूछने पर उह भी श्री जोरावर सिंह, ने बतलाया कि बम उहोंने फेंका था।

सब बात तो यह है कि यह आज तक निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि बम किन्तु फेंका था। यही कारण था कि भारत सरकार ने बम कांड के सम्बन्ध में किसी पर भी अभियोग नहीं चलाया। जहां तक कि बम फेंकने की सम्पूर्ण योजना का प्रश्न था वह रासबिहारी बांस के उबर मलिनकर की उपज थी। रासबिहारी बांस ने ही बम बनाने के विशेषज्ञ मनीत्रायक द्वारा बने हुए बम मगवान थे जिन्हें घटर्जी उस बम विस्फोट, के द्वारा रासबिहारी बांस के पास भेजा था। कौन बम फेंकेगा? कहा से बम पता जावेगा? बुर्का पतन कर दिखाने में मिनकर किस इमारत की छत पर से बांसनी चौक में जूलूम पहुंचने पर बम फेंका जावेगा? इस बात के भी प्रमाण मिल है कि बम सडक पर स फेंका गया। जा बम सडक पर स फेंका गया वह कौन फेंकेगा और कहा सडके होकर फेंकेगा बम फेंकर किन प्रकार निरत जावेगा। कौन गांधी कहा रहा रहे और क्या करेंगे यह सारी योजना रासबिहारी की थी। वे समय भी वहां घटना स्थल पर उपस्थित थे। वे ही बम कांड के वास्तविक-सृष्टा और सूत्रधार थे। जिन लोगों को भी बम फेंकने के लिए चुना उनको बम फेंकने के प्रशिक्षण की भी उहाने व्यवस्था की। कहने का तात्पर्य यह कि है बम फेंकने की योजना का प्रत्येक काम उहोंने निदेश में हुआ था। अस्तु यदि बगवान सम्मेलन में उहोंने कहा कि भारत से तो उन पर भी पापगण्य पर बम फेंका था तो यह दावा गलत नहीं था और वे स्वयं तो घटना स्थल पर जहां बम फेंका गया वहां उपस्थित थे ही।

परतु एव तां के शरीर में बहुत भारी थे अतएव इस फुर्ती के नाम को उहाने स्वयं किया हो साथ ही वे ज्ञानिधारियां ने सवमाय नाथ और उस समय भारत व्यापी में विद्रोह का वे आयोजन कर रहे थे। ऐसी दशा में एव सर्वोच्च नेता जो देश व्यापी गतिविधि की नयारो कर रहा था स्वयं का खतरे में डाले इसमें बहुत ही सचेत है। परतु यद्यपि बम कांड का सम्पूर्ण आयोजन यहा, तक कि विचार, भी, श्री गणेशिहारी बांस का था बम फेंकने का ध्येय उनको दिया जाना, चादि।

बसंत विश्वास इनकीस बप का युवक था और रासबिहारी बोस का अत्यन्त विश्वास पात्र था। वे उसे श्रमजीवी समवाय से इगी बाय के लिए लाए थे। देहरादून में उसे बम फेंकने का प्रशिक्षण भी दिया था जब बसंत विश्वास बम बांड के उपरांत अपने गांव नदिया गया तो रास्ते में कलकत्ता में धमरेन्द्र नाथ बटर्जी ने पास श्रमजीवी समवाय में ठहरा। उसने धमरेन्द्रनाथ बटर्जी को बतलाया कि उसने बम सड़क पर से फेंका था।

धमरेन्द्रनाथ बटर्जी ने अपनी बगला पुस्तक "भारत में स्वाधीनता इतिहास में लिखा है" लोगो की यह धारणा गलत है कि बसन्त कुमार विश्वास ने एक स्त्री के वेश में बम एक मकान की छत पर से फेंका था। बसन्त कुमार ने बम सड़क पर से फेंका था। रासबिहारी ने बम नहीं फेंका था। रास बिहारी ने बसंत के निकल बचन की व्यवस्था की और उसी रात्रि को देहरादून चले गए।

मोतीलाल राय ने लिखा है कि बसन्त कुमार विश्वास ने एक तरफ स्त्री के रूप में लक्ष्मीबाई नाम से चादनी चौक में एक मकान की छत से बम फेंकने के विचार के उद्भव से अन्त तक उससे सम्बन्धित थे और रासबिहारी बोस के अत्यासक्त आदर-पीय मित्र थे। सम्भावना इस बात की है कि पहले रास बिहारी बोस ने बसन्त कुमार विश्वास को स्त्री वेश में ही बम फेंकने के लिए तैयार किया हो और यही बात श्री मोतीलाल राय को आदरनगर में मालूम थी वही उन्होंने सिल दी परन्तु देहली जाने पर रास बिहारी का विचार बदल गया ही और उन्होंने बसन्त कुमार विश्वास का सड़क पर से और जोरावर सिंह बारहठ को मकान की छत पर से बम फेंकने को कहा हो।

रासबिहारी बोस ने प्रताप सिंह बारहठ तथा उनके चाचा जोरावर सिंह बारहठ को इस समय दिल्ली बुला भेजा था। प्रताप सिंह भी इनकीस बप के युवक थे और रासबिहारी के अत्यन्त विश्वासपात्र तथा निकट थे। प्रताप सिंह अपने चाचा जोरावर सिंह के साथ रास बिहारी के आदेश पर इस कांड में सम्मिलित हुए थे। प्रताप सिंह बंद में ठिगने थे जोरावरसिंह को आरा पड्यत्र में प्राण दण्ड हो चुका था परन्तु वे फरार थे। लम्बे और बलिष्ठ थे। उनका हाथ सघा हुआ था। सम्भावना इस बात की है कि रासबिहारी ने अत समय में दो व्यक्तियों द्वारा बम फेंके जाने का निश्चय किया जिससे यदि एक का निशाना चूक जावे तो दूसरे का निशाना ठीक बैठे। अस्तु उन्होंने प्रताप सिंह बारहठ को बम फेंकने का दायित्व न सौंपकर जोरावर सिंह को यह दायित्व सौंपा और उन्होंने स्त्री वेश में (बुर्के को पहिनकर) मकान की छत से बम फेंका।

गोपनीयता की दृष्टि से सम्भवत रासबिहारी ने बसन्त कुमार विश्वास और प्रतापसिंह और जोरावर सिंह बारहठ को यह नहीं बतलाया कि बसन्त कुमार विश्वास सड़क पर से और जोरावर सिंह बारहठ छत पर से बम फेंकेगे। दोनों की पृथक् टोलियां थीं। मोना ने ही बम फेंके थे इस कारण मोना ही स्वयं को बम फेंकने वाला मानत थे। बम बांड के उपरांत बसन्त कुमार विश्वास कभी प्रताप सिंह बारहठ अथवा जोरावर सिंह बारहठ से नहीं मिले उनको प्राण दण्ड हो गया। क्योंकि जोरावर सिंह फरार थे और २६ लम्बे वर्षों तक (मृत्यु तक) गिरफ्तार नहीं हुए वे इस तथ्य को दो चार अत्यन्त घनिष्ठ और विश्वसनीय व्यक्तियों को ही बतला सके और वे इस तथ्य को प्रकाशित।

नहीं कर सके।

लेखक की मायता है कि बम दोनो बसत कुमार विश्वास तथा जोरावर सिंह बाहरठ ने फेंका था। लेखक की इस मायता की पुष्टि नतिपत्र ग्रय वातो स भा होते है। घटना के लगभग दो वर्षों बाद देहली ने अतिरिक्त पुलिस सुपरिटेण्डेंट ने बम का संभव धम जो रिपोर्ट दी थी उसमें लिखा था।

'Before Delhi Bombs, two machines of very similar type have already been used in India'

अर्थात् देहली के बमों के पूर्व ठीक उसी प्रकार के दो यंत्र (बम) भारत में उपयोग में लाए जा चुके थे। अतिरिक्त पुलिस सुपरिटेण्डेंट डी पटी ने बम न बहकर बाम्बस (Bombs) शब्द लिया है उसमें यह पता चलता है कि उन्हीं भी यह मायता थी कि एक से अधिक बम फेंक गए।

फिर इस बात पर भी सब एक मत नहीं है कि बम बहा से फेंका गया। जहा पुलिस की यह मायना थी कि बम पञ्जाब नेशनल बैंक की छत पर से फेंका गया वहा भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के निदेशन के निजी असिस्टेंट 'जेम्स-कम्पवेल केर' ने अपनी पुस्तक 'पोलीटिकल ट्रयल इन इंडिया' "Political Trials in India" पृष्ठ ३२४ पर लिखा है जब कि बम फेंका गया तो हाथी 'पुलिसा कटरा' के सामने था। कम्पवेल केर ने यह भी लिखा कि बम किस स्थान से फेंका गया इस सम्बन्ध में भी गवाहिया थी उनमें उच्चतम अधिकारी थे व परस्पर विरोधी और भ्रमोत्पादक थी। कुछ का कहना था कि बम किमी ऊंचे मकान पर से नहीं सड़क के फुटपाथ से फेंका गया था।

एक विचारणीय विषय इस सम्बन्ध में यह है कि सिगरेट के एक छोटे से टिन घाबस में बना हुआ एक बम (जिससे किसी को सँह न हो) इतना अधिक विध्वंस कर सकता है कि बड़े ठोस भारी चीजों का पीछे का हिस्सा ध्वस्त होकर चकनाचूर हो जावे। जमानत महावीर सिंह जो वायसराय पर छत्र लगाए था मर कर लटक जावे। वायसराय के आठ घात लगे वे कश्मीर रूप से घायल हो जावे और लेडी हार्डिंग के पीछे लड़े नीकर के चासीस जटम लगे और उसकी बर्दा के चिपडे होकर उड़ जावे।

मैजर जे डब्लू टरनर जो बंगाल के गुप्तचर विभाग के विस्फोटक इन्स्पेक्टर (Explosive Inspector) थे उन्होंने आठ जनवरी, १९१४ को ठीक उसी प्रकार के बम की जांच करने अपनी रिपोर्ट दी थी। देहली तथा बाद को लाहौर में जो बम बच गए थे। उनमें से एक बचा हुआ बम ३० दिसम्बर १९१३ को भद्रेश्वर घाने पर फेंका गया था। बचे हुए बिना विस्फोट हुए बमों की जांच करने मैजर जे डब्लू टरनर ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है—

बम डब्लू डी एण्ड एच ओ विल्स (W D & H O Wills) के टिन में छिपे म बनाया गया था जो ३ इंच चौड़ा और ३ इंच लम्बा था। उसका वजन एक पाउंड ११ औंस था। वह मिलेडर की शर्ल का था। उसमें ग्यारह औंस विस्फोटक पनाय था। अवश्य ही एक छोट से बम में इतना अधिक विध्वंस होना आश्चर्य

की बात है ।

अतएव यह मानन के आधार है कि सनैत पत्र एव साथ बसंत कुमार और जोरावर सिंह, वारहठ ने बम फेंके । क्योंकि जोरावर सिंह पर वारंट था और वे २६ वर्षों तक पहाड़ और जंगलों में छिपे रहे अस्तु न तो स्वयं वे और न उनके स्नही जो इस तथ्य को जानते थे इसको प्रकाश में ला सकें । रासबिहारी वाम जापान चले गए । बसंत विश्वास को फासी हो गई इस कारण बम काण्ड के सम्बन्ध में उन दोनों के नामों का खूब प्रचार हुआ । परंतु जोरावर सिंह के सम्बन्ध में कोई चर्चा नहीं हो सरी थी ।

सन् १९३६ में जोरावर सिंह वारहठ की मृत्यु हुई उस समय तक इतना भ्रमा समय व्यतीत हो चुका था कि लोग उ ह भूल गए जाड हाडिम पर बम फेंकने का बंवरण इतिहास बन चुका था और जोरावर सिंह वारहठ का लोग भूल चुके थे ।

देहली और लाहौर के बम :

विभिन्न स्त्राता से यह पता चलता है कि देहली का बम चंद्दनगर के क्रान्ति-कारियों ने जिनके नेता मोतीलाल राय थे रासबिहारी को दिया था । वह बम एक फिनरिक एमिड बम था जसा कि डलहाजी स्ववायर तथा मिदनापुर में क्रमशः २ मार्च, १९११ तथा १३ दिसम्बर, १९१३ का फेंके गए थे । उस बम को मनोद्वनाथ नायक ने बनाया था । मनोद्वनाथ नायक श्री चंद्दनगर स्वातिकारी दल के सदस्य थे । उस प्रकार के बमों की रिपन कालेज (अब सुरेद्रनाथ कालेज) के प्रोफेसर सुरेशचन्द्र न जाच की थी और उनको प्रभावशाली घोषित किया था । श्री नायक ने सुश्री उमा मुक्ती की बतलाया था कि जमा बम देहली भेजा गया ठीक बसा ही एक प्रयागात्मक बम २ नवम्बर, १९१२ का (बाली पूजा की रात्रि) रासबिहारी के चंद्दनगर के फाटकगोरा मकान के पीछे बास की आगे में जाच के लिए प्रयोग किया गया था । रासबिहारी की उपस्थिति में बट प्रयोग हुआ था । बम की शक्ति से सतुष्ट होकर ही रासबिहारी ने उसका देहली कांड में उपयोग की स्वीकृति दी थी । लाहौर का बम भी देहली के बम की ही तरह था और देहली और लाहौर पड्यत्र के अभियोगों को सुनने वाले जज के अनुसार व बम रासबिहारी द्वारा दिए गए थे ।

देहली और लाहौर के बम ठीक एक प्रकार के थे । यह पंजाब सरकार के रासायनिक परीक्षक (कमिक्ल ऐक्जामिनर) के प्रश्न से प्रमाणित होता है । जो उसने लाहौर पुलिस सुपरिटेण्डेंट को भेजा था ।

“लाहौर बम के सम्बन्ध में लिखत हुए उसने लिखा था कि मुझे यह कहन की आवश्यकता नहीं है कि यह बम ठीक उसी प्रकार का है जिस प्रकार का बम महामहिम मायसराय के जीवन का समाप्त करने के लिए दिसम्बर १९१२ में डाला गया था । उस बम में ठीक वही विस्फोटक तथा अन्य सामग्री बाम में लाई गई थी जो देहली बम में नाम में लाई गई थी । प्रागे चलकर उसने लाहौर बम को उन घना के सदृश्य बतलाया जो कि मिदनापुर तथा मौलवी बाजार में क्रमशः दिसम्बर,

१९१२ और मार्च, १९१३ में डाले गए थे ।

चन्द्रनगर के क्रांतिकारी केन्द्र में उस समय मनीन्द्र गायक बम बनाने का कार्य करते थे उन्होंने सुश्री उमा भुकर्जी को बतलाया कि देहली बम चन्द्रनगर से कलकत्ता श्री नलिन चन्द्र द्वारा ले जाया गया था । श्री सुरेशचन्द्र दत्त द्वारा उसका परीक्षण हो जाने के उपरांत बम चन्द्रनगर के श्री ज्योतिष सिंहा द्वारा देहली अस्पताल में ध्यान पर ले जाया गया ।



चौथा अध्याय

उधार ली हुई पदवी

२३ दिसम्बर, १९१० को ब्रिटिश साम्राज्य की अजेय शक्ति का प्रदर्शन करने और भारतीय जनमानस पर यह प्रभाव डालने के लिए कि ब्रिटिश शासन और शक्ति को सत्ता में भी शक्ति चुनौती नहीं दे सकती, ब्रिटिश संसद का प्रतिनिधि और भारत में ब्रिटिश सत्ता का प्रतीक वायसरॉय लॉर्ड हाडिंग जब इतिहास चर्चित मुगल सम्राटों की शान शौकत की नकल कर मध्य जुनूस में देहली में प्रवेश कर रहा था। उसके हाथी के पीछे समस्त भारतीय मरग और भारत सरकार के सर्वोच्च सैनिक अधिकारी चल रहे थे। आगे-आगे सेनाएं मार्च कर रही थी और सैनिक बंद मोहक ध्वनि बजा रहे थे तथा लावा की सख्या में भारतीय तथा विदेशों से आए हुए पयटक उस अत्यंत भव्य और बमबसाली जुलूम की देख रहे थे उस समय महान् क्रांतिकारी नेता रासबिहारी बोस के नेतृत्व में भारतीय क्रांतिकारियों ने उन पर बम फेंक कर ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी थी। लॉर्ड हाडिंग मरे नहीं पर क्रांतिकारियों ने उन्हें हथियार स्तान करा दिया।

वे सना शून्य होकर हीरे में गिर पड़े, उनके श्राव गहर घाव लग, उनका छत्रपारी महावीर सिंह मर कर लटक गया वायसरॉय के पीछे खड़े उनके निजी मौकुर के चालीस घायल लगे वह सत्ता के लिए बहुरा हो गया। परंतु बम फेंकने वाला ऐसा लापता हुआ कि सब कुछ प्रयत्न कर लेने पर भी बम फेंकने वाले का गुप्तचर पता न लगा सका।

ब्रिटिश सरकार बौलला उठी। पुलिस ने बम की और ध्यान दिया। उसी प्रकार के दो बम इससे पूर्व फेंके जा चुके थे। एव मार्च, १९११ में कलकत्ता के डल-होजी स्ववायर में और दूसरा देहली बम बांड के पांद्रह दिन पूर्व मिन्टन पुर में फटा था। देहली बम बांड के पश्चात् भी सिलहट के मौलवी बाजार में २७ ३ १९१३ को तथा लाहौर में २७ ५ १९१३ का लाहौर में जो बम फटे थे वे भी ठीक उसी तरह के थे जो लॉर्ड हाडिंग पर फेंका गया था।

मोलवा बाजार के बम काट के सम्बन्ध में पुलिस ने कतरता के अपर सरख्यू नर रोड (राजा बाजार) के मकान नम्बर २६६-१ के एक कमरे की तलाशी ली। वह कमरा प्रसिद्ध क्रातिकारी शशाङ्क मोहन, उपनाम शशाङ्क शेखर हजरा उपनाम अमृत-लाल हाजरा का था। वहां जा कुछ पत्र आदि मिले उनसे पुलिस को यह पता चला कि अश्वविहारी का उन क्रातिकारियों से सम्बन्ध था। पुलिस को यह भी पता चल गया कि अश्वविहारी दिल्ली में मास्टर अमीर चन्द के यहां रहते हैं। अस्तु मास्टर अमीर चन्द के मकान की तलाशी ली गई। उस तलाशी में "लिवर्टी" क्रातिकारी पत्रिका, बम की टोपी और कुछ पत्र मिले। उनमें कुछ पत्र एम० एस० हस्ताक्षर के थे। पुलिस खोज बों के पश्चात् यह पता लगा लिया गया कि एम० एस० का वास्तविक नाम दीनानाथ था।

पुलिस ने लाहौर में चार दीनानाथ नाम के व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया। जास पहताल के पश्चात् अश्व दीनानाथ को छोड़ दिया गया और उस दीनानाथ का पकड़ लिया गया जिसका सम्बन्ध क्रातिकारी दल से था। वह अत्यन्त भीरु और कायर निकला जब पुलिस ने उसके साथ कठोरता का व्यवहार किया तो वह रोने लगा और उसने बतला दिया कि रामबिहारी बास लाहौर में हैं। यद्यपि वह यह तो नहीं बतला सकता कि वह क्रातिकारी दल में हैं। यदि वह यह तो बतला सकता है तो क्रातिकारी दल में शामिल होना चाहिए। यह उसने बतला दिया। साथ ही अपने रामबिहारी बास के रहने के स्थान की भी पुलिस को सूचना दे दी।

जैसे ही रासबिहारी बास को दीनानाथ की गिरफ्तारी का पता चला उन्होंने तुरन्त अपने निवास स्थान को बदल देने का निश्चय कर लिया। परन्तु एक कठिन समस्या उठ खड़ी हुई। सरकार ने लाहौर में एक राज अज्ञात इस आशय की लागू कर दी कि यदि कोई अकेला बाहरी व्यक्ति (पुरुष) मकान किराये पर लेना चाहे तो पहले स्थानीय पुलिस से आज्ञा प्राप्त कर ले। सपत्नीक व्यक्ति के लिए यह आदेश लागू नहीं होता था। रासबिहारी बास का उस समय किसी भी क्रातिकारी के मकान पर जाना निरापन्न नहीं था क्योंकि सभी क्रातिकारियों के मकानों पर गुप्तचरों की दृष्टि लगी हुई थी। व रासबिहारी की आज्ञा में थे। अस्तु यह निश्चय किया गया कि लाहौर के भीतरी क्षेत्र में जहां अपने बस्ती हो वहां किराए पर मकान लेकर रहा जावे। पर अनेके रासबिहारी को मकान मिल नहीं सक्ता था उस समय रासबिहारी बास के क्रातिकारी साथी पटियाला के रामशरण दास ने प्रस्ताव किया कि मेरी पत्नी सत्यवती रासूना के साथ उनकी पत्नी के रूप में रहेंगी। अस्तु समस्या हल हो गई और रासबिहारी बास नया मकान स्ट्रीट के मकान को छोड़कर नगर के भीतरीभाग में बच्चोवाली क्षेत्र में कटि-यावाली गली में मकान ले लिया और सत्यवती के साथ वहां चले गए।

पुलिस जब दीनानाथ के बतलाए स्थान पर पहुंची तो रामबिहारी बास उससे पहले ही यहां से हट चुके थे। बहुत कुछ खान बोन मरन पर भी पुलिस को यह पता पना नहीं पत्त साब कि रासबिहारी बास वहां चल गये। पुलिस ने रेनवे स्टेशन तथा सभी सड़कों पर गुप्तचरों तथा पुलिस का एक जास फसा रखा था अस्तु उसको

यह विश्वास था कि रास चित्तारी बोंस लाहौर से बही निकल कर नहीं जा सकते वे लाहौर में बही छिपे हैं। बहुत प्रयत्न तथा दौड घूष करने के उपरांत पुलिस का यह संकेत मिला कि बच्छोवाली क्षेत्र में बही खोज बोन करनी चाहिए।

दिसम्बर का महीना था मंगलवार का दिन था और तीसरे पहर का समय था। उसी दिन कट्टियावाली गली में एक नये विरायेदार सम्पत्ति धाकर रह थे। वे दोनों धांपस में जोर-जोर से चिल्लाकर लड़ रहे थे। गली में एक दो व्यक्तियों से उनकी बात हुई थी। पुरुष ने अपना नाम फकीर चन्द और स्त्री ने कुत्ती बतलाया था। पुरुष ने बतलाया कि वह दूकान करता है।

कुत्ती फकीर चन्द से चित्लाकर कह रही थी कि तुम इस चारपाई की मरम्मत करवाओगे या नहीं मैं तो तुम से कहते-कहते थक गई तुम मुनते ही नहीं। लगडा फकीरचन्द जो सर पर एक बड़ा मलमल का साफा बांधे था, उसकी धोती मली ऊंची और केवल घुटना तक थी, मली कमीज पर एक पुरानी ऊनी बास्केट पहने था। उसने अपनी पत्नी की बड़-बड़ के उत्तर में केवल इतना भर कहा "चुप रहो नहीं तो।"

उसी समय एक पुलिस इस्पेक्टर एक बृद्ध मुस्लिम कास्टेबिल के साथ वहां आ पहुंचा। फकीरचन्द ने इस्पेक्टर को देखकर कहा 'इस्पेक्टर साहब राम राम यह क्याट है वृषा करके बैठिए।'

इस्पेक्टर ने कहा 'धर्मवाद बैठना नहीं है यह भगडा और शोर किस लिए है।'

फकीरचन्द ने इस्पेक्टर के कान में धीरे से वा 'इस्पेक्टर साहब इसका सिर फिरा है।'

कुत्ती ने भी जो इस्पेक्टर से फकीरचन्द ने कहा सुन लिया और गुस्से में जोर से चिल्लाकर बोली "अच्छा तो मेरा सिर फिरा है मैं पागल हू गली के पडोसियों इस लगडे की बातें सुन लो। यह निक्मता जा अपनी दाढ़ी को भी साफ नहीं करता मुझे पागल कहना है।"

फकीरचन्द ने भी ब्राविग होकर कहा 'अच्छा तू भोंके जा' कुत्ती ने भी क्रोध में भर कहा 'अच्छा क्या मे कुत्ती हू जो भोंकती हू।'

इस्पेक्टर ने फकीरचन्द से पूछा कि आखिर भगडा किस बात का है।

फकीरचन्द ने उत्तर दिया 'इसने मुझे खाट की मरम्मत कराने को- कहा था, आज सभी दूकानें बन्द हैं क्योंकि आज भगवार है। मैंने केवल इतना भर कहा था जिस पर इसने आसपास, सिर पर उठा लिया है और भगडा खडा कर रक्खा है।'

इस्पेक्टर ने पूछा "तुम यहां कब से रह रहे हो।"

फकीरचन्द ने उत्तर दिया 'यह मेकान अपना ही है।' यह कहते हुए फकीरचन्द ने खाट पर दरी बिछा दी। इस्पेक्टर खाट के बीच में बैठ गया और कास्टेबिल इस्पेक्टर की पीठ के पीछे बठ गया।

इस्पेक्टर ने पूछा "अच्छा तो तुम एक बात बतनाओ। क्या पिछले दिनों में

कोई बगाली यहा रहने आया ।

फकीर चन्द ने आश्चर्य से उत्तर दिया 'बगाली हुजूर नहीं, जहां तक मुझे मासूम है यहा कोई बगाली रहने नहीं आया। आप बच्छोवाली म पता लगाइए। आपको इस गली के बार म किसने बतलाया ? क्या वह कट्टियावाली गली मे आया है ।

इस्पेक्टर ने कहा कट्टियावाली गली मे नही बरन बच्छोवाली मे आया है । फकीरचन्द ने इस्पेक्टर से पूछा कि क्या आप गरम दूध पीना पसन्द करेंगे । इस्पेक्टर ने कहा घबघाद नही । फकीरचन्द ने फिर पूछा कि बगाली कब से यहा रह रहा है, उसका नाम क्या है और वह किसके पास ठहरा है ।

इस्पेक्टर ने कहा उसके कई नाम है । उसका एक नाम छछुदरनाथ भी है । फकीरचन्द बोला—छछुदर नाथ यह तो अजीब और मजेदार नाम है । इस्पेक्टर भु भला कर बोला वह बदमाश बहुत चलाक है उसने मुझे बेहद परेशान कर रक्खा है ।

फकीर चन्द ने इस्पेक्टर से पूछा 'कसे परेशान कर रक्खा है ।'

इस्पेक्टर ने अत्यंत निराश भरे स्वर म कहा 'हम उसका पता जो नही लगा पाते हैं ।'

फकीरचन्द ने सहानुभूति के स्वर मे कहा 'क्षमा करें क्या मैं आपका हाथ देख सकता हू ।'

इस्पेक्टर ने कहा 'इससे मेरा क्या मला होगा' फिर जिज्ञासा के भाव से बोला क्या तुम हाथ देखना जानते हो ?

फकीरचन्द अत्यंत विनम्रता से बोला 'राम राम मैं सपठ आदमी हू मुझे यह विद्या महात्माओं के आशीर्वाद से मिली है जिनकी मैंने सेवा की थी ।

'धरुछा तो देखो' कहकर इस्पेक्टर ने अपना बाया हाथ उसके सामने कर दिया फकीर चन्द ने कहा बाया नही सीधा हाथ दिखाइए ।

धरुछा यह तो सीधा हाथ इस्पेक्टर ने अपना सीधा हाथ पला दिया ।

फकीरचन्द ने ध्यान से हस्तरेखाओं को देखा और कहा आपकी हस्तरेखाएं बहुत स्पष्ट हैं । आपका शुभनाम क्या है ?

इस्पेक्टर ने अपना नाम श्रद्धाराम बतनाया ।

फकीर चन्द बोला ठीक है । क्या आपकी कोई वस्तु खो गई है ।

श्रद्धाराम ने आश्चर्य से पूछा 'वस्तु'

फकीरचन्द ने अपने कथन का सशोधन करते हुए कहा 'वस्तु के अंदर मनुष्य भी आ जाता है ।

श्रद्धाराम इस्पेक्टर बोला 'हा मेरी एक चीज खो गई है ।'

फकीरचन्द जिज्ञासा के स्वर मे बोला 'बड़ी जिसकी तुम तलाश म हो ।'

'हां' पर यह बतनाओ कि क्या मैं उसका पकड़ पाऊंगा । श्रद्धाराम ने बिना धक्का मारी ।

फकीरचन्द बोला 'हा तुम उभे पा जावोगे क्योकि परसों तक तुम्ह कोई हानि होने का योग नहीं है ।

श्रद्धाराम ने पूछा 'परमो के बाद ।'

उसी समय फकीर चन्द ने कहा 'ओह मैंने द्रमवी घोर तो ध्यान ही नहीं दिया था । मेरे विचार मे वह तुम्हें ब्रह्म मूहृत मे मिलेगा । प्रात कास पीने चार से पीने पांच के बीच मे उसने मिलने का योग है ।

श्रद्धाराम ने फकीर चन्द से पूछा "अच्छा तो वह किम दिन मिलेगा ।"

फकीर चन्द ने गम्भीर होकर उत्तर दिया आज बल तो मिलने का कोई प्रश्न ही नहीं परसा अर्थात् बृहस्पतिवार को मिलने का योग है ।

श्रद्धाराम ने अत्यन्त विनम्रता से पूछा "क्या तुम कोई ऐसा उपाय बतला सकते हो कि जिससे मैं, उसे जल्दी पाजाऊ ।

फकीर चन्द ने गम्भीर मुद्रा मे कहा "शनि मंगल के माग का रोके हुए है । जब शनि मंगल के माग स हट जावेगा तभी मंगल अपना प्रभाव दिखला सकेगा ।

श्रद्धाराम ने पूछा कि क्या शनि का मंगल के माग से हटाने का कोई उपाय नहीं है ।

फकीर चन्द ने उन्हे सान्त्वना देत हुए कहा कि उपाय तो है पर कभी-कभी उमरा परिणाम विपरीत हो जाता है दम लिए शनि को धरने मार्ग पर धरने देना ही ठीक होगा । परतो वह स्वयं माग से हट जावेगा ।

श्रद्धाराम ने कहा "अच्छा तो वह मुझे परसा अर्थात् बृहस्पतिवार को प्रात कास पीने चार बजे से पीने पांच बजे के मध्य मिलेगा ।"

फकीर चन्द बोला "शास्त्र यही कहता है इससे अधिक तो भगवान ही जानता है ।"

श्रद्धाराम माट पर से उठते हुए बोना 'अच्छा तो अब हमें चलना चाहिए ।' यह कहकर इस्कीक्टर श्रद्धाराम उठ सडा हुआ और बूढ़ कान्टेबिल भी उमने पीछे पीछे चला गया ।

जब वे दोनों चले गए तो फकीरचन्द कमरे मे गया । कुत्ती को अपने पास बुलाकर उसने कुछ गुप्त परामश किया और घोड़ी ही देर बाद वे दोनों उस मकान के बाहर निकले । फकीर चन्द के पास एक छोटा लकड़ी का सडूक था और कुत्ती के पास कपडा की छोटी-सी गठरी थी । साट पडोसी की थी उसे दे दी और मकान के बाहरी दरवाजे मे ताना लगाकर गाना चलते बने ।

बुधवार को साय फाल घाठ बजे पचास पुलिस वास्टेबिलो ने कट्टियावाली गली को बाग ओर से घेर लिया पुलिस सुपरिटेन्डेंट गुलाम नबी उस गली मे घुसे । उनके घागे दो और पीछे दो वास्टेबिल सतक होकर चल रहे थे । उनके हाथा मे बडी-बडी टाचें थी । एकाएक पुलिस दल के आक्रमण से गली के लोग खिडकियो से भावते थे । परतु बाहर कोई भी नहीं निकला ।

सुपरिटेन्डेंट गुलाम नबी ने एग मकान के दरवाजे को थापवपाया । 'घर से

आवाज आई कौन है ? गुलाब नबी ने कहा 'दरवाजा खोलो।' मकान के अंदर से आवाज आई किसी ने पूछा 'कहाँ क्या काम है। गुनाम नबी ने झुंझना कर कहा 'नाथू भगवता' का मकान कौन सा है।

मकान का दरवाजा खुला और शाल छोड़े हुए एक प्रौढ़ व्यक्ति ने, बाहर निकल कर पूछा "नाथू भगवता का या नाथू मिरपटा का मकान चाहिए।" फिर उसने कहा थोड़ा आगे चले जाऊँ सातवा मकान नाथू भगवता का है।

गुलाम नबी आगे बढ़ा और सातवें मकान पर पहुँचा यह देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि बाहर से उसके दरवाजे में ताला लगा था। यह देखकर गुनाम नबी ने कहा 'शतान फिर चबूटा देकर निकल गया।'

गुलाम नबी और साथ के चारों कास्टेबिल छोड़े मकान पर गए और उसके बड़ मालिक ने बतलाया कि सातवा मकान अधिबन्धन वाली रहता है। लोग की मान्यता है कि उसमें भूत रहते हैं। परसों एक प्रेतात्मा पुरुष और एक स्त्री उसमें रहने के लिए आए और दिन भर आपस में लड़ते रहे। रात्रि को जब हम लोग बिस्तरी पर लेट गए थे तो कुछ लोग उनसे मिलन के लिए आए थे शायद वे भी प्रेतात्माएँ ही होंगी।

गुलाम नबी ने पूछा कि क्या वे बगाली थे। बड़ पुरुष ने पूछा क्या भूत बगाली होते हैं। यदि कोई उनसे बात करता तो पता चलना कि वे कौन थे। पर पुरुष का साफा तो पजाबियों की तरह था। उसकी पत्नी भी पजाबिन लगती थी क्योंकि वह सलवार और कुर्ता पहने थी और वह अपने पति की ठेठ पजाबी में जोर-जोर से गाली दे रही थी।

गुलाम नबी ने पूछा अच्छा वे गए कहा। बड़ बोला 'मैं नहीं जानता' मैंने तो उन्हें केवल गाली देते भगुना। मेरी पत्नी ने मकान से बाहर निकलने का साहम ही नहीं किया और मैं अच्छा को बाहर निकलाने दिया।

गुलाम नबी ने फिर पूछा—इस मकान का मालिक कौन है ? बड़ बोला। यह मकान नाथू भगवता का है जो गली बनवटान में रहता था और वान बेचता है।

गुलाम नबी ने बड़ पुरुष से कहा अच्छा अब तुम जा सकते हो बड़ पुरुष के चने जाने पर गुलाम नबी ने कास्टेबिलों को मकान का ताला तोड़ देने की आज्ञा दी। जब कास्टेबिलों ने देखा तो ताता ब - नहीं था। वह तो केवल लटका भर दिया गया था। दरवाजा खोल कर, दो कास्टेबिलों और टाच लेकर गुलाम नबी मकान में घुसे परंतु वहाँ कुछ भी नहीं था मकान खाली था। एक कौन में कुछ कागज़ के टुकड़े थे जिन्हें गुलाम नबी ने मावधानी से अपने बग में रक्ख लिया।

बाद को पुलिस को ज्ञात हुआ कि प्रसिद्ध महान् क्रांतिकारी रासबिहारी बोस फकीरचंद के नाम से नाथू भगवता के मकान में रहे थे और सरकारी आदेश को व्यथ करने के लिए उन्होंने रामशरणरास की पत्नी सत्यवती को अपनी पत्नी (कुत्ती) के रूप में रखसा था। थडाराम इम्पक्टर के हाथ को देखकर उन्होंने उसे मूस बनाया था।

पुलिस उनको खोज निकालने में आकाश पाताल एक कर रही थी। अस्तु रामबिहारी बोस ने लाहौर से निकल जाना ही उचित समझा।

एक सायनान को उठाने एक स प्रेज का अग धारण किया गुप्तचर विभाग का यरिष्ठ सुपरिटेण्ट २५ गुप्तचरो के साथ स्टेशन पर उठाया राज रहा था । वे एक प्रथम श्रेणी के कम्पाटमेन्ट में बैठे थे । पुलिस सुपरिटेण्ट ने उनका देगा परन्तु उनकी बेसभूषा तथा मुसाहुरि ऐसी सामान्य थी कि वह यह कल्पना भी न कर सका कि वे ही प्रसिद्ध क्रांतिकारी नेता राजबिहारी बोस हैं ।

बाद को जब यह बात हुआ कि वे ही श्री राजबिहारी बोस थे ता सुपरिटेण्ट सज्जा के कारण एक सप्ताह तक अपने बगले के बाहर नहीं निकला । परन्तु वरानि वह स प्रेज था सरकार न उसे कोई दण्ड गही दिया । परन्तु इस्पक्टर क्याकि भारतीय था उसको इस्पक्टर के पद से अवनत कर सब इस्पक्टर बन दिया गया ।

इस प्रकार राजबिहारी बोस साहीर से निकल गए और पुलिस के उनको पकडने के सारे प्रयत्न व्यथ हो गए ।

10439
5-5-89



पाचवा अध्याय

राजबिहारी जोष की खसुरता

वायसराय लान हाडिंग पर बम फेंक जाने से भारत और ब्रिटेन में माना भूषण आ गया। इम्पीरियल लजिस्लटिव काउंसिल के एच सदस्य श्री एम आर त्रीपता मानो बोलता उठे उन्होंने कहा 'हम इन विदुषा पर तुरन्त विचार करना चाहिए। (१) क्या कुछ उच्च अधिकारी यथेष्ट और कठोर सतकता न लेन के दोषी हैं। (२) क्या कुछ निम्न अधिकारी तुरन्त उक्त भवान की घेराव-दी करन में देरी करन के दोषी हैं। (३) क्या अब कोई व्यक्ति अनियमितताओं को हुई उनके लिए दोषी है। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि १९११ में जब सम्राट देहली गए थे तब उनके जुलूस के मार्ग पर प्रत्येक घर में पुलिस तथा गुप्तचर तैनात किए गए थे। यह बहुत आवश्यक सतकता है जो बम्ब अथवा ब दूक के द्वारा आक्रमण किए जाने के विरुद्ध कारगर हो सकती है। ऐसा करन से सम्भावित हत्यारो के सुविधा के स्थान पर पहुंचने से रोक सकती है। बहुत समय से हम लोग को गुप्तचरो (सी आई डी) द्वारा यह रिपोर्ट मिलती रही है कि पेरिस, जेनेवा और पाडिचेरी तथा अन्य स्थानों में भारतीय क्रांतिकारी चढपत्र कर रहे हैं। लाड हाडिंग पर बम फेंके जाने की घटना से लगभग एक सप्ताह पूर्व बंगाल में बम फेंके जाने की घटना हा चुकी थी। भारत में आराजकता उपरूप से विद्यमान है। मैं नहीं समझता कि स्थानीय अधिकारी दोष रहित है। यदि कोई ऐसी दुघटना हो जावे तो क्या करना चाहिए इस सम्बन्ध में कोई निश्चित आदेश न होने के कारण भी शिथिलता रही। पुलिस जो तुरन्त कायवाही न कर सके उसमें इस प्रकार की परिस्थिति में क्या करना चाहिए इस सम्बन्ध में निश्चित आदेशों का न होना भी एक कारण था।

पुलिस सुपरिस्टडेंट डी एस हैडी ने अदालत में शपथ पूर्वक कहा कि यदि हम महामहिम वायसराय के हाथी का चूना जाना तो सम्भव वह महामहिम वायसराय को मार देता।

महान् क्रांतिकारी रासबिहारी बोस

फरवरी, १९१३ में जब पुलिस ने अवध बिहारी के मकान की तलाशी की तो उसे रासबिहारी का एक बक्सा मिला जिसमें रासबिहारी का कुछ सामान था जो वह अवध बिहारी के यहाँ छोड़ गए थे। इससे पूर्व अमोरचन्द के मकान की तलाशी में पुलिस का लिबरटो परिपत्र एक बम की टोपी तथा कुछ पत्र मिल गए। अवध बिहारी के मकान की तलाशी के बाद पुलिस को पहली बार रासबिहारी का प्रातिकारी कार्यों में सम्मिलित होने का पता चला। अभी तब वे रासबिहारी पर कोई सदेह नहीं करते थे। क्रातिकारी कार्यों में सम्मिलित होने का भी उन पर कोई सन्देह नहीं करता था।

जब रासबिहारी का पता चल गया कि पुलिस का उनके क्रातिकारी दल में हान का पता चल गया है तो वे बहुत सतर्क और सावधान हो गए। गुप्त रूप से वे चन्दरनगर चले गए। जिससे कि वे पुलिस के हाथों में पड़ने से बच सकें चन्दरनगर में रासबिहारी का तब परम मित्र तथा प्रातिकारी साधु शिरीषचन्द्र न उनकी चौकसी का प्रबन्ध किया। २ मार्च १९१४ को बलकृष्ण पुलिस के डेनरूम तथा टगाट रासबिहारी का गिरफ्तार करने के लिए चन्दरनगर पहुँचे पर तु शिरीषचन्द्र की सावधानी और सतर्कता से रासबिहारी बच गए। पुलिस उनका गिरफ्तार नहीं कर सकी। यद्यपि जिस स्थान पर पुलिस उनको खोज रही थी वे उसमें दूर नहीं थे। जब पुलिस उनका निवास स्थान को घेर हुए उनकी खोज कर रही थी तो रासबिहारी समीप ही दूगर मकान से पुलिस की गतिविधियाँ का निरीक्षण कर रहे थे।

एक बार रासबिहारी देहरादून में श्री ए सी घोष के मकान में ठहरे। जब रासबिहारी की पुलिस को खोज हुई तो देहरादून में पुलिस सुपरिटेण्डेंट न रासबिहारी का देहली का पता पूछा श्री ए सी घोष ने बताया कि रासबिहारी ने उनके सब पत्रों को बाबू मुन्नालाल, हवेली जुगल विशार चादनी चौक देहली के पत्र पर भेजने के लिए उनमें कहा था। पुलिस सुपरिटेण्डेंट बटन न उनकी एक पत्र मुन्नालाल को लिखने को कहा। ए सी घोष ने मुन्नालाल को पत्र लिखा परंतु रासबिहारी का पता नहीं चला। रासबिहारी पुलिस से अधिक चतुर थे। वे अपने निवास स्थान का बदलते रहते थे। देहरादून पडयन अभियोग में एक अभियुक्त ने भी पुलिस को बताया था कि रासबिहारी का सारा सामान कहा रहता था जिसकी तलाशी ली गई पर रासबिहारी का कहीं कोई पता नहीं चला। बटन रास बिहारी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना चाहते थे परंतु वे अपने प्रयत्न में असफल रहे। रासबिहारी बटन से अधिक चतुर थे।

एक बार रासबिहारी १९१४ के धारम्भ में हिमाचल प्रदेश में गए और एक सयासी के भेद में एक डाकिये के पास बेलाग (लाहौल) में रहे। इस प्रकार वे पुलिस को भ्रम बनाते रहे पुलिस उनके पीछे थी परंतु वह उनका पता नहीं लगा सकी।

जब देहली पडयन अभियोग चलाया गया तो पुलिस को रासबिहारी बोस को गिरफ्तार करने की तीव्र इच्छा उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था। परंतु फारेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट से वे अवकाश पर अपने घर चले गए हुए थे। वे निरंतर एक स्थान से दूसरे स्थान को प्रस्थान करते पुलिस को भ्रम बनाते थे। ब्रिटिश सरकार ने चन्दर-

नगर की फ्रांसीसी सरकार पर इस बात के लिए दबाव डाला कि वह रास बिहारी बोर को चन्दरनगर से निकल जाने का आदेश दे। चन्दरनगर की फ्रांसीसी सरकार ने रासबिहारी बोर को फ्रैंच भीमा से बाहर निकल जाने का आदेश दे दिया। अब रासबिहारी बोर को बंगाल में रह सकना बहुत कठिन हो गया।

समाचार पत्रों में जब यह समाचार प्रकाशित हुआ और परिविदु न पनाता उहोने पाडीचेरी से श्री मोतीलाल को नीचे लिखा पत्र लिखा।

प्रिय मातीलाल,

अभी थोड़ा समय हुआ समाचार पत्रों में यह प्रकाशित हुआ है कि चन्दरनगर प्रशासन ने रासबिहारी बोर के विरुद्ध निवासन के आदेश (वारंट) निवाले हैं। यह एक राजनीतिक मामला है। साधारणतया हम राजनीतिक मामलों में नहीं पड़ते परन्तु यह मामला भर तथा भर मित्रों से सम्बन्ध रखता है। यह हमारी परिस्थिति की सुरक्षा पर आश्रय है। यदि इसका या ही बिना कानूनी चुनौती दिए छाड़ दिया गया तो किसी भी समय हमसे किसी को भी ब्रिटिश पुलिस वाईं भूठा दोपरोपण करके निर्वासित करवा सकती है। अतएव मैं तुमसे इस मामले में हस्तक्षेप करने के लिए कह रहा हूँ यद्यपि यह तुम्हारे योग अभ्यास में बाधा डालगा। मामला या अभियोग स्पष्टता या राजनीतिक है। दहली पडयत्र अभियोग में मुख्य दोषारोपण निम्नलिखित प्रतीत हात हैं—

(१) राज्य सरकार के विरुद्ध पडयत्र करना यह राजनीतिक अपराध है। (२) धारा ३०२ के अंतगत हत्या करने का दोषारोपण जो कि राजनीतिक उद्देश्य से करने का प्रयत्न था। (३) विस्फोटक पदार्थों सम्बन्धी कानून के अन्तगत अपराध वह भी राजनीतिक परिस्थितया से सम्बन्धि हैं। यह सभी अभियोग एक साथ चलाए गए हैं तथा एक ही अभियोग के अंतगत ह। यह एक राजनीतिक पडयत्र हैं जा वनमान, सरकार का बदलने प्रयत्न उखाड़ फरना है। फ्रांस और इङ्गलैंड की सरकारों के बीच जो निवासन सम्बन्धी संधि है यदि किसी बाद की संधि से जिसमें भ्रवगत नहीं उसके अंतगत नीचे लिखी अवस्थाओं ने निर्वासन हा सकता है। (१) राजनीतिक अपराध (२) ऐसा अपराध प्रयत्न जिसका स्वरूप राजनीतिक हा। (३) ऐसा दोषारोपण जो साधारण दोषा के लिए लगाया जाता है पर वास्तव में वह राजनीतिक शक्तिया को पकड़ने के लिए उपयोग में लाया जाता है। कहा जाता है कि रासबिहारी बोर या तो चन्दरनगर में अथवा पंजाब में कहीं छिपे है। अस्तु यदि उनकी ओर से कोई इसको कानूनी चुनौती दे ता वह या तो उनका कोई सम्बन्धी हो या मित्र हो। सम्बन्धी हो तो अधिक अन्ध्रा है। तुम्हें जो करना है वह यह है कि इस व्यक्ति का पता लगाओ जो रासबिहारी बोर की ओर से अभियोग चलाने का अधिकारी हो, फ्रांस और इङ्गलैंड के मध्य हुई आधुनिकतम संधि को पढो और जमा कि मैंने ऊपर लिखा है यदि वह वसी ही हो ता अभियोग को किसी फ्रांसीसी वकील के सुपुद कर दो जो फ्रैंच अदालत में अभियोग चलाव। भर विचार से उसे फ्रांस की सरकार को फ्रांस में आवदन देना पड़ेगा। यदि यह सम्भव न हो ता परिम में उच्चतम यायालय में उसे जाना हागा। जो वरन व्ययमाय हागा। यदि आवश्यक हो ता पहले पाडीचेरी में उच्चतम कानूनी अधिकारियों को अपील की जावे। उसके उपरांत उच्च यायालय जाया जावे

महान् नातिनारी रासबिहारी बोस

इन बिन्दुमा पर बोस के प्रतिनिधि को निगी फ्रैंच कौल से परामर्श करना होगा। यदि फ्रैंच सरकार उसे ब्रिटिश सरकार को देती है तो सावरकर के सम्बन्ध में हंगेरी के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायानय का पत्रना हमारे माग में बाधक होगा और स्थिति को निराशाजनक बना देगा। फ्रान्स की सरकार फिर भी इस आधार पर कि बोस फ्रान्स की प्रजा है, न्यायानय में अभियोग चला सकती है।

परन्तु यह नक्तिसाम्नी कूटनीतिक दवाय का उपयोग करने ही अपने इस प्रयत्न में सफल हो सकती है जो कि फ्रान्स की वर्तमान सरकार पसन्द नहीं करेगी। जो भी हो फ्रान्स के उच्चतम न्यायालय से इस सम्बन्ध में डिग्री ले लेना उचित होगा जिससे इस प्रकार के मामला में क्या नीति अपनाई जावे इस सम्बन्ध में सिद्धांत निश्चित हो जावे। परन्तु इन राजनीतिक मामला में सदैव यह जागिरम सी रहती ही है क्योंकि उनमें न्याय तथा कानून की अधिकतर अवहेलना की जाती है कि हमारे विरुद्ध पसना हो और उसमें जो स्थिति प्राप्त है उसमें भी बुरी स्थिति हो जावे। यह उचित होगा कि यह माधुम कर लिया जावे कि गारुचन्द्राय के मामले में किस आधार पर क्या किया गया था और क्या इस मामले में उन्हें आधार बनाया जा सकता है यदि तुम वारंट में दापारोपण के तथ्य क्या हैं यदि उनको तिस भेजो तो मैं फ्रांस को एक पत्र लिखवा दू जिसमें 'जारेम' या अन्य कोई इस मामले को चला सके। 'काली'

जब रासबिहारी बोस सावरनगर देहरादून लौटे तो उन्हें आस हुआ कि जितेन्द्र मोहन चटर्जी इङ्गलैंड से वापस लौट आए हैं। रासबिहारी बोस अत्यन्त दुस्माहसी थे वे एसी भयकर और विपरीत परिस्थिति में जबकि पुलिस उनकी खोज में भाषाण पाताल एक कर रही थी चटर्जी से मिलने सहारनपुर पहुँचे। और एक सप्ताह तक उनके पास ठहरे। क्योंकि रासबिहारी बोस दूर चले जाना चाहते थे। उनके मित्र चटर्जी ने कुछ रुपया उनके लिए एकत्रित किया। चटर्जी ने रासबिहारी बोस को बतलाया कि उनका चित्र जिसमें वे अपनी माइकिल पर एक हाथ रख कर खड़े हैं स्टेशन पर लगा है। उनका वह चित्र स्टेशन पर इस दिण लगाया गया है कि यदि कोई जानकी देने तो पहचान ल और पुलिस को सूचना दे दे जिसके लिए भारी परितापिक की घोषणा की गई थी। रासबिहारी को यह देवी गुण प्राप्त था कि चाहे कितनी ही भयकर विपत्ति का सामना करना पड़े वे कभी घबराने नहीं थे और न मानसिक सतुलन ही खोते थे। भाति या युद्ध होता में उनका मस्तिष्क समान रूप से बिना प्रभावित हुए सामान्य रूप से काम करता था। यह भी सही है कि वे अनेक भेप धारण करते थे और जिस प्रकार का भेप धारण करते थे उसमें अनुरूप ही भाषा बोलते थे। यही कारण था कि कई बार वे पुलिस अधिकारियों को भूल बनाकर निकल गए। यह सुनकर कि उनका चित्र स्टेशन पर नगया गया है उन्होंने दृच्छा प्रगट की कि वे देखेंगे कि उस चित्र में वे कैसे लगते हैं। यह उहुन नडे जोमिम का काम था परन्तु रासबिहारी बोस ने एक काबुली पठान का भेप धारण किया और चटर्जी को साथ लेकर रेलवे स्टेशन अपने उस चित्र का देखने गए।

एक सप्ताह के उपरांत एक सायनाल रासबिहारी बोस सहारनपुर से चुपके से निकल गए। उसके कुछ दिनों बाद एक गुप्तचर सी आई डी इस्पेक्टर चटर्जी के

पास यह जानने के लिए धाया कि क्या रासबिहारी वास गद्दारनपुर घाट थे। यह सुन कर घटर्जी ने दम जोर से घट्टहाम किया कि सी घाई डी इम्पेक्टर के मुख की क्रांति घूमिस हा गई। यह सज्जित होकर बना गया।

एक बार जब वे वाराणसी (वाराणसी) में थे, वे कुछ बमों का परीक्षण कर रहे थे। शचीन सायास भी उनके साथ थे वे दोनों उन बमों का परीक्षण दशास्वमेय घाट पर डाक्टर प्रसन्न सायास के मकान में कर रहे थे। घनायाम ही एक बम हिलने के कारण विस्फोट हो गया। बम के विस्फोट होने से रासबिहारी बोस घुरी तरह से टांग में घायल हो गए शचीन सायास के भी थोड़ी चोट घाई। पर बम के विस्फोट की जो भयंकर धावाज हुई वह दूर तक सुनाई दी। रासबिहारी ने तुरन्त निएय किया कि अब वहां रहना निरापद नहीं है क्योंकि वहां रहने वाले इसकी चचा घ्रापस में करे और पुलिस तक यह सूचना पहुंच जावेगी घरसु उहागे बहा से हट जाओ का तुरन्त निएय कर लिया। रासबिहारी ने अपने गाविया स वहा कि उह घर्षी बनाकर शव की भांति चार घ्रापमिया के बघो पर से जाया जाय। उनके आदेश के अनुसार उनको शव की भांति घर्षी पर चार व्यक्तियों के बघा पर रामनाम सत्य है का उच्चारण करते हुए हरिश्चंद्र घाट पर से जाया गया। डाक्टर वाली प्रसन्न सायास ने उनके भोजन घादि की ध्यवस्था की और उनकी पुत्री उपासिनी देवी ने रासबिहारी बोस की सुश्रूपा की।

एक बार सितम्बर १९१३ में जब रासबिहारी बोस कलकत्ता में घनुशीलन समिति के मेस में जहा नसनी विशोर गुहा तथा घाय मिना के साथ रहत थे प्रतुल चंद गंगोली के साथ रासबिहारी डाका से लाए गए रिवाल्वरों का परीक्षण कर रहे थे जिन्हें वीरेन घटर्जी लाए थे। अकस्मात् एक रिवाल्वर को असावधानी से पकड़ने के कारण उन थोड़ा दब गया और रिवाल्वर की गोली रासबिहारी के बाये हाथ की तीसरी अंगुली को घायल करके निकल गई। उन्होंने तुरन्त वहा से हट जाने का निएय लिया। अंगुली से रूधिर बह रहा था। उसकी परवाह न कर अंगुली को एक चादर में लपेट कर और अत्यन्त कुशलतापूर्वक एक बद्ध दुकानदार का भेष धारण कर के वहां से निकले। उनको उस भेष में कोई पहचान नहीं सकता था। वे बस भूषा धारण करने में मिद्धहस्त थे। वे वहां से प्रतुनचंद्र गंगोली के साथ राजावाजार गंग और वहा डाक्टर से पट्टी कराकर घपर सरखयूलर रोड के एक मकान में चले गए। रात्रि का वे उस मकान में भी नहीं रहे और रात्रि का चन्दरनगर को वहा से प्रस्थान कर गए। जब उनके यह घात्र ठीक हो गए तो रासबिहारी परो में मोझे तथा हाथा में त्स्ताने पहिनने लग गए थे। जब सरकार ने उनके पकड़ाने वाले को बहुत बड़े पारितोषिक देने की घोषणा की और तत्काल ही विनापन निकाला तो इन जस्मों के निशानों का उसमें उल्लेख था। यह रहस्य ही बना रहा कि पुलिस को उन घावा के निशानों का पता कैसे चला। यहा यह बना देना आवश्यक है कि यह रिवाल्वर हैड कास्टे बिल हरिपद देव को मारने के लिए लाए गए थे। बाद को २६ सितम्बर १९१३ को हरिपद देव को प्रतुन चंद्र गंगोली ने कालज स्वरायर में रवीन्द्रनाथ सेन तथा निमल कुमार राय की सहायता से मार दिया।

एक बार चन्दरनगर में पुलिस को सन्देह हो गया कि राम बिहारी बोस एक मकान में हैं। उन्होंने उस मकान की बड़ी घेराव बन्नी कर ली रामबिहारी उस मकान में थे उनका उस मकान में निवल जाना असम्भव था। पर उन्होंने अपने मस्तिष्क का सन्तुलन नहीं खोया। उन्होंने पुलिस की घेरावन्दी से निवल जाने की युक्ति सोच निकाली। उन्होंने एक मेहतर (टूटी साफ करने वाले) का भेष धारण किया। एक मंते बपड़े से नाक घोर मुह पर ढाटा बांध लिया मंते घोर फटे बपड़े पहिनकर मल को एक ढोल में भर लिया और उस मल से भर ढोल को सर पर रखकर मकान से बाहर निकले। पुलिस को कल्पना भी नहीं थी कि राम बिहारी मल को सर पर रखकर जा रहे हैं। इस प्रकार वे पुलिस को मूर्ख बनाकर साफ निकल गए। जब पुलिस ने मकान की तलाशी ली तो रामबिहारी वहाँ नहीं थे।

जब रामबिहारी बोस भी एक ठाकुर क नाम से भारत से जापान को जाने के लिए प्रयत्नशील थे उन्हें छात्रा पत्र लेन के लिए अनेक राजकीय कार्यालयों में जाना पडा। पर वे वेश भूषा धारण करने में सिद्ध हस्त थे। इस कारण कोई सन्देह भी नहीं कर सता कि भी एक ठाकुर के वेश में महान क्रांतिकारी रामबिहारी बोस हैं।

यह हम पहले ही देख चुके हैं कि लाहौर में जब रामबिहारी ने लगे दुकान-दार पजार चन्द का वेश धारण कर और अपने क्रांतिकारी सहयोगी रामसरनदाम की पत्नी सरयवती को कुत्ती के नाम में अपनी पत्नी के रूप में रखकर पुलिस इम्पकटर थ्रडगाम को किस प्रकार मूर्ख बनाया और लौहार से निकलने के लिए किस प्रकार बपड़ा वेश भूषा धारण कर पहले दर्जे में सफर कर किम प्रकार अंग्रेजी बरिष्ठ पुलिस सुपरिण्टण्ड का घोषा दिया।

रामबिहारी बोस केवल भेष बदला में ही सिद्धहस्त नहीं थे वे कई भाषाएँ तथा बोनिया बोल सकते थे और एक उतवता के अवशम चलते थे कि वे प्रत्येक जिन अपने साने व स्थान का बताने सेते थे तथा किसी भी मकान में दो चार दिनों से अधिक् नहीं रहते थे। यही कारण था कि वे पुलिस के हाथ नहीं आए। वे सदैव पुलिस को धमकाते रहे।

एक बार जब राम बिहारी बोस चन्दरनगर में थे और अपने मित्र के मकान में रुक रहे थे तो पुलिस को सन्देह हुआ गया कि वे अमुक मकान में हैं पुलिस ने उस मकान की चारा घोर में घर लिया। परन्तु रामबिहारी विचलित नहीं हुए। मकान में पागलाना साफ करने के लिए मेहतर धाया हुआ था। उन्होंने उस मेहतर के बपड़े के लिए उठ कर पहिनकर वे मल की भरी उमकी वाली लेजर बघडय पुलिस को मूर्ख बनाकर मकान में निकल गए। कई बार वे पुलिस का मूर्ख बना चुके थे। वे जिस तरह के योग गश्तियों उसी प्रकार की भाषा बोलते थे। उनकी मुखाकृति भी उसी प्रकार की रहती थी इस कारण कोई सन्देह नहा करता था। उनमें किसी भी मनुष्य के पहिनाके गया थोडा भाव की नकल कर लेते की आश्चर्यजनक बना थी। इस कारण वे पुलिस को मूर्ख बना मूर्ख बना चुके थे। और उसके सामने से बचकर निकल जाते म मर्दान हुए थे। वे मर्दान के मनुष्य का वेश धारण करते थे उसी के अनुकूप मुखाकृति बनाते मर्दान १११

वरन तथा उत्ती व समाप्त भाषा वासन म दग थे । यही कारण था कि कई बार ने पुनिम को मूस बनान मे मफन हुए थे ।

रासबिहारी बोस का गिरफ्तार होने से चमत्कारी ढग से बचना

रासबिहारी बोस के आतिथारी राजनसिब जीवन की एक विशेषता है कि ब्रिटिश सरकार ने सारे प्रयत्न कर लिए परन्तु उनको गिरफ्तार नहीं कर सकी । अंग्रेज सरकार जितना रासबिहारी बोस के पीछे पड़ी थी उतना किसी भारतीय आतिथारी राजनीतिज्ञ के पीछे नहीं पड़ी परन्तु वह सदैव असफल रही । अंग्रेज अक्सर घाए जबकि रासबिहारी बोस पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए जा सकते थे परन्तु प्रभु कृपा और अपनी चमत्कारी चतुराई से वे बाल-बाल बच गए और पुलिस को निराश हाना पडा ब्रिटिश सरकार के प्रिस्टून मापन व्यय भे गए । उनका गिरफ्तार होने से बचना साधारण व्यक्ति के मन अद्भुत पहनी लगती है । यहां कुछ ऐसी घटनाएँ का घण करेगे ।

रासबिहारी बोस स्थिति का ऐसा सही अध्ययन कर लते थे कि माना के भविष्य म क्या होने जा रहा है उसे देख रहे हा । यही नहीं व मनुष्य के विलक्षण पारखी थे वे किसी मनुष्य के द्वारा कभी भी गलत कर्म उठाने के लिए तयार नहीं किए जा सकते थे । आध्यात्मिक दृष्टि मे वे गीता के निष्काप व म अटूट विश्वास करते थे । उहाने मातृभूमि का अंग्रेजा से स्वतंत्र करने के लिए अपना जीवन अर्पण कर दिया था । वह यह मानते थे कि वे अंग्रेजो को भारत से निकालने का काय कर रहे हैं वह ईश्वरीय काय है । वे अनेक बार गम्भीर अत्यंत जटिल और भयंकर विपत्तियां से बाल बाल बच गए उसको देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उन पर दबी कृपा थी ।

फरवरी १९१८ म जबकि पुनिम देहली म आतिथारिया की अत्यंत परिश्रम के साथ सलाशी ले रही थी जिनके परिणाम स्वरूप मास्टर अमीर चंद तथा अवध बिहारी गिरफ्तार हो गए थे तथा रासबिहारी बोस का कुछ मामान भी उह मिला था उस समय रासबिहारी बोस लाहौर म निश्चित हाकर रह रहे थे । देहली म आतिथारिया की घर पकड के सम्बन्ध म उह कुछ भी गान नहीं था । परन्तु जब उन्हें डी ए बी बालेज के छात्र से जा बोडिंग म रहता था मायबाल को पाठ हुआ कि गीताबाब को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया ता दूग्दर्शी रासबिहारी बोस ने देग लिया कि भविष्य म क्या हात बाला है और उहान उमी रात्रि को बट खान छोड दिया । दूसर दिन प्रात जान होत ही लाहौर की पुनिम ने उनको निवाम स्याा का घेर लिया परन्तु पक्षी पले ही स्थान को छोड चुका था ।

रासबिहारी लाहौर मे देहली सुरक्षा पाणे की दृष्टि से आण परन्तु जब वे अमीर चंद के मकान की आर जा रहे थे ता उनका पीवर उह मिला और उसने उ ह बतलाया कि उमने स्वामी गिरफ्तार कर लिए गए तो उहाने तुरत चंदर-नगर जाने का निश्चय कर लिया और देहली छोड दिया । पुलिस को पुन निराश हाना पथा ।

बंगाल की पुलिस को यह ममाचार मिला कि रासबिहारी चंदरनगर म अपने मकान म छिप हुए है । उन्होन अपने शिकार को पकडने के लिए उनके मकान को

पर निया । यह पटना के माच, १९१४ की थी परन्तु रासबिहारी ने मगान म छिप रह कर भी फिर पुलिस को मूक बनाया और पुलिस के हाथ नहीं जाए । पुलिस की इस असफलता से पुलिस तथा शासन के उच्च अधिकारियों । यह अनुमान लगाया कि वे चन्द्रनगर में नहीं है और वे चन्द्रनगर से पंजाब की धार चले गए हैं । प्रस्तु पंजाब पुलिस ने ६ मार्च, १९१४ को पाच हार रुपये के पारितापिन की घोषणा की कि जो व्यक्ति उनका सही पता बालाएगा जिससे वे गिरफ्तार किए जा सकें उस पाच हजार रुपये का पारितापिन दिया जावेगा । उनके साथ रासबिहारी दास का हुलिया भी दिया गया था । जो इस प्रकार है—

रास बिहारी बाग लम्बे और डील डील के भारी हैं, उनकी घाने बड़ी हैं, अभी हात में उठाने अपनी मूछ मुछा सौ ट उतर एन हाथ की तीसरी अंगुली सगा हे और उस पर चाट का चिह्न है जो तीसरे वष की घामु पर दुधटना के कारण चाट लगी थी वह कभी पंजाबी की भाषि और कभी बंगाली की भाषि बश भूषा धारण करत है । वे सम्भवत एक सयागा के धश में फिर रहे हैं । वे बहुधा रालपिडी, मुस्ता, अम्बाला, गिमना, प्रमृत्तर, गुरदासपुर, विराजपुर भेंगम और लाहौर जात रहत ह । वे बंगाली वाली यानिया, बंगाली उपनिवण और हिंदू गियालयो न भी जात हे । उ ह रेलवे स्टेशनों और सरायो में अच्छे तरह और सारधानी के साथ डूडना चाहिए । भारत की सभी स्टेशनर कम्पनिया को भी भारत सरकार के सूचना दे दी थी कि इस हुलिया के घादमी का गिरफ्तार कराने में सरकार की सहायता करें उनके फोटो सभी रेलवे स्टेशना पर लगा दिए गए थे जिससे पुलिस का उवा पकडने में सुविधा हो । इनकी चीनसी रगन पर भी रासबिहारी अप्रैल १९१४ में बनारस सही सनामत पहुच गए और वहा व प्रपन क्रांतिकारी काम को करत रहे । बनारस पडयत्र के आयधीशा को यह आश्चर्यजनक लगा कि रासबिहारी १९१४ के लगभग पूरे वर्ष बनारस में रहे और पुलिस को पता नहीं चलता ।

रासबिहारी किसी भी व्यक्ति के स्वाभाविक तथा प्राकृतिक परिवर्ष की तबल ऐसे अच्छे ढंग से कर सकते थे कि किसी भी व्यक्ति को संदेह नहीं होता था । वे तबली नाम से नवली बश भूषा में कभी भी और कही भी जा सकते थे । इस काम में व इतने अधिक सिद्ध हूत थे कि उन पर कभी भी किसी का संदेह नहीं हुआ । लाहौर पडयत्र में जा क्रांतिकारी काम हुआ उसमें रासबिहारी लम्बे समय तक लाहौर रहे । वे वहा क्रांतिकारी कायकस्ताओ में विभिन्न नामों से जाने जाते थे । उह कोई तो माटे बंगाली नाम से जानता था तो कोई सतींद्र चंद्र चुनार नाथ दत्त कोई उह सतीशचंद्र के नाम से जानता था । उहाने लाहौर के क्रांतिकारियों का अभी अपना सही नाम नहीं बनलाया । रासबिहारी हिंदी, उर्दू पंजाबी और अंग्रेजी भाषाओ को अच्छी तरह जानत थे । जब लाहौर पडयत्र असफल हो गया (१६ फरवरी, १९१५) रासबिहारी कुछ दिना तक लाहौर में ही रहे ।

उस समय लाहौर में प्रांत के सभी सनिक नया प्रशासन के उच्च अधिकारी मौजूद थे लाहौर में रहना बहुत खतरनाक था पर तु रासबिहारी बोस को उनके शत्रु नहीं पकड़ सके उह यह भी पता नहीं लग सका कि रासबिहारी लाहौर में है, लाहौर में

उन्होंने तय किया कि वे काबुल मुस्लिम वेश में जावें इस लिए उन्होंने गोलबिया से कलमा पटना भी सीखना शुरू कर दिया। परन्तु एवाएव उन्हें आने वाले खतरे का भाव हो गया और वे तुरन्त एक पजाबी जो कि भारी साफा सर पर बाध था वे वेप में बनारस चल दिए। दूसरे दिन जब कि वे बनारस चल दिए उनके घर की पुलिस ने घर लिया और तलाशी ली।

बनारस में रासबिहारी ने अपने शत्रुघ्ना से बचाने की एक नई युक्ति निकाली, वे स्त्री का वेष धारण करने लगें। श्री विश्वेश्वर गोस्वामी ने जो रासबिहारा के बनारस में घनिष्ठ और निकट सहयोगी थे उन्होंने डाक्टर उमा मुखर्जी का बतलाया कि दो अवसरों पर एक तो बिभूती भूषण हट्टार और दूसरी बार विश्वेश्वर गोस्वामी के मकान में जब पुलिस न उन मकानों का घर लिया था ता रासबिहारी एक स्त्री का वेष धारण कर सरलता से पुलिस की घराबंदी से निकल गए।

एक बार रासबिहारी चन्दरनगर में था और एक पुलिस गुप्तचर जा उनकी खोज में थे, उनको रासबिहारी ने एक ज्योतिषी ब्राह्मण बनकर ऐसा मूख बनाया कि उन्होंने बड़ी श्रद्धा से उन्हें प्रणाम किया और वे रासबिहारी को गिरफ्तार करने में सफल होंगे यह जाना व लिए अपना हाथ उनके सामने कर लिया और उनका सापटाग प्रणाम किया उस गुप्तचर का यह नहीं मासूम हा सका कि वे ही रासबिहारी बोन हैं।

जब रासबिहारी वास जापान जाने के लिए तयारी कर रहे थे तो उन्होंने एन टगार नाथ रक्खा और उसी प्रकार की वेश भूषा बनाई तथा वे कलकत्ता के पुलिस कमिश्नर के पास परिचय पत्र प्राप्त करने के लिए गए। पहले उनके लिए सखिड क्लास (दूसरे दर्जे) का टिकट खरीदा गया था। परन्तु अन्त समय पर रासबिहारी ने दूसरे दर्जे में जाने का विचार बदल दिया क्योंकि दूसरे दर्जे के यात्रियों की तलाशी और पूछताछ बहुत होती थी और पहले दर्जे का टिकट लिया। हायकाय से जो कोई भारतीय जाना चाहता था। उसे वहाँ के पुलिस सुपरिटेण्डेंट से आना पत्र (परमिट) लेना पड़ता था। वह भी रासबिहारी वास न प्रेम नाथ टगार के नाम से प्राप्त कर लिया।

बहुते का तात्पर्य यह है कि रासबिहारी बोस अनेक बार पुलिस के निकट सम्पर्क में आए यहाँ तक कि पुलिस ने उन्हें घेर तक लिया परन्तु वे पुलिस की पकड़ में नहीं आए। वे इसे अपनी चतुराई मानने का अहकार नहीं करते थे वरन् दबो कृपा मानते थे। वे कहा करते थे कि वे भारत की अश्रेयता की दासता से स्वतन्त्र करने का दबो काय कर रहे हैं अस्तु यह दबो कृपा है कि वे पुलिस के जगल से बच जाते हैं।



कारियों विषयकर श्रीपच द्र घोष के सम्बन्ध में उनसे जानकारी प्राप्त करना चाहत थे जो कि एक राजनीतिक सदेहास्पद व्यक्ति थे तथा रासबिहारी के सम्बन्धी और बनारस नगर के निवासी थे। परन्तु रासबिहारी उनसे अधिक चतुर थे। वे उनके घनिष्ठ परिचय का लाभ अपने ब्राह्मिकारियों के लिए उठना चाहत थे। उन्होंने यह नाटक एसी सफलता से खेला कि देहरादून के बंगाली पुलिस गुप्तचर अधिकारियों ने उनके सम्बन्ध में यह रिपोर्ट दी —

“कि बंगाली सामुदाय में देहरादून में यह सामान्य धारणा है कि रासबिहारी बोस पुलिस के गुप्तचर है जो गुप्तचर अधिकारियों (सो जाई डी अपरार) का समाचार देते हैं।”

इस जीवट तथा जोखिम के खेल में रासबिहारी ने पुलिस और गुप्तचर विभाग को बुरी तरह परास्त कर दिया।

देहली और लाहौर पडयथा के अधिभोग को सुनने वाले “यायाधीशा ने भी रासबिहारी द्वारा पुलिस और गुप्तचर विभाग को मूल बनाए जाने की पुष्टि की है। उन्होंने लिखा “रासबिहारी जसो भ्राम धारण है उससे कही अधिक चतुर थे। तथा उन्होंने पुलिस से अपने सम्पत्क और सम्पत्क का उपयोग पडयथा को सफल बनाने में किया।”

उस समय रासबिहारी ने पुलिस तथा गुप्तचर अधिकारियों पर अपने सम्बन्ध में ऐसी अनुकूल छाप डाल दी थी कि जय बम कांड के उपरांत साठ हाडिंग देहरादून में विश्राम करने तथा स्वास्थ्य सुधार के लिए सक्रिय हाऊस में ठहरे थे ता देहरादून के प्रमुख नागरिक तथा कतिपय पुलिस अधिकारियों को भी बायसराय के शिविर में जाने का प्रवेश पत्र नहीं दिया गया परन्तु रासबिहारी को वहां जाने का पुलिस ने प्रवेश पत्र दिया था।

रासबिहारी की ही प्रेरणा से दूसरा बम कांड १७ मई, १९१३ का लाहौर में हुआ। उस बम कांड का लक्ष्य सिलहट के एस डी प्रो गाडन को मारना था। गाडन में ही १९१२ में स्वामी दयानन्द (भ्राम समाज के मस्यापक गही) के जगतसी आश्रम पर आक्रमण किए जाने की आज्ञा दी थी। उस आक्रमण में महेंद्र नाथ दे हबीब गज नशानल स्त्रूल के श्रुतपूर्व मुख्य अध्यापक मारे गये थे।

सरकार ने इस भय से कि ब्राह्मिकारियों एम डी आ गाडन के घिरत प्रतिशोध की बायवाही करेंगे उसका म्यातानर मुद्दर पूर्व असम में भारत के पश्चिमी प्रांत पजाब में कर दिया था। उस समय वह लाहौर में नियुक्त था। बात यह थी कि गाडन पर २७ मार्च, १९१३ का मौतवी बाजार सिलहट में आक्रमण हुआ चुका था। उस कांड में भी ठीक दहली बम जग ही बम का प्रयोग हुआ था। गाडन पर जो मौतवी बाजार में आक्रमण हुआ था उसमें जोगेंद्र चन्द्रगर्गी की बम विस्फोटक मृत्यु हो गई। उस दिन में अमिता सरदार, सात मारुन दे, सरा प्रसन्न बाल और जागन चन्द्रवर्ती सम्मिलित थे। अमिता सरदार तथा साग प्रसन्न बाल बम विस्फोट से घायल हुए गए थे।

लाहौर में रासबिहारी की प्रेरणा से जा बम कांड हुआ और जिमका लक्ष्य गाडन को मारना था उम पडयत्र की योजना बनाने वाले अवध बिहारी थे और बम फेंकने का काम बस त विश्वास ने रिया था। दोनो ही रासबिहारी के विश्वसनीय काम कर्ता थे। घटना के दो तीन दिन पूव अवधबिहारी को रासबिहारी द्वारा एक पत्र मिला जा कि दीनानाथ का लिखा गया था। उस पत्र में गाडन को मार देने के सम्बन्ध में विस्तृत निर्देश थे। अवध बिहारी ने योजना तैयार कर ली। जब कि लारेंस गाडन में गाडन जो उस समय असिस्टेंट कमिश्नर पजाब था अथ योरोपियनो के साथ वार में बठा था तब अवध बिहारी और बसन्त विश्वास वहा गुप्त रूप से बम लेकर पहुचे। परन्तु अन्तिम क्षण में बसन्त विश्वास का गाडन पर बम फेंकने का साहस नहीं हुआ। उसने गाडन पर बम फेंकने के बजाय उसे लाइब्रेरी रोड पर रख लिया। बलव का अपराधी जो कि अपने घर जा रहा था। उसकी उस बम से मृत्यु हो गई।

देहली बम कांड के सम्बन्ध में पुलिस को कोई भी गवाही नहीं मिल सकी। परन्तु कलकत्ता के राजाबाजार में उस प्रेस की तलाशी लेने पर जहा लिबर्टी छपा था पुलिस को अवध बिहारी के नाम का पता चला। पुलिस ने यह भी पता लगा लिया कि अवध बिहारी मास्टर अमीर चन्द के यहा रहते हैं। पुलिस ने मास्टर अमीरचन्द के मकान की तलाशी ली। उस तलाशी में लिबर्टी क्रांतिकारी परिपत्र एक बम की टोपी और कुछ पत्र मिले। उन पत्रों में कुछ एम एस के हस्ताक्षरयुक्त पत्र थे। पुलिस ने कई दिन खोज करने के उपरान्त यह पता लगा लिया कि एम एस का धास्तविक नाम दीना नाथ है। अस्तु अमीर चन्द, उनके दत्तक पुत्र सुलतान चन्द तथा दीनानाथ गिरफ्तार कर लिए गए। दीनानाथ तथा सुलतान चन्द मुखबिर हो गए। परन्तु वे भी धायमराय पर बम फेंके जाने के सम्बन्ध में कुछ न बतला सके।

सरकार ने ११ व्यक्तियों पर अभियोग चलाया अभियोग अवध बिहारी, अमीर चन्द, भाई बालमुकुन्द, बनराज, हनुवन्त सहाय, मन्नालाल, चरनदास, रघुवर शर्मा खुशी राम और रामलाल उपनाम छोटेलाख के विरुद्ध चला। रास बिहारी फरार हा गए थे। दीनानाथ और सुलतान चन्द सरकारी गवाह बन गये अतएव उन्हें क्षमा प्रदान कर दी गई। पुलिस ने लाला हरदयाल, अजुन लाल सेठी और हरीराम सेठी को भी पडयत्र में सम्मिलित धारित किया था। लाला हरदयाल, उस समय अमेरिका में थे अजुनलाल मंत्री तथा हरीराम सेठी को इस निष्पत्ति गिरफ्तार नहीं किया गया क्योंकि उन दोनों के विरुद्ध यथष्ट माक्षी नहीं थी।

सेना जज की अदालत में सात महीने तक अभियोग चला। ५ अक्टूबर, १९१४ को जज ने अवध बिहारी, मास्टर अमीरचन्द तथा भाई बालमुकुन्द को फासी का दण्ड दिया। बनराज, लाला हनुवन्त सहाय और बसन्त कुमार विश्वास को ब्राजम बालापानी और शेप को मुक्त कर दिया। लाहौर चीफ कोर्ट में अपील में अवध बिहारी, मास्टर अमीर चन्द, भाई बालमुकुन्द और बसन्त विश्वास को फासी चरनदास को ब्राजम बालापानी तथा बनराज और हनुवन्त सहाय को सात-सात साल के कारा

वास का दण्ड दिया।

वायसराय पर बम फेंकने की कोई राशी नहीं मिली परंतु फिर भी चार का फागी का दण्ड दे दिया गया।

अमेरिका में लाला हरदयाल का भाषण

ससार ने यह समाचार अत्यंत आश्चर्य और कीतूहल से सुना कि देहली में वायसराय पर बम फेंका गया। अभी तक ससार में ब्रिटिश प्रचार के फलस्वरूप यह धारणा जन गई थी कि भारतीय ब्रिटिश शासन अत्यंत सतुष्ट और सुखी हैं वे उसे दबो करवाना मानते हैं और ब्रिटिश शासन की छत्र छाया में ही रहना पसंद करते हैं। वायसराय पर बम फेंके जाने से विश्व में यह भ्रम दूर हो गया और ब्रिटिश प्रतिष्ठा का गहरा धक्का लगा।

जब यह खबर अमेरिका पहुंची तो सान फ्रांसिस्को में भारतीय विद्यार्थियों की एक सभा हुई उसमें लाला हरदयाल का अत्यंत भोजस्वी भाषण हुआ। 'भारतीय विद्यार्थियों की इस सभा में चीन के वरिष्ठ क्रांतिकारी नेता सनयात सेन के पुत्र भी सम्मिलित हुए थे। उसी सभा में उन्होंने वे ऐतिहासिक शब्द कहे थे "पगडी सभावि-येगा भीर और बस्ती नहीं यह देहली है।"

लाला हरदयाल ने सान फ्रांसिस्को में ही वह प्रसिद्ध क्रांतिकारी परिपत्र लिखा जो "युगांतर परिपत्र" (युगांतर सरनयूलर) के नाम से प्रसिद्ध है। यह जनवरी १९१३ के प्रथम समाह में पेरिस में टप्रा और वहीं से भारत भेजा गया। भारत सरकार ने उस परिपत्र को भारत में प्रतिषेध कर दिया।

लाला हरदयाल ने उसमें लिखा था २३ नवम्बर का बम नवीन युग का निर्माण करने वाला और उसकी गजना दूर तक सुनाई देने वाली है। भारत में विस्फोट होने वाले बमों में यह सबसे अधिक प्रिय और मधुर है। सब प्रथम खुशीराम बोस ने बम का विस्फोट करके भारत के इतिहास में नए युग का श्रीगणेश किया था। विश्व के स्वाधीनता के इतिहास में यह अत्यंत उपयोगी तथा सफल बम है। देहली ने अपने प्राचीन नाम के यश का पुनुरुद्धार किया है। वह बोली है विश्व ने उसकी धाणी सुनी है और अत्याचारियों ने भी उसकी सुना है। हम जो स्वतंत्रता के सन्निक देश में हैं उन्होंने उसके मदेश को सुना है। आशा और साहस के पोषक ऐ बम तुम्हारा स्वागत है। सुम आत्माघातों को जागृति करने वाले प्रिय बम तुम ठीक समय पर प्राण एक क्षण भी पहले नहीं आए। वास्तव में तुम्हें धाने में देरी हो गई।

"हम उम्र ध्वस्त हो रहे तथा उन अत्याचारियों के धराशायी होने पर क्यों हफ मना रहे हैं। हमारी आत्मा में हफ के अश्रुक्षण का छत्रकते है और हमारे हृत्पा में नवीन उत्तेजना तथा नवीन विचार क्या उभरते हैं। क्योंकि यह बम क्रांतिकारी आन्दोलन की निश्चित रूप से पुनरावृत्ति है। सरकार ने जो पिछले चार वर्षों में दमन नीति अपनाई उसके कारण हमारे सर्वोत्तम साथी हमसे बिछूट गए। परंतु वे हमारे लिए विरासत में बनी पराजित न होने वाली भावना तथा अपने भविष्य में अतीम और अगाध विश्वास छोड़ गए। सरकार ने धराराष्ट्र में दमन का सहारा पकड़ा।

हमारे पत्र तथा पत्रिकाओं को बंद किया गया उन्हें दबाया गया । हमारे वीर कार्य-कर्त्ताओं को कदम डालकर उन्हें जीवित समाधि दे दी गई । मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए सधर करने वाले स्वतन्त्रता के सैनियों का दमन किया गया, उन्हें देश निपाला दे दिया गया, समस्त भारत को जैसे गिस्तक्य घोर चुप कर दिया गया । ऐसी प्रतीत होने लगा जैसे कि श्रातिकारी भारत देश म मर गई हो घत्याचारी प्रसन्न था उगके धनुचर कलकत्ता म अपने पने पर अपने को गुरक्षा समझते थे ।"

हरदयाल ने रासबिहारी बोस की नीचे लिखे शब्दों में प्रशंसा की —

"हम नहीं जानते कि यह मुक्तिदाता कहाँ से आया । वह भारतीयों की सत्त कामनाओं तथा उच्छ्वासों के उत्तर में आशीर्वाद के रूप में आया । उसने हम गहन निद्रा से जगा दिया । उसने हमारी उनीची आत्मा के सामने चर्चार्थीप कर देन वाला तेज प्रकाश फेंका । वह इस समय का प्रिय वीर है । वह धार्म बुद्धि और गौरव का प्रतीक है तथा शक्ति का स्वामी है । दामता तथा लज्जा के हम देश भारत म उसने मानवीयता की प्रतिष्ठा को प्रतिष्ठित कर दिया । निराशा तथा दुःख के मध्य उसने देश म एक विनार से दूसरे विनारे तक आशा और उस्तास बिछेर दिया । जबकि समस्त भारत भय के कारण निश्चिन्त होकर गूया बन गया था यह भीम और धनुन की वाणी में बोला है । जबकि भारतीय स्वतन्त्रता के सैनिक विदेशों में चिन्ता-युक्त भावना से भविष्य को देख रहे थे और एक अच्छे और प्रसन्नता के समय की आशा लगाए थे उसने अपने भय संचार करने वाले अधरा से साहस और आराम का संदेश भेजा है । दास और कायरा के भाग्य उस धकेले ने यह दिखना दिया कि भारत में पुष्प-एव मर नहीं गया है । अपनी वक्षवाणी से भारत की भूमि पर उसने स्वतन्त्रता का विजय घोष दिया है । उसने कहा है "ए भारतवासिया जहा घत्याचारी है वहाँ मैं भी हूँ और बम मेरी अग्नि जिह्वा है जो मेरे शब्दों का उच्चारण करती है ।

"दिसम्बर १९१२ का यह बम भारतीय श्रातिकारी आन्दोलन के इतिहास में एक नया युग आरम्भ करता है । यह हमारा पुनर्जीवन है । इसके आगे श्रातिकारी आन्दोलन अपने अस्त्र-शस्त्रों से नए सिर से सज्जित होकर विजय यात्रा करेगा । निस्त-ध्वना समाप्त हो गई, अब पुन सुकार का स्वागत करो । वे वीर स्त्री-पुरुष जो श्रातिकारी आन्दोलन के कटवाकीण मांग का छोड़कर सामाजिक सुधार तथा धर्मानिक आन्दोलन के सुरक्षित क्षेत्र की ओर चले गए थे वे अब वापस श्रातिकारी आन्दोलन में वापस लौट आवेगे और दुमने उत्साह से युद्ध करेंगे । सम्पूर्ण भारत आश्रय चकित है, हर्षोन्नत है, हृषिकोरो होकर वीरता तथा विजय के लिये त्याग और बलिदान करने के लिए तयार है । बम दग्गार की उपयुक्त और सही समाप्ति के रूप में आया है । अच्छा ही कि दरवार तथा बम साथ-साथ हुआ करें । यह बम तभी ब २ हो जब धन धरा पर दरवार न लगा करें ।

आगे हरदयाल ने प्रदन किया "बम की नैतिक शक्ति की कीत व्याख्या कर सकता है । वह सर्वेद्रित नतिक अविस्कोट (डायनेमाइट) है । जबकि अपरिचित और आत्माक भोग अपनी शक्ति के अहकार में अपने अत्याचारा के शिकार निस्तहायो के सामने अपने बमब और सत्ता का प्रदशन करते हैं जबकि धनी और वैभवशाली वीर

घसडी ऊँचे सिंहासना पर बठकर घणा दाता वा उाके सामन गिर कर उनकी बम्ययना घोर पूजा करने वा महत हैं, जबकि पृथ्वी पर दुष्ट लोग आनाश तय ऊँचे षड् जात हैं और ऐमा प्रतीन होता है कि कोई भी उनकी शक्ति वा मुचाबला उही कर सकता, तब उस घणकार के समय मानयता की प्रतिष्ठा के विण बम आता है। वह घरयाचारी वा मिट्टी में मिला देता है। यह उन दागा से बढना है कि वा भगवान की तरह सिंहासना-रुढ है वह तुम्हारी तरह ही माधारण मनुष्य है। तब उस उज्जा के क्षण में वह बम "सभी मानय बराबर है, यह श्वासत सत्य वा उपदेश देता है और उन उक्व लाग घोर वायसराया को उनके महला घोर हीदा से अस्पताय वा क्वर में भेज देता है।" तब उस घातत के क्षण में जबकि मानवीय स्वभाव स्वय घणा से सज्जित होता है तब बम सत्ता तथा शान शोभत की गिरथरता की घोषणा करता है और हम हमारी नीचता से उबार लेता है। अब हमसे कोई बोरता वा वाय करता है तो हम प्रपन वा कितना महान अनुभव करते हैं। हम उमरी नतिक शक्ति में भागीदार बनत हैं। हम मानवीय समानता तथा प्रतिष्ठा के आग्रह में उरलसित होत हैं।

"वह लक्ष्य पर लगता है वा चुव जाता है यह गीणा है। बम ऐसे सभी प्रव-सरा पर एक शुभ आशीर्वाद के समान होना है। जब घरयाचार अपनी घोषणा करता है तो स्वतंत्रता को भी घसा ही करना चाहिए। सम्राटा के वा शाही जुलुमा पर कोई भी बम अनुपयुक्त नहीं होता वह उनके जादू को नष्ट कर देता है वह शक्ति और सत्ता के जादू को समाप्त करने वाला है वा जनता को पगु और लाचार बना दता है। वह करोबो की आवाज है। जिसे सब साग समझ सकते हैं वह उस भापा में बोनता है वह क्रांति का प्रचारक है।

घन, सुविधा और सत्ता के काले बादल सम्पूर्ण पृथ्वी पर जब छा जाते हैं और मूम के प्रकाश को पृथ्वी पर नही जाने देते तब बम बादनो में विद्युति के समान विकल्प विमूढ और भौषवकी मानवता को स्वतंत्रता के तक्ष्य को प्राप्त करने का माग निर्देश करता है।

जब हमे ऐमा महान आशीर्वाद मिले तो हमे उन सभी वीर पुत्पा और वीरा गनाओ का स्मरण करना चाहिए जो उसमे पहले जा चुके हैं। हमे उन वीरा का नाम प्रेम और श्रद्धा से लेना चाहिए जो स्वतंत्रता के युद्ध के इतिहास में प्रकाश पुज की भाति है और अपने उन प्रिय साथियो को याद करना चाहिए कि जो उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जीवित रहे और मरे जो हमारा लक्ष्य है।

भारत में जाति के माधिया उठी और मत्रिय हो। नए सिरे से देश में तथा विदेश में अपने प्रचार को समर्थित, करो सवा और त्याग बलिदान की नए सिरे से अपय तो। देखो बम बाया है। हिन्दुस्ता के तक्षण स्त्री-पुत्पा को उसका उत्तर देना है।

बन्देमातरम्

लाड हाटिंग पर बम फेंके जाने वा एक बडा राजनीतिक परिणाम यह हुआ कि पृथ्वी के प्रथम देश वा अभी तक इग्लैंड के इस प्रचार से प्रभावित थे कि भारतवासी भारत पर ब्रिटेन के शासन से बहुत अधिक मतुष्ट हैं वे ब्रिटिश सरकार को मां माप सर

कार मानत है और उसके शासन को देवी वरदान मान है यह प्रभाव समाप्त हो गया और वे समझ गए कि भारतीय ब्रिटिश शासन का उखाड़ कर फेंक देना चाहते हैं। दूसरा बड़ा लाभ यह हुआ कि भारतीयों में जो देश की स्वतंत्रता के सम्बन्ध में गहरी निराशा और विवशता की भावना उत्पन्न हो गई थी वह दूर हो गई। भारतीय यह सोचकर प्रसन्न थे कि देश राजनीतिक दृष्टि से मृतप्राय नहीं हो गया है। उसमें जीवन है और वह ब्रिटिश शासन को चुनौती दे सकता है। देश के लिए यह मनोवैज्ञानिक लाभ बम की बहुत बड़ी देन थी। बम बाँट के फलस्वरूप सर्वे साधारण का मनोबल बहुत बढ़ गया और देश के राजनीतिक जीवन में गतिशीलता उत्पन्न हो गई।

रासबिहारी बोस ने अपने क्रांतिकारी कार्यक्रम तथा उत्तुंग से राजनीतिक दृष्टि से मृत प्राय देश में आशा, उत्साह, नय चेतना और स्वतंत्रता की अमिट चाह उत्पन्न कर दी। यह उस महान क्रांतिकारी देशभक्त के ही प्रयत्नों का फल था कि तब से देश निरंतर स्वतंत्रता के लिए स्वतंत्र होने तक लड़ते रहता रहा। सिद्ध है कि देश अपने उस महान क्रांतिकारी नेता का भूल गया। स्वतंत्र भारत में निराली ने भारत में स्वतंत्रता की अमिट भावना का जागृति करन वाला क्रांति के अप्रदूत रासबिहारी बोस की स्मृति को जीवित रखने की आवश्यकता नहीं समझी। हाना तो यह चाहिए था कि देहली में उस महान क्रांतिकारी का भव्य स्मारक बनाया जाता परन्तु वहाँ उतना कोई चिह्न भी नहीं है। जो आज हम देश को स्वतंत्र बनाने के लिए जूझता रहा उसको इस प्रकार भुला देना हमारी दृष्टान्तता की पराकाष्ठा ही कही जावेगी।



अध्याय सातवा

रासबिहारी का जापान जाना

वायसराय लाड हाडिंग पर देहली में बम फेंके जाने के बाद जब रासबिहारी बास का पकड़ने के लिए जारट निकल गया और ब्रिटिश शासन उनको गिरफ्तार करने के लिए आवाज पाताल एक कर रहा था। उनका हुलिया और चित्र सब सावजनिक स्थानों पर लगा दिया गया। उनको गिरफ्तार कराने के लिए पारितोषिक की बहुत बड़ी धनराशि घोषित कर दी गई थी तब उनके मित्रा सहयोगियों और अनुयायियों को उनके पकड़े जाने की आशंका हो गई थी। उन्होंने बहुत चाहा कि रासबिहारी भारत छोड़कर विदेश चले जायें उनके घनिष्ठ मित्र शिरीशचंद्र घोष तथा च दरनगर के अन्य मित्रों ने उन पर बहुत दबाव डाला कि गिरफ्तारी से बचने के लिए वे भारत का छोड़ विदेश चल जायें। यही तब कि उनके लिए टिकट भी खरीद लिया गया। परंतु उस महान् क्रांतिकारी का अपनी सुरक्षा का ध्यान नहीं था वह मातृभूमि को ब्रिटिश दासता से मुक्त करना चाहता था उसने अपने मित्रों से कहा कि उसका काम भारतवर्ष में ही, उस भारत में ही रहना है अस्तु उसने गिरफ्तारी से बचने के लिए विदेश जाना अस्वीकार कर दिया और टिकट का फाड़कर फेंक दिया।

परंतु मशरूफ विप्लव के असफल हो जाने के बाद उनके विचारों में थोड़ा परिश्रम हुआ जसा कि उन्होंने अपनी 'आत्म कथा' में स्पष्ट लिखा है। 'भारत की क्रांतिकारी पार्टियां के सम्बन्ध में महान् सत्य यह है कि उनको जगत् शक्ति अथवा अनुशासित संगठन की कमी नहीं है परंतु उनके पास शस्त्रा गोली बारूद की कमी है। जिसके कारण उन्हें ब्रिटिश सरकार की भारतीय सेना से सम्पर्क जसा अत्यन्त जालिम भरा काम करना पड़ता है। यदि भारतीय क्रांतिकारियों में पास यथेष्ट अस्त्र-शस्त्र होते तो राशरूफ विद्रोह केवल असन्धिक नागरिका द्वारा किया जा सकता था।' अतएव उन्होंने यह निश्चय किया कि मशरूफ विप्लव के दूसरे प्रयत्न के पहलू अस्त्र शस्त्र की दृष्टि से देश को स्वायत्त बसाना होगा।

महान् क्रांतिकारी रासबिहारी बोस

दूसरी कठिनाई जो रासबिहारी बोस क्रांतिकारी पार्टियों के सामने भारत में थी वह घनाभाव की थी। क्रांतिकारी दल सावजनिक रूप से चंद्रा तो नहीं कर सकत थ न पू जीपति या घनाढ्य उह धार्मिक सहायता ही देते अस्तु उह-डकतिया डालनी पडती थी। वे अस्त्र शस्त्र तथा घन के लिए डकंतिया डालते थे। उन डकतियों में क्रांतिकारिया की शक्ति समय और संगठन की शक्ति लगानी पडती थी अस्तु राम बिहारी बोस का मानस अब यह बन गया कि विदेशो से अस्त्र-शस्त्र तथा घन लाया जाय और दूसरी वार जब भारत मे सशस्त्र विप्लव हो तो इन दाना साधनो का अभाव न रहे अस्तु उहान विदेश जाना निश्चय किया।

उसी समय २३ मार्च, १९१५ को मेरठ में पिगले और लमभग उसी समय गिरीशचंद्र घोष की हावडा में गिरफ्तारी हुई। जिसने रासबिहारी बोस का बहुत प्रभावित किया वे दोनों उतने अत्यंत निकट के और विश्वस्त क्रांतिकारी थे। वे चंदरनगर नलनी मोहन गुलजर्जी के साथ चल दिए। वे उस समय बनारस में त्रिपुरा भैरवी ब्रह्मपुरी में रहते थे। मोगरा स्टेशन पर उह ज्याति सिंहा (उपनाम पशुपति) लेने आए और चंदरनगर ले गए। चंदरनगर में कुछ दिन व अत्यंत मापनीय रहे और मोतीलाल राय से विचार-विमर्श करके निश्चय कर लिया कि वे जापान का जावें। साथ ही यह भी निश्चय किया कि वे पी एन टगोर के नाम से अपन का गुरुदेव रवीद्रनाथ टगोर का सम्बन्धी धारित करें। गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टगोर निकट भविष्य में जापान जान वाले थे। जिससे एसा प्रतीत हो कि वे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टगोर की जापान यात्रा का प्रवर्ध करने पहले से जापान जा रह हैं। उस समय रासबिहारी बास एक 'मारछज ब्राह्मण' के रूप में गोपनीय ढंग से रहे। वे बहुत लम्बा जनेऊ धारण करते थे और मस्तक पर लम्बा टीका लगाते थे। जब यह निश्चय हो गया कि वे पी एन टगोर के नाम से जापान जावेंगे तो वे चंदरनगर से नवद्वीप चले आए। उनके साथ एक मराठा युवक था। नव द्वीप से उहोने अनुकूल चक्रवर्ती उपनाम ठाकुर की ढाका रूपया सागे के लिए भेजा। अनुकूल चक्रवर्ती जब ढाका से रूपया लेकर लौट आए उसके कुछ दिनों बाद ही गिरजा बाबू नवद्वीप रासबिहारी के पास आ गए। शचीन्द्र सायाल और पशुपति पहले से ही वहां मौजूद थे। उन सभी से विचार-विमर्श करने के बाद रासबिहारी बास ने बलकत्ता चंदरनगर होकर जाना तय किया। जबकि 'समुझी मारु' जहाज बलकत्ता व दरगाह से चलाने वाला था उसके कुछ दिनों पहले रासबिहारी बलकत्ता आए और उनके लिए जापान का टिकट खरीद लिया गया। वे बलकत्ता में अपन कतिपय प्रमुख अनुयायियों से मिल जिनमें शचीन्द्रनाथ सायाल, दामोदर स्वरूप सेठ विभूति, पशुपति आदि मुख्य थे। वे अपने अनुयायियों से घरमत्ला ढाकखाने के ऊपर की मजिल के एक कमरे में मिल। उहोने अपने अनुयायियों से कहा कि उनकी अनुपस्थित में वे क्रांतिकारी संगठन के काय को उल्हाह और तेजी के साथ शचीन्द्रनाथ सायाल और गिरजा बाबू के परामर्श से करते रहे। १२ मई, १९१५ को उस महान क्रांतिकारी ने देश से प्रस्थान किया। अपनी मातृभूमि के पुन वे दशन नहीं कर सके। उनको जापान जाने की आगा लेने के लिए पुत्रिम भूमिश्चर तथा अथ उच्च राजकीय अधिकारियों से भारत में मिलना पड़ा परन्तु अपनी चतुराई के कारण वे यह पता

नहीं लगा सके कि पी एन टगार और कोई नहीं महान् क्रांतिकारी रासबिहारी बास हैं। जिनका गिरफ्तार करने के लिए भारत सरकार जाकाश पाताल एक कर रही है। वे अपना जापान जाने का पासपोर्ट लेने स्वयं पुलिस वायानय गण पर कोई भी उन्हें पहचान न सबा कि वे ही रासबिहारी बोस हैं। १२ मई, १९१५ को वे 'एम एस सानुकी मार जहाज' से जापान को चल दिए। उन्होंने सबका बतलाया कि वे गुरु-देव रवी द्रनाथ टैगोर के सेक्रेटरी हैं और उन्हें गुरदेव की जापान यात्रा की व्यवस्था तथा जापान में उनकी सुविधा की व्यवस्था करनी है। उनके मित्रों ने, जहाज पर उनको हादिक विदाई दी और जापान सकुशल पहुंचने की शुभकामना की।

रासबिहारी ने अपने निवृत्त मित्रों से निम्नलिखित अंतिम शब्द कह। "समय आ गया है कि हम भारत के प्रत्येक युवक और युवती को सशस्त्र कर दें और तब देखें कि अंग्रेज भारत पर किस प्रकार शासन करते हैं। मैं अपनी मातृभूमि को त्याग कर जाने से बहुत दुःखी हूँ पर मैं तुम लोगों से यह चाहुंगा कि तुम क्रांतिकारी दल का पुन-संगठन करके शीघ्र मरे पास आना, मैं जापान भारत के युवाजन के लिए अथवा अस्त्र-शास्त्र की व्यवस्था करने जा रहा हूँ।"

चलते समय रासबिहारी न शचीन का यह कह कर दा रिवालयर दिए कि "यह आवश्यकता पढ़ने पर काम आयेगे। शचीन और गिरजा बाबू के कपोला पर अपने नेता और मित्र के विदा होते समय अशुभधारा बह रही थी परंतु रासबिहारी बोस तनिक भी निराश और विचलित नहीं थे।

रासबिहारी बोस के पास दूसरे दर्जे का टिकट था परंतु अंतिम क्षण में उ होने उसे प्रथम श्रेणी में परिवर्तित करवा लिया। इस प्रकार जब जहाज बलकत्ता से चला ता उन्होंने पुलिस को धोखा दे दिया क्योंकि प्रथम श्रेणी के यात्रियों की निश्च स्थानों पर तलाशी नहीं ली जाती जबकि द्वितीय श्रेणी के यात्रियों की ली जाती थी। उनको आने वाले जाखिम का पूर्वाभास हा जाता था और यही कारण है कि वे जीवन में आने वाले खतरा से बचत रहे। इसके अतिरिक्त उ ह भगवान में हट और अट्ट विषवास था। वे यह विश्वास करते थे कि मैं अपने मातृभूमि को दासता से मुक्त करने के लिए निस्वाय नाम कर रहा हूँ मेरी सुरक्षा स्वयं भगवान देखत है।

रासबिहारी २२ मई १९१५ को सिगापुर पहुंच गए और वहां फरवरी मास में भारतीय सैनिकों ने जा बुडी खा के नेतृत्व में विद्रोह किया था उसका विस्तृत जान बारी प्राप्त की। २६ मई, १९१५ को वे हांगकांग पहुंचे। "सीस्टम ऐक्ट" के अंतर्गत ऐसा नियम था कि कोई भी भारतीय यात्री जा हांगकांग से आग जाना चाहता है उसे हांगकांग पुलिस से एक नया पाम लेना पड़ता था। क्योंकि वह रविवार का दिन था इस कारण पुलिस उच्च अधिकारी का कार्यालय बंद था। केवल एक अंग्रेज अधिकारी और उसका एक भारतीय सहायक साधारण नाय के लिए उपस्थित थे। रासबिहारी हांगकांग में रुकना नहीं चाहते थे उन्होंने भारतीय सहायक से कहा कि उनके पाम द्रव्य को इसनी बमी हूँ कि वे वहा रुक नही सकते। उन्होंने भारतीय सहायक का हम दण से अपनी आर्थायक कठिनाई को बान बही कि वह अंग्रेज अधिकारी व पाम गया और उससे उनके लिए तथा विशेष यात्रा का पास बनवा लाया।

जब रासबिहारी शघाई पहुँचे ताँ उँ होने भारतीय क्रांतिकारी दल को अस्त्र-शस्त्र भेजने का प्रयत्न किया परन्तु क्योंकि चीनी स्वयं अपने स्वतंत्रता युद्ध में व्यस्त थे व अपने मुक्ति युद्ध को लड़ रहे थे अस्तु वे बड़ी मात्रा में भारत के लिए अस्त्र-शस्त्र नहीं भेज सके थे । चीन में भी अंग्रेजों के गुप्तचर सक्रिय थे उँ होने रासबिहारी बोस को कठिनाइयाँ में पसा दिया जिनसे रासबिहारी एक चीनी देशभक्त के प्रयत्न से ही मुक्त हो सके ।

जर्मनी ने भारतीय क्रांतिकारियों को बहुत बड़ी सहायता में (हजारों की सहायता में) अस्त्र-शस्त्र भेजने का पूरा प्रयत्न किया था । उँ होने "मवरिक तथा हैनरी" दो जहाजों में भारतीय क्रांतिकारियों को अस्त्र-शस्त्र भेजे । हैनरी जहाज को शघाई में अंग्रेज और फ्रेंच अधिकारियों ने पकड़ लिया और 'मवरिक' जहाज भी भारत में अस्त्र शस्त्र न पहुँचा सका । कारण यह था कि अंग्रेजों की अरब सागर तथा इंडियन ओशन में इतनी बड़ी चीनमी थी कि उनसे बचकर किसी जहाज का निकलना कठिन था । अतएव जर्मन दूतावास यह मानते थे कि भारत को बड़ी मात्रा में अस्त्र-शस्त्र पहुँचाना खतरे का काम है यह भी कारण था कि रासबिहारी शघाई से भारत अस्त्र शस्त्र नहीं भेज सके ।

इन सब बाधाओं को पार करते हुए रासबिहारी ५ जून, १९१५ को जापान सकुशल पहुँच गए ।

रासबिहारी जापान गये यह प्रश्न पाठकों के मन में उठ सकता है । जापान उस समय एशिया वासियों के लिए एक महान् आकर्षण का देश था । रासबिहारी के लिए वह शौर्यवीरता और राष्ट्रियता की भावना से ओत-प्रोत देश था । जापानियों ने जार के रुम को युद्ध में पराजित किया था । अभी तक किसी एशियाई देश ने योरोपीय देशों को पराजित नहीं किया था । जापानियों का देश प्रेम और देश के लिए अपना समस्त बलिदान करने की तैयारी जगत प्रसिद्ध थी । उस समय सभी मातृभूमि के पुजारी जापान को अपना आदर्श मानते थे ।

रासबिहारी ने अपनी मातृभूमि की सेवा करने का व्रत लिया था । वे अपनी मातृभूमि को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराना चाहते थे । उनके हृदय में उत्कट देश-प्रेम, मातृभूमि के लिए आत्म बलिदान की भावना हिलोरे मार रही थी इस कारण उनके लिए जापान जाना स्वाभाविक था । उनकी दृष्टि में जापान ही एक ऐसा देश था जो योरोपीय साम्राज्यवाद से लोहा ले सकता था । जापानियों में वे गुण थे जो कि एक साम्राज्यवादी देश के दासता के जुँ को उतार कर फेंक देने में पराधीन राष्ट्र को सक्षम बना सकते थे । यही कारण था कि उस महान् क्रांतिकारी ने जापान जाना निश्चय किया ।

अध्याय आठवां

राज बिहारि के जापान से प्रारम्भिक वर्ष

राजबिहारी (पी एन टगोर के बेष में) ५ जून, १९१५ को 'कोबे' पहुँचे वे वहाँ से 'स्योटो' होते हुए 'टोकियो' पहुँचे। व टोकियो में 'शिम्याशी' के समीप एक सस्ते होटल में ठहर गए। परंतु उनका मुख्य ध्येय अपने साथी क्रांतिकारियों को अस्त्र-शस्त्र भेजना था इस कारण वे जर्मन काऊंसलेट (जर्मन वाणिज्य दूतावास) से मिलने शर्माई गए। जर्मन सरकार ने पहले ही यह तय कर लिया था कि संपूर्ण राज्य अमेरिका के वाशिंगटन के राजदूत के अधीन शर्माई का जर्मन काऊंसलेट भारतीय क्रांतिकारियों को अस्त्र-शस्त्र पहुंचायेगा।

बर्लिन कमेटी का पडयंत्र

जर्मन काऊंसलेट ने बंगाल के समुद्र तट पर 'हटिया' द्वीप में जो बिदागाव तट पर एक छोटा-सा द्वीप था 'रायमगल' जो सुन्दर बन में है और जो बंगाल के चौबीस परगने में है तथा 'बालासोर' जो उड़ीसा में है इन तीन स्थानों से भारतीय क्रांतिकारियों को अस्त्र-शस्त्र लेना निश्चय किया था। जो भी अस्त्र शस्त्र देने से वे 'जुगांतर क्रांतिकारी संगठन' को देते थे। अतः वे 'बालासोर' चुना गया। बालासोर में जतीन मुखर्जी स्वयं अस्त्र-शस्त्रों का लेने के लिए उन क्षेत्र में गए। उन्होंने मयूरभोज राज्य में शरण ली। यह निश्चय किया गया कि जब अस्त्र-शस्त्र पहुंच जावेंगे तो बालासोर के यूनीवर्सल एम्पोरियम पर गुप्त समाचार भेज दिया जावेगा कि अस्त्र-शस्त्र पहुंच गए हैं। क्योंकि जर्मन क्रांतिकारियों की बर्लिन कमेटी से यह निश्चयवाचक बात हुई थी कि यह आवश्यक समझा गया कि बर्लिन कमेटी तथा जुगांतर क्रांतिकारी तंत्र के सम्बन्ध दोनों बताने जायें जहाँ अस्त्र-शस्त्र दिए जावें। जतीन मुखर्जी वहाँ पहुँचे ही पहुंच गए। तारखतान्त प्राप्त, हेरम्बालाल गुप्त तथा बर्लिन कमेटी के अध्यक्ष सयुक्त राज्य अमेरिका से बहा गए। हेरम्बालाल गुप्त मांग जापान भी ठहर और राजबिहारी बोध संभिन।

यह तय किया गया कि 'मैवरिक' तथा 'हैनरी' जहाज अस्तु ले जावेंगे । 'मैवरिक' जहाज एक तेल वाहक (घायल टैंकर) था वह स्टैंडर्ड आयल कम्पनी का जहाज था उसको एक जर्मन फर्म 'एफ जामन कम्पनी' ने खरीद लिया । उस जहाज का उपयोग अस्त्र-शस्त्र भारत पहुंचाने में किया जाना था । जहाज पर अधिकारियों और नाविकों के अतिरिक्त जो जर्मन थे, पांच व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने को ईरानी घोषित किया था परंतु वे वास्तव में भारतीय क्रांतिकारी थे । जहाज फैंलीफोर्निया से जावा को चला । हजारों की संख्या में राइफिलें रिक्त घायल टैंक में भर दी गईं और फिर उसमें तेल भर दिया गया । यह भी तय किया गया कि 'मैवरिक' जहाज समुद्र में जर्मन स्कूजर 'ऐनी लारसन' से सम्पर्क करेगा और 'ऐनी लारसन' बहुत बड़ी राशि में अस्त्र मैवरिक को देगा । परंतु मित्र राष्ट्रों की प्रशांत महासागर में इतनी बड़ी चौकसी थी कि ऐनी लारसन मैवरिक से सम्पर्क नहीं कर पाया और जून के अंत में समुक्त राज्य अमेरिका लौट आया । ऐनी लारसन पर जो अस्त्र-शस्त्र थे वे समुक्त राज्य सरकार ने जब्त कर लिए । इससे पूर्व मैवरिक प्रशांत महासागर में एक छोटे से द्वीप में ऐनी लारसन की प्रतीक्षा में एक महीने से अधिक समय तक ठहरा रहा परंतु ऐनी लारसन के आने पर वह बटा लिया चला गया । तब तब ब्रिटेन को यह जानकारी मिल गई कि जर्मनी भारत के क्रांतिकारियों को अस्त्र-शस्त्र भेज रहा है । बात यह हुई कि जर्मनी-स्तावकिया के क्रांतिकारियों ने जो समुक्त राज्य अमेरिका में सक्रिय थे उन्होंने यह सूचना अमेरिका को फ्रेंच दूतावास को दे दी थी कि जर्मनी भारत को अस्त्र भेज रहा है । अगस्त १९१५ में भारत सरकार को इटिया, रायभगल और बालासोर में हैनरी द्वारा अस्त्र शस्त्र उतारने के सम्बन्ध में सावधान कर दिया गया । मैवरिक जहाज को जावा में जब सरकार ने पकड़ लिया पर बटाविया के जर्मन राजदूत ने जहाज को छुड़ा लिया और अमेरिका भेज दिया । दूसरा जहाज 'हैनरी' जिस पर अस्त्र-शस्त्र तथा गोली बारूद बम्बेष्ट मात्रा में था उसको मनील में गधाई जाने की स्वीकृत मिल गई । उन दिनों गधाई पर ब्रिटेन और फ्रांस का पूरा नियंत्रण था अस्तु उनके लिए उसको पकड़ लेना सरल था । हैनरी पर जो भी अस्त्र-शस्त्र तथा गोली बारूद थी वह उतार ली गई और खाली जहाज को आगे सलीबीज की ओर जाने दिया गया इसी प्रकार भारत जर्मन पडयंत्र प्रसफन हो गया और इस दुघटना से जर्मन के गधाई के कारण प्य दूतावास तथा वाशिगटन के जर्मन राजदूत का यह विश्वास बन गया कि बड़ी मात्रा में अस्त्र-शस्त्र भारत भेज सकता अत्यंत जाखिम का काम है ।

परंतु जो क्रांतिकारी विदेशों में थे वे मैवरिक और हैनरी जहाजों की योजना के असफल होने से हताश और निराश नहीं हुए । उस समय बनारस के श्री शिव प्रसाद गुप्त तथा कलकत्ता के प्रोबिनोय सरकार कलकत्ता के सुदूर पूर्व में थे वहाँ भी पडयंत्र में सहायक थे । गधाई के जर्मन कौंसिल ने दो जहाजों के द्वारा अस्त्र-शस्त्र बंगाल की खाड़ी में ले जाने की योजना बनाई । एक जहाज को उतारने रायभगल और दूसरे को बालासोर भेजना तय किया । एक जहाज पर बीस हजार राइफिलें, अस्सी लाख गोली, दस हजार पिस्तौल और कुछ बम भेजने की योजना थी । इसके अतिरिक्त दो लाख रुपये भी भेजने की योजना थी । दूसरे जहाज पर दस हजार राइफिलें, दस लाख गोलियां

तथा अन्य आवश्यक सामग्री भेजी जाने वाली थी और एक तीसरी जहाज घडमन भजा जाने वाला था परंतु समस्त योजना असफल हो गई क्योंकि एक चीनी जिस बटाविया जर्मन राजदूतावास में राजदूत के पास भेजा गया था उसने उस पत्र के पूरे पृष्ठों को दे दी और एक बंगाली सुकमार चटर्जी ने श्याम में इस पत्र पर वा मडाफोड कर दिया। इन दुघटनाओं के कारण जर्मन राजदूत बड़ी मात्रा में अस्त्र-शस्त्र भारत भेज सकने के सम्बन्ध में निराश हो गए थे पर थोड़ी मात्रा में भेजा के प्रयत्न वे वा को भी करते रह।

रासबिहारी का प्रयत्न

इस कारण जब वे शर्पाई जाकर जर्मन कौंसल से मिल ता उसने उनका सहायता करना अस्वीकार कर दिया। वे असफल और निराश होकर जापान का लौट आए। जुलाई को सायकाल को 'कोबे के एक सि धी व्यापारी ने युवक पी एन टगोर को जि ने अपने को मेडीकल ना छात्र बनलाया था और कहा था कि वे समुक्त राज्य अमेरिका मेडीकल कालेज में पढन जा रहे हैं और 'जयमल' जो अपने को रेशम का व्यापारी बतलाया था, भोज के लिए बुलाया। उस व्यापारी ने अत्र भारतीयों का भी भोज के लिए बुलाया। उस व्यापारी ने अत्र भारतीयों को भी भोज के लिए आमन्त्रित किया था, जब भोज समाप्त हो गया तो अतिथि ने आपस में बात करन के लिए कई समूह बना लिए वे कई समूहों में बंट गए। पी एन टगोर जयमल के समूह में सम्मिलित हो गए। जयमल लम्बे समय से भारत के बाहर था इस कारण वह भारत के ताजे समाचार जानन के लिए उत्सुक था। वह यह देखकर आश्चर्य कर रहा था कि प्रीम्सटु में हाथा में दस्ताने और परो में भोजे वह पहने था।

पी एन टगोर खुन कर बात कर रहे थे इस कारण जयमल उनकी ओर आकर्षित हुआ। जब वे चलने लगे तो टगोर ने जयमल से पूछा कि वह कौन है। जयमल ने अपना नाम बतलाया और कहा कि मैं रेशम का व्यापारी हू। इस पर पी एन टगोर ने कहा कि हमारे सब व्यापारी आप जैसे जानकार और देश भक्त ही हैं। भारत अधिक दिना ब्रिटेन का दास नहीं रहता। इतना कहकर टगोर जयमल को पूरते तिन सायकाल को उसके साथ भोजन के लिए आमन्त्रित किया।

भोजन के पूर्व जब टगोर जयमल के लिए प्याले में चाय उढेल रहे थे तब उन्होंने बायें हाथ के पीछे उनके हाथ पर घाव का चिह्न देखा। जयमल ने उस घोट के निशान से यह कल्पना तो कर ली कि उस चिह्न को छिपाने के लिए उन्होंने दस्ताने पहने थे। परंतु उनको छिपाने की क्या आवश्यकता थी। सहसा उन्हें ध्यान आ गया कि जब १९१२ में वे हांगकांग में थे तब ताहीर से निवृत्त गले उठू न दिन समाचार पत्र 'जमीनार' में यह समाचार पढा था कि पुलिस को यह सन्देश था कि रासबिहारी बास नामक एक बंगाली युवक जिसके हाथ और पर पर घाव के चिह्न हैं उसने वायसरॉय पर बम फेंका था। जयमल ने कल्पना कर ली कि उनका अनिध्य करन वाले स्वयं रासबिहारी बास हैं फिर भी उन्होंने रासबिहारी बोस से अपनी मायता को व्यक्त नहीं किया। परंतु जब वे दोनों खाने की भेज पर गये। जयमल ने देखा कि उनके अनिध्य करने वाले के बायें पर भी घाव का चिह्न है। अब जयमल का तर्क भी

सदह नहीं रहा कि ये ही रासबिहारी वास है।

भोजन कर चुकने के उपरांत जयमल ने पूछा कि क्या कभी घ्राप पजाब गए हैं और घ्राप बरतारसिंह सिंगले और रासबिहारी बोस को जानते हैं टंगोर यह सुनकर बहुत चोचन हो गए। उन्होंने जयमल से कहा कि भारतीयों में एकना नहीं है, देश में विश्वास घात व्याप्त है राष्ट्रीय भावना कुछ ही लोगों में मिलती है फिर भी क्रांतिकारी आंदोलन फल रहा है।

एक टंगोर ने जयमल से कहा "मैं जानता हू कि तुम रेशम के व्यापारी नहीं हो। परंतु तुम कौन हो यह मैं जानना चाहता हू। जयमल ने उत्तर दिया "तुम भी मडासीन" के घ्राप नहीं हो। यदि तुम अपना वास्तविक नाम बतला दोगे तो मैं भी अपना नाम बतला दूंगा। टंगोर ने कहा कि तुम पहले अपना नाम बतलाओ। जयमल ने अपना वास्तविक नाम बतला दिया। इस पर टंगोर ने कहा कि क्या तुम वही भगवान सिंह हो जिन्हें कनाडा से निष्वासित कर दिया गया था। भगवान सिंह की स्वीकाराति के साथ ही दोना ने एक दूसरे को अपनी बाट में बस लिया। रासबिहारी ने भगवान सिंह को अपनी बाहों में लिए ही सिर से पर तब देखा और कहा 'मैं तो अपने मन में ६ फीट लम्बे और लम्बे बाल तथा मूछों के पजाबी की तुम्हारी लम्बी बना रखी थी।

यह सुनकर दोना खूब हसे। उसने उपरान्त रासबिहारी ने भी यह स्वीकार कर लिया कि ये ही रासबिहारी बोस हैं। दोना ने फिर बैठकर क्रांतिकारी आंदोलन की चर्चा की और योजना बनाई। उन्होंने एक दूसरे को पत्र लिखा निश्चय किया यद्यपि जापान में भी ब्रिटिश गुप्तचर भगवान सिंह पर कड़ी नजर रखते थे। यह शत हुए भी रासबिहारी ने भगवान सिंह को पत्र लिखना तय किया।

एक दिन रासबिहारी अपने मकान में अपना अज्ञात उत्तर रहे थे उन्होंने देखा कि दो जापानी उनको छिपनी में से घ्यात से देख रहे थे उन्होंने उनके बायें हाथ पर धाव का निशान घ्यात से देखा। दूसरे दिन प्रातः काल जब रासबिहारी अपने मकान से बाहर निकलता उन दो जापानियों ने उनका पीछा किया उन्होंने रासबिहारी बोस का उत्तर दिया कि हम विदेशियों की खोज कर रहे हैं। बयह जानने के लिए कि पुलिस कितनी जानती है वे पुलिस के उच्च अधिकारियों से मिले परंतु वहा भी उन्हें यही उत्तर मिला कि विदेशियों की निगरानी की जा रही है। रासबिहारी को सदेह हो गया कि ब्रिटिश सरकार उन्हें जान गई है और वे कभी भी उनके दयाव से पकड़े जा सकते हैं अस्तु वे चीनी नेता डाक्टर सनयात सेन के पास गए और उन्होंने सब हाल बताया। उन्होंने रासबिहारी ने यह भी बताया कि सम्भवतः जापानी सरकार का उनके विषय में ज्ञात हुआ गया है। डाक्टर सनयात सेन ने एक मित्र से परामर्श किया वह उन्हें 'तोयामा' के पास ले गया।

एक बार रासबिहारी बोस और भगवान सिंह दोनों टाकियो से साठ मील दूर एक होटल में डाक्टर सनयात सेन से मिलने गए। वहां उन्हें एक जापानी कर्मचारी ने बताया कि एक भारतीय देशभक्त लाला लाजपतराय भी उसी हाटा में ठहरे हुए हैं लाला लाजपतराय का नाम सुन ही दाना उनके

कमरे की ओर भपटे। इस प्रकार जापान में रासबिहारी और लाला लाजपतराय का सम्पर्क हुआ।

यह तो हम पहले ही लिख चुके हैं कि मैक्सिक और हैनरी की दुघटना के उपरांत शर्घाई का जर्मन कौमल बड़ी मात्रा में अस्त्र-शस्त्र भारत भेजने के पक्ष में रहा था। परंतु श्याम और बरमा के माग से थोड़े अस्त्र-शस्त्र भारत भेजने के पक्ष में था। रासबिहारी का जापान में शर्घाई के जर्मन कौमल से बराबर सम्पर्क बनाए रखना एक महत्वपूर्ण कार्य था। वह कुछ जर्मन एजेन्टों के माध्यम से भारत की बड़ी मात्रा में अस्त्र-शस्त्र भेजने के पक्ष में था। इस कार्य में नलसन् नामक व्यक्ति बहुत सक्रिय था। वह अस्त्र-शस्त्र तथा विस्फोटक बनाने के लिए रसायनिक पदार्थ खरीता था। उनके पास शर्घाई में चार मकान थे, जहाँ वह समाप्त करता था। पहला मकान १ न चौतुग माग पर था, दूसरा २ यागटिसीपू माग पर था, तीसरा सिराकी माग पर और चौथा आनुग माग पर था। जब अतः मकानों की तलाशी हुई तो उनमें अस्त्र-शस्त्र तथा रसायनिक पदार्थ मिले।

जापान में रासबिहारी का एक महत्वपूर्ण कार्य भारत को अस्त्र-शस्त्र भेजना था। जब वे शर्घाई गए तो नलसन् के यागटिसीपू माग के मकान में ठहरे। और नलसन् के सहयोग से उन्होंने हान दो चीनिया को अस्त्र-शस्त्र तथा रसायनिक पदार्थ बंगाल ले जाने तथा उस अमरेन्द्रनाथ चटर्जी का देन के लिए नीकर रक्खा पश्चिमी बंगाल के गुप्तबर विभाग के रेकार्ड का देखन सपता चनता है कि १६ अक्टूबर, १९१२ को शर्घाई की पुलिस ने दो चीनी सदेहास्पद व्यक्तियों का गिरफ्तार किया। उनके पास १२६ पिस्तौल और बारह हजार राऊंड कारतूस थे। उन दोनों चीनियों ने बतलाया कि वे उह एक एक स्थानीय जर्मन फर्म ने पक करके कलकत्ता भेजने के लिए दिए थे। उसी रेकार्ड से यह भी पता चलता है कि वे पिस्तौल और कारतूस कलकत्ता में अमरेन्द्रनाथ चटर्जी (श्रमजीवी समवाय) तथा मनमाहन भट्टाचार्य जो-हिन्दुस्तान सहकारी बैंक में थे देने थे।

इस घटना के विषय में सडीशन कमेटी रिपोर्ट न पृष्ठ ८५ पर लिखा है कि दो चीनियों के पास १२६ आटोमेटिक पिस्तौल थे और २०,८३० राऊंड कारतूस थे जो लकड़ी के तटनों में छिपा रखे थे। वे दोनों चीनी शर्घाई में अक्टूबर १९१५ में पकड़े गए इसके अतिरिक्त रासबिहारी ने अमनी नाथ मुखर्जी को भारत अपने अत्यंत गोपनीय समाचार अपने मित्रों और सहयोगियों को बतलाने के लिए तय किया था। अमनीनाथ मुखर्जी जो बहुत दिना से जापान में रह रहा था, उसे भारत अत्यंत गोपनीय संदेश ले जाने के लिए भगवान सिंह ने चुना था और उन्होंने उसे रासबिहारी के पास शर्घाई भेजा था। रासबिहारी ने अमनी नाथ मुखर्जी को खूब अच्छी तरह समझा दिया था कि भारत में उसे क्या करना है। उसे रासबिहारी ने नामों की एक की सूची भी दे दी थी जो उसने अपनी डायरी में लिख ली थी। परंतु भारत जाते समय वह सितम्बर १९१५ में सिंगापुर में गिरफ्तार हो गया। इससे अतिरिक्त शर्घाई के जर्मन कौमल को बतलाया गया था कि रासबिहारी भारत के इतिहासियों के प्रमुख नेता

हैं अस्तु उनमें रहने में जरमा बाँगा । अस्त-गम्यो से मर दो जहाज भी भारत भेजे परन्तु वे दोना जहाज भारत पहुचन के पूर्व ही पकड़ गए ।

गघार्ड से लौटा के उपरांत उँहोंने एग महत्वपूर्ण काम यह किया कि २७ नवम्बर, १९१५ को उपनों पाव ने टोरियो हाटन म एग सभा की । इग सभा का आयोजन उँहोंने हेरबालान गुप, लाला साजान राय तथा डाक्टर सीमुर्द घोषावा के सहयोग से किया था । उस सभा में बहुत बड़ी संख्या में जापानी गण्य भा व जन भी आए थे । उस अवसर पर जापान का राष्ट्रीय झंडा फहराया गया और जापान के राष्ट्रीय गीत का गाया गया । उस सभा में भारत में ब्रिटिश शासन की गयी बटु भालोतना की गई विघापन का ता साजपत राय ने अपने भाषण में ब्रिटिश शासन की जसी तीव्र निंदा की कि जाना में ब्रिटेन राजर्त बोमता उठा । उगने जापानी सरकार पर ब्रिटिश सरकार का इत्ता अपिर दबाव डनवाया कि जापान सरकार को रासबिहारी बोस को जापान में निष्कासित करने का वारंट निवास्ता पडा ।

भारत में ब्रिटिश शासन विरोधी उस सभा में जापान के सर्वोच्च समुरार्द राजनीतिक नेता तोयामा भी उपस्थित थे । रासबिहारी बोस का जापान में निष्कासित करन के लिए ब्रिटेन के दबाव से वारंट निवास्ता गता ता के सायामा के पास गए । जापान सरकार ने रासबिहागे बोग की जापान छोड देने के लिए केवल पाय दित का समय दिया था । उग पांच दिना में केवल दो जहाज ही जापान से जा रहे थे एक जहाज 'बेलोडीवास्टन' रग को जा रहा था और दूसरा जहाज गघार्ड को जा रहा था । यह निष्कासन की प्राग ब्रिटेन के दबाव से ही निवाली गई थी और सुनियोजित थी । यदि रासबिहारी बोस 'बेलोडीवास्टन' जात ता जार की रूसी सरकार जा ब्रिटेन का मित्र राष्ट्र था उनको गिरफ्तार करके ब्रिटेन के मुफु कर देना और यदि ग घघार्ड जात तो वहा ता ब्रिटिश सरकार उँहें गिरफ्तार कर ही लेती । बराकि यहा ब्रिटेन की पुलिस थी ।

रासबिहारी जापानी नेता तोयामा के सहयोग से निष्कासन की आग निर-सत ही छिप गए । सायामा ने उँहें एगो सामा के यहा गुप्त रूप से रहने की व्यवस्था करवादी । बाद की मोमा की सडकी से उँहोंने शादी कर ली । यह शादी भी राजनी-तिक उद्देश्य से की गई थी जिससे रासबिहारी को जापानी गगरिपता मिलने में सरलता हो ।

यद्यपि सरकार ने चार महीन के उपरांत निष्कासा की आग की वापस ले लिया (अग्रेत १९१६) पर तु रासबिहारी गतर से घिरे थे । जापान में ब्रिटिश दूतावास उँहें या तो मरवा देना चाहता था या उँह वल पुवन अपहरण करवा लेना चाहता था, रासबिहारी बोस का ब्रिटिश राादूतावास के एजेटा से बहुत सतरा था । इस कारण वे भाठ वप तक जापान में गोपनीय ढग से रहे, १९१६ से १९२३ तक भाठ वप में उँहोंने सगह बार अपना निवास स्वान बदला । ऐसे सतक और सावधान रहनर ही वे अग्रेजो क हापा में पडन से बच सके । उनकी पत्नी सोमा उनकी बहुत बड़ी सहायक थी ।

रासबिहारी के सम्प्रघ में डी पटी की रिपोट अत्यन्त महत्वपूर्ण है जिसके अश हम यहा देते हैं । डी पटी को भारत सरकार ने सुद्धर पूव में भारतीय क्रांतिकारिया

के कार्यों पर रिपोर्ट देने के लिए १९१६ म भेजा था। वे सुदूर म भारत सरकार व मुख्य गुप्तचर अधिकारी थे। उन्होंने रासबिहारी के सम्बन्ध में १९१७ म नीचे लिखी रिपोर्ट दी। जापान में यदि कोई वास्तविक महत्वपूर्ण प्रातिकारी दृष्टिगोचर होता है तो वह रासबिहारी बोस उपनाम पी एन ठाकुर है जो जापान सरकार के शासन म रहता है। और क्योंकि वह अपने निवास के सम्बन्ध में कठिन गोपनीयता रखता है और इसके कारण उसे जो अपने आने जाने की स्वतंत्रता पर कठोर अकुश रखना पड़ता है वह सक्रिय प्रातिकारियों की सूची में नहीं रक्खा जा सकता। परंतु इसके यह अर्थ बदापि भी नहीं है कि बोस निष्क्रिय हैं। परंतु उनके गोपनीय रहने के स्वयं के तरीके से उन्हें जो अपने ऊपर जो सावधानी की शर्तें आरोपित करनी पड़ी उससे वे अपने प्रातिकारी दल के लिए अधिक उपयोगी नहीं रहे।

जुलाई के अंत में बोस टोकियो से पूरा रूप से अंतराध्यान हो गए। क्योंकि टोकियो में उनका निवास स्थान ब्रिटिश अधिकारियों का ज्ञात हो गया था। दिसम्बर, १९१७ व अंत में हिज-मैजस्टी के वायस वासल डविडजन बहुत खोज के उपरांत पता लगा सके कि वे 'श्रोविट्मू' में ह जा पूर्वीय समुद्र तट पर कटसुरा नामक कस्बे के समीप एक छोटा-सा गांव था। जैसे ही उनके निवास स्थान का पता लगा वे तुरंत टोकियो चल गए। जहां ऐसा विश्वास किया जाता है कि वे जापान के सम्राट साइ हाई चैम्बरलैन के मरण के बहुत बड़े कोट याद में छिपे रहे। यह सम्भव है कि उनका कोई कमचारी बोस का छिपाव हो और उनको यह म ज्ञात हो। वहां रासबिहारी ने अपना नाम 'हयाशी इचिरा रख लिया था।'

जापान में रासबिहारी की गुप्त वायवाहिया के सम्बन्ध में पंटी ने अपनी रिपोर्ट म लिखा है।

जा रासबिहारी के नाम घाए पत्र गुप्तचरों ने पकड़ उनसे स्पष्ट पता चलता है कि बाग का अमेरिका के पडयंत्रकारियों ने नेता जैसे रात्र भट्टाचार्य जीर रामचंद्र रा निबट का सम्बन्ध था और वे अब भी प्रातिकारी वाय करते हैं। उनकी कठिनाईयां जितनी उ ह करने की प्रामुखिता देती हैं। रासबिहारी बाग श्री तारकनाथ दास के भी सम्बन्ध म रहे जब तारकनाथ दास चार महीने अमेरिका म १९१७ म रहे और वह बाग को जान म थेष्ठ और बड़ा मानत थे। दास म एक योजना जहाजा को दुबान की घोषणा थी। जहाजा का दुबाने के लिए उन पर दम रखने का प्रस्ताव था परंतु उस योजना पर निमग्न हुआ है जो वाय रूप म परिणत नहीं हो सकी। जब पुनित म तारकनाथ दास ने ४४ पोरटाला स्ट्राट यूवाक के भवान की सा प्रातिगो के प्रविद्ध अभिवाग ने सम्बन्ध म तलाशी की तो रासबिहारी दास का एक पत्र मिला जिससे यह सिद्ध होता है कि उस योजना भारतीय प्रातिकारियों म बहून निबटता थी। भारत और अरगत पडयंत्र ने एक बात ब द वाय चयवनी म भी बतलाया कि उ ह भी इस बात म जब व अमेरिका म था तो रासबिहारी बाग का पत्र मितत था।

यह बात रखती वात है कि १९२३ म रासबिहारी बाग का जापान की मार्गदर्शिका प्राप्त हो गई थी और उन दिनों रक्षा की आवश्यकता दूर नहीं थी। १९२३ म १९२४ म भी गुप्तचरों ने उजा वतपुत्रक अग्रहरण करने की इच्छा की। पर जापान

की नागरिकता मिल जाय पर रासबिहारी बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने जापान की नागरिकता मिलने पर अपनी हार्थिक प्रगतिता सुरेशचन्द्र घोष की एक पत्र में इस प्रकार व्यक्त की 'तुम सम्भवत यह जानकर प्रसन्न होगे कि मुझे यहाँ की नागरिकता प्राप्त हो गई है। इसके परिणाम स्वरूप मैं अब मसार के देश का भ्रमण पर सक्तूँगा। केवल ब्रिटेन के ज्ञान में जो देश हैं वहाँ मैं नहीं जा सकूँगा।' जापान की नागरिकता मिल जाने पर वे जापान के सांख्यिकी जीवन में सुनकर भाग लेने लगे। उन्होंने जापान के राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक जीवन में बहुत पाठ किया और टोकियो में वे अपनी मातृभूमि भारत का ब्रिटेन की दासता से मुक्त करने के लिए सगठन करने लगे।

उन्होंने जापान के कई विश्वविद्यालयों से सम्बन्ध स्थापित कर लिया अनेक साहित्यिक सप्ताहों से उनका रिश्ता सम्बन्ध स्थापित हो गया। उन्होंने भारत तथा एशिया की राजनीतिक स्थिति के सम्बन्ध में अनेक पुस्तकें लिखीं। वे जापानी भाषा में पारा प्रवाह भाषण देने थे। वे जापान में एक कुशल और प्रतिष्ठित वक्ता माने जाते थे। वे भारत के सम्बन्ध में जापान में साहित्य प्रकाशित करते थे। उन्होंने जापान के राजनीतिक, सांख्यिक, सामाजिक तथा संस्कृति से ऐसी महान् एकात्मता उत्पन्न कर ली थी कि जापान के प्रसिद्ध विद्वान् साहित्यिक समाजिक कार्यकर्त्ता राजनीतिक उनका आदर करते थे। श्री विनोद बिहारी मुखर्जी (शान्ति निवेदन के प्रसिद्ध चित्रकार) जून १९३७ में जापान गए तो जापान के प्रसिद्ध चित्र गयह करने वाले कबाता का उन्होंने परामर्श दिया कि यदि वे जापानी शिल्पाचार सीखना चाहते हैं तो उन्हें रासबिहारी बोस के पास जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस सम्बन्ध में बहुत कम जापानी उनकी समता कर सकते हैं। रासबिहारी का साह्य स्वरूप एक जापानी का परन्तु अंतर में वे भारत माता के एक सच्चे सपूत थे जिसकी स्वतंत्रता के लिए उन्होंने अपना जीवन अर्पण कर दिया था।

टोकियो में अपने मन्त्र के देवदार के वृक्षों में भुरमुट में उन्होंने एक शिला-लेख लगवाया था। जिस पर उनके मित्रों और साथियों के नाम अंकित थे जिन्होंने भारतमाता को स्वतंत्र करने के लिए अपने की बलिदान कर दिया था। रासबिहारी उस शिलालेख के पास बैठकर ध्यान करते थे। शांतिनिवेदन के बेसिक टीचर ट्रेनिंग काल के श्री सोमेश्वरनाथ राय जापान में तीन वर्ष (१९३४-३७) तक "एशिया साज" नामक छात्रावास में रहे थे जिसे रासबिहारी बोस ने चलाया था। उसमें एशियाई देश के छात्र जा जा पाएँ और अध्ययन करने जाते थे, रहते थे। श्री सोमेश्वरनाथ राय जापान में तीन वर्ष तक एक विशेष प्रकार की पाठ्याभ्यास की शिक्षा प्राप्त करने गए थे। उनका नाम रासबिहारी के कई चित्र उस शिलालेख के पास ध्यानावस्था में चढ़े-ध्यान करती हुई प्रकृति के थे।

अध्याय नवां

शोष का लोचको से विवाह

श्रीमती कोकबोह सोमा ने रासबिहारी बोंस के साथ उनकी पुत्री लोचिको के विवाह का रोचक तथा विस्तृत वर्णन निम्नलिखित शब्दों में लिखा है । *

२८ नवम्बर, १९१५ का दिन था । मुझे ज्ञात हुआ कि एक निस्मृत्य तर्कण भारतीय क्रांतिकारी को पुलिस जापान से निष्कासित कर रही है । उसे पाच दिन के अन्दर जापान को छोड़कर चले जाने की आज्ञा हुई है । (उस समय जापान सरकार के अध्यक्ष मार्किस जाबुमा थे ।) उस तर्कण त्रानिकारी कि निष्कासित करने और उसको ब्रिटिश सरकार के सुपुद कर देने का श्रय था उसकी मृत्यु । (उन पाच दिन में जापान से केवल दो जहाज जान वाले थे एक समुद्री जहाज ब्लाडिवास्टक को और दूसरा "गघाई" को जान वाला था । वह एक सुनयोजित जहाज था । यदि वह "नाडिवास्टक" जाता तो जापान सरकार उसको गिरफ्तार करके ब्रिटिश सरकार को सुपुद कर देनी और यदि वह गघाई जाता तो ब्रिटिश पुलिस उसे गिरफ्तार कर लेती ।

उन दिना मैं अपने पति के साथ मदक अपनी दूकान (स्टोर) में काम करती थी । मेरे पति उस समय एक भारतीय के सम्बन्ध में यह समाचार सुनकर अत्यन्त विचित्र हो गए । वे उस भारतीय के भविष्य के बारे में बहुत चिन्तित हो गए । प्रातः काल उठाने निरोद्ध समाचार पत्र के सम्पादक श्री नकामुरा को जा पत्रिका और उस निष्कासित भारतीय के भविष्य के बारे में उनसे पूछा —

“क्या यह खेद और लज्जा की बात नहीं है कि वह भारतीय युवक को जापान से जाना पड़ेगा ।”

श्री नकामुरा ने उत्तर दिया “वास्तव में यह अत्यन्त खेदजनक है । हमारे विदेश मंत्री की ब्रिटिश राजदूत के प्रति दास मनोवृत्ति हमारे राष्ट्र के लिए महान

* विप्लवी महाशयन रासबिहारी बंसु स्मारक गमिनि द्वारा प्रकाशित पुस्तक रासबिहारी-बंसु पृष्ठ २७

प्रपयश की बात है। परन्तु अब इसमें कुछ नहीं किया जा सकता यद्यपि श्री तोयामा की यह हादिक इच्छा है कि उसको किसी प्रकार बचाया जावे।

मेरे पति श्री नवामुरा से अत्यन्त गम्भीरता पूर्वक इस सम्बन्ध में बात कर रहे थे। मैं चाहती थी बात करने में लगी हुई थी इस कारण मैं यह नहीं जान सकी कि मेरे पति ने क्या प्रस्ताव किया। उसके उपरांत मेरे पति किसी काय से बाहर चले गए।

परन्तु कुछ ही घंटों के बाद श्री नवामुरा बहुत शीघ्रता में घाण् घोर मेरे पति से उठोने मिलना चाहा। तब मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे पति ने श्री नवामुरा से क्या प्रस्ताव किया था। परन्तु मुझे भ्रमवा दूकान के किसी भी आदमी को यह नहीं मालूम था कि वे कहाँ हैं। जहाँ भी उनके होने की सम्भावना थी हमने सभी जगह फोन किए परन्तु वे नहीं मिले।

एकाएक फोन की घटी बज उठी। मेरे पति फोन पर थे। मैंने उनसे कहा थाप कहाँ हैं। हम आपको इतनी देर से खोज रहे हैं। आप तुरन्त यहाँ आइए। आपने श्री नवामुरा से कल प्रातः काल एक अत्यन्त गम्भीर प्रस्ताव किया था। वे आपसे उस सम्बन्ध में मिलना चाहते हैं।

उन्होंने जवाब दिया "मैं आ रहा हूँ" और यह कह कर फोन रक्त दिया।

टोकियो के समाचार पत्रों ने रासबिहारी बोस और उनके मित्र हेरम्बालाल गुप्त व गायब हो जाने का समाचार छाप दिया था। हम लोग केवल मात्र इस समाचार के पढ़ने वाले ही नहीं थे बल्कि हम इन गम्भीर और बड़े अन्तर्राष्ट्रीय मामले में पूरी तरह से लिप्त थे।

मैं यह नहीं समझ सकी कि क्या और कैसे मेरे पति जो कि एक साधारण दूरान्तर थे वे प्रस्ताव को श्री तोयामा जैसे महान नेता ने स्वीकार कर लिया। (जब रासबिहारी बोस तथा हेरम्बालाल गुप्त के निष्पासन की आज्ञा निकली तो लाला लाज पतराय ने चीनी नना डाक्टर मनयात से परामर्श लिया। डाक्टर मनयात सेन ने दोनों को जापानी नेता श्री तोयामा के संरक्षण में दे दिया।

उस समय श्री तोयामा का मकान जिम्म बहुत बड़ा बाग था टोकियो नगर के मध्य में स्थित था। श्री तोयामा का मकान प्रो तेरायो की बगल में था। रासबिहारी बोस तथा हेरम्बालाल गुप्त, प्रो तेरायो के मकान में उद्यान में से होकर आए थे वे उस समय छद्म वेप में थे। बोस ने तोयामा का हैट (टोप) तथा किमोनो (जापानी टोपा) पहन रख्या था और गुप्त श्री तुकुटा का भारी ओवर कोट धारण किए हुए थे। उनके साथ जापान के राष्ट्रीय क्रान्तिकारी नेता तुकुटा और मियागावा थे। उन सबों ने प्राणेश्वर तेरायो के मकान के पीछे वे उद्यान को पार किया और भी तोयामा के मकान के पीछे वे दरवाजे से (जिसका उपयोग लगभग नहीं होता था) निकल गए। वहाँ जो मोटरगाड़ी उनकी प्रतीक्षा कर रही थी उसमें बैठ गए। मेरे पति श्री तोयामा के मकान के पोच और सामने के फाटक से निकले और सामने से निकलकर पीछे के फाटक की ओर गए और उनके साथ वार में घर वापस आ गए।

श्री तोयामा के मकान के सामने दो मोटर गाड़िया खड़ी थी। एक वार तो

पुलिस के प्रिफेक्ट की थी और दूसरी कार वह थी जिसमें बोस और गुप्ता तोयामा के मकान तक आए थे। अनेक वर्दीधारी पुलिस मन तथा सादे वस्त्रों में गुप्तचर सायबाल तक बोस और गुप्ता की प्रतीक्षा मचड़े रहे मर वे नहीं निकले।

जब अचानक छा गया और तोयामा के मकान के सब दरवाजे तथा विड़किया बंद हो गईं तो पुलिस ने और प्रतीक्षा नहीं की वे पोच में आए और उन्होंने दोनों भारतीय निष्वासितों के बारे में पूछा। एक नीबुर ने उत्तर दिया कि वे दोनों कुछ घंटे पूछ ही चले गए। पुलिस यह सुनकर अत्यंत भयभीत हो गई। पुलिस ने अपने मिपा-हिया को इकट्ठा किया और श्री तोयामा का बहुत बड़ा मकान तथा विस्तृत उद्यान घेर लिया परन्तु वे एक ऐसे व्यक्ति के मकान में घुस कर तलाशी लेने का साहस नहीं कर सके जो सम्पूर्ण देश में श्रद्धा और आदर का पात्र था। यद्यपि दोनों निष्वासितों के दा जोड़े जूते पोच में तक भी पड़े थे।

श्री तोयामा उस समय अपने अध्ययन कक्ष में थे। बाहर शोर शराबा सुनकर उठाने कहा "यह बहुत खराब हुआ। यदि इस कारण उनको बरखास्त किया गया तो मुझे उनके लिए कुछ करना होगा।"

उन्होंने उस कार का किराया चुका दिया जो थी वाम तथा गुप्ता के लिए थी।

जिस गाड़ी में रामबिहारी बोस तथा उनके मित्र श्री तोयामा के मकान से चले थे वह डाक्टर सुगियामा की मोटर थी। उस समय जापान भर में कोई उससे तेज चलने वाली मोटर नहीं थी जो उसकी गति को वा सक्ती।

सायबाल के भी उत्रे थे। हमारी दूकान के दरवाजे बंद किए जा रहे थे पर जैसा कि बहुधा होता था अभी तक कई आह्व मोजूद थे जिनको चीजें देनी थी। उसी समय चार बोस, गुप्ता, तुकुदा और मिथागावा दूकान पर आए और आदर प्राप्त हुए। कुछ मिनटों के उपरांत ही चार व्यक्ति बाहर निकले और कार में बैठ कर चल गए। अब तक आश्चर्यचकित रहने लगा था। किंतु इस बार जाने वाली में तीन हमारे बलक थे और चौथे व्यक्ति श्री तुकुदा थे।

उस कार के स्वामी डाक्टर सुगियामा, श्री रामबिहारी बोस तथा हेरम्बालाल गुप्ता के सम्बन्ध में चिन्तित थे। जब झाड़कर कार लेकर घर वापस लौटा तो उन्होंने उससे, बोस और गुप्ता के बारे में पूछा उसने उत्तर दिया "मैं श्री तुकुदा और उनके तीन मित्रों को स्थुजिकी स्टेशन के निकट नकामुराया के यहां ले गया था वहां उन्होंने कुछ खरीददारी की और पुन योतुया वापस आए और वहां श्री तुकुदा को छोड़कर शेष तीन यह कह कर चले गए कि हम टहलना पसंद करेंगे। मैं, श्री तुकुदा को उनका मकान ले गया।

। हमारे महा कुछ वर्षों से काम करत थे और उनसे कहा "मित्रों मैं एक बड़े खतरे का काम करने जा रहा हूँ। सम्भवतः यह अत्यंत भयंकर खतरा मेरे जीवन का सबसे बड़ा खतरा हो। मैं उन दो निरसहाय भारतीयों को जिन्हें जापान सरकार ने निष्वासित

महान क्रांतिकारी रासबिहारी बोस

सिन कर दिया है छिपाने जा रहा है। उनका नाम भारतीय कमिश्नरियों को मैं अपना पुरान तहखाने में छिपाने जा रहा है। यह एक भारतीय और प्रचलित प्रथा है। हम जापानी थपनी आसों के सामने मरते नहीं देस सकते।

जिसी न भी कोई आपत्ति उठी उठाई। नीवर सभी इस निष्पत्ति से बहुत प्रसन्न थे। एक स्तर से उन्होंने कहा मालिक बहुत अच्छा। हम आपकी इसमें सहायता करेंगे और उनकी चाहे जो भी सतरा क्या न हो रखा करेंगे। फिर चाहे हमारे प्राणों पर ही सन्देह क्या न हो। यदि हम पर आक्रमण किया गया तो हम मृत्यु पय तक बलपूर्वक उनकी रक्षा करेंगे। जब हम लड़ रहे हो उस समय आप उन्हें सुरक्षित जगह ले जावे और उनकी रक्षा करें। हम आपको वचन देने हैं और प्रशस्त करते हैं कि हम आपकी इस काम में सहायता करेंगे। व सभी भावना प्रधान और उत्साहित थे।

मैंने अपनी दो नौकरानियां मे से एक को बात का काम करने के लिए नियुक्त कर दिया।

सौभाग्यवश हमारे परिवार में बहुत सदस्य और नौकर थे और हमारे स्टार तथा घर में सदा कनिष्ठ मित्र तथा ग्राहक बने रहते थे। हमारा यहां बहुधा विदेशी भी आया करन थे इस कारण यदि हम विदेशियों के लिए खाद्य सामग्री प्रथवा भाजन खरीदन थे तो कोई सदेह नहीं करता था।

एकान्ता रहने के कारण बोस को जीवन कष्टकर प्रतीत होता था वे जापानियां में अजनबी थे और जापानी भाषा न जानने के कारण उनसे बातचीत भी नहीं कर सकते थे। मैं बहुत कम अंग्रेजी जानती थी। परंतु मैं बास के पास अधिक और लम्बे समय के लिए नहीं रह सकती थी क्योंकि मुझे दिन भर स्टोर में काम करना पड़ता था। मैं जब भी दिन में बोस के पास जाती तां मरे ग्राहक पूछते थीमती बोवकोह सोमा कहा है ? आजकल ये दिललाई नहीं पड़ती अथवा थीमती सोमा कुछ देर स्टोर में रहकर गायब हो जाती है। इस कारण मुझे स्टार में ही रहना पड़ता और अंग्रेजी में स्विप लिखकर भेजती। उनकी मौसम बदलन पर सलाह देने के लिए अथवा यह पूछने के लिए कि वे भोजन क्या लावेंगे ? मुझे उन्हें अंग्रेजी में स्विप लिखनी पड़ती थी। मैं इस प्रकार के स्लिप सावधानी और गुप्त रूप से भेजती थी। मैं उनके लिए भोजन उसी तहखाने में अपने नौकर से बनवाती थी।

(यद्यपि श्री रासबिहारी तहखाने में एकान्त जीवन व्यतीत करते थे परंतु वे अपने भारतीय सहयोगियों श्रीपचन्द्र मोतीलाल राय और शचीन से पत्र व्यवहार द्वारा सम्पर्क बनाए हुए थे।)

पुलिस अधिपति बहाई के साथ दोनों भारतीयों के गायब हो जान के मामले की जांच कर रही थी। कई महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय ट्रांसि के लोगों की पुलिस आफिस में जांच हो रही थी अथवा उनका हिरासत में ले लिया गया था। ब्रिटिश राजदूतावास जापान के विदेशी मंत्रालय को भारतीय क्रांतिकारियों के गायब हो जान के लिए दोषी ठहराना था और उस पर प्रहार करता था। इस सम्बन्ध में तरह-तरह की अफवाह प्रचलित क्षेत्रों में फैली हुई थी। समस्त वायुमंडल अफवाहों से भरा हुआ था।

एक दिन बसेदा विश्वविद्यालय ने एक प्रोफेसर हमारे स्टोर में आए श्री मरे पति से बोले 'मैं जानता हूँ कि श्री बोस और उनके मित्र कहाँ हैं।' मरे पति उनके इस कथन से भौंछकके हो गए। उन्होंने पूछा कि वे कहाँ हैं। तो उन प्रोफेसर ने कहा कि वे यूनिवर्सिटी के प्रेसीडेंट के मकान में हैं। यह सुनकर मरे पति आश्चर्य में हुए। बान यह भी कि "नाऊट ओकूमाट विश्वविद्यालय के अध्यक्ष भारत जापान समिति के भी अध्यक्ष थे। इस कारण लोग उन पर सदेह करते थे। बहुत से महत्वपूर्ण व्यक्तियों पर उस समय सदेह किया जा रहा था।"

विदेशमन्त्री ने श्री निसिकिटो पुलिस प्रिफेक्ट पर बहुत दबाव डाला तो पुलिस अधिकारियों ने टोकियो नगर में मास की दूकानों के ग्राहकों की जाँच पड़ताल करने के लिए गुप्तचरों का एक दल लगा दिया। पर उस समय जापान में यह तथ्य किसी को पता नहीं था कि भारतीय मास नहीं खाते।

किंतु जब ब्रिटिश लडाकू जहाज ने हांगकांग को जाने वाले स्टीमर पर निर्यात और निस्तहाय यात्रियों को उतारने के लिए गर कानूनी और निदयतापूर्ण ब्राह्मण किया तो समस्त जापान में ब्रिटेन के विरुद्ध हो गई इस कारण जापान के विदेश मन्त्रालय को भी अपनी नीति में परिवर्तन करना पड़ा। अस्तु साठे चार महीनों के उपरांत रासबिहारी बोस तथा हेरवालास गुप्ता पर स निष्कासन के आदेश वापस ले लिए गए। अब बोस स्वतंत्र थे व जापान में रह सकते थे। उस समय मैं अपने नवजात पुत्र की मृत्यु के शोक तथा बोस की छिपाकर रखने को मानसिक चिंता तथा ध्यान से मैं राग ग्रस्त थी।

जब रासबिहारी बोस हमारे यहाँ आए उसके दो सप्ताह के उपरांत मेरे बच्चे की मृत्यु हो गई। श्री मानसिक तनाव तथा स्नायु-दौर्बल्य के कारण मेरा दूध सूख गया मैं उस नव जात शिशु को यथेष्ट दूध नहीं पिला सकी। उसकी मृत्यु के उपरांत मेरे मन पर यह चिंता बोझ बनी रही कि मुझे पर पुलिस को सदेह है मुझे पर सब गुप्तचरों की दृष्टि रहती है। इस मानसिक चिंता और भार के अतिरिक्त बच्चे की मृत्यु से माँ को जो स्वाभाविक शोक और पीड़ा होती है उसने मुझे रोगी बना दिया था। फिर भी मुझे स्टोर में खड़े होकर काम करना पड़ता था क्योंकि मुझे भारत से आए हुए महत्वपूर्ण अतिथि की सुरक्षा करनी थी। अस्तु जब निष्कासन की आज्ञा वापस ली गई तो मैं रोग शय्या पर पड़ी थी।

अप्रैल १९१६ के उस प्रातः काल जब कि श्री बोस हमारे घर में जा रहे थे तब वे मेरे सोने के कमरे में विदा लेने आए क्योंकि मैं नीचे नहीं जा सकती थी।

वे जापानी किमोनो और समुराई में जो विशेष उत्सव के समय पहनी जाती है और जा हमने इस दिन के लिए उनके लिए बनवाई थी किन्तु भय और सुंदर लग रहे थे। वे वास्तव में भयंकर थे।

उन्होंने नीचे लिखे शब्दों में विदा ली।

'प्रिय माँ मैं नहीं जानता कि किन शब्दों में मैं आपका धन्यवाद करूँ मेरी रक्षा करने के लिए आपने अपने प्रिय बालक को खो दिया। मैं अपनी गहन कृतज्ञता को व्यक्त करने के लिए मेरा पाठ शब्द नहीं है।'

उहाने मुझे मा बहा मैं बोल नही सकी । हम दोना एव दूसरे क हाथ पकड कर राते रहे । मैं उनको विदा करने के लिए नीचे उतर कर नही जा सकी । परतु मैं निडकी से उनकी बार को आसू भरी आँखो से देखती रही ।

मैंने अपना बच्चा खो दिया परतु मैंने महान भारत माता की आत्मा से निकट का सम्बन्ध स्थापित कर लिया ।

निष्वासन की आज्ञा वापस लिए जाने पर भी ब्रिटिश दूतावास से घोर का बच सकना असम्भव था । * हमारे मकान से चले जाने के बाद भी जब तक कोई व्यक्ति उनके साथ रात दिन न रहे उनकी ब्रिटिश दूतावास के चुगल से रक्षा नही हा सकती थी । वे अब भी घजनबी थे और उनके लिए न पहचाना जाना कठिन था । मेरे पनि उनके साथ रहत थे पर व ऐसा सर्वदा तो कर नही सकते थे । हमारे लिए एक कठिन समस्या थी कि उ ह ब्रिटिश दूतावास के चुगल से कैसे बचाया जाव ।

एक दिा श्री तोयामा ने हमारे सामने यह प्रस्ताव रक्ता कि हम अपनी बडी लडकी की शादी श्री बोस से कर दे । इस अप्रत्याशित प्रस्ताव से हम पहले ता स्थिर हो गए । कई दिनों तक हम इस पर विचार करते रहे । हम बास का अपन पुत्र की तरह ही प्यार करते थे । वह हम माता पिता कहत थे । हमारा बोस के प्रति प्रेम असाधारण था । परतु हमने कभी उनसे अपनी ज्वल लडकी तोशिका स विवाह करने की कल्पना भी नही की थी ।

तोशिको अभी छोटी थी । वह स्कूल में पढ रही थी । हम इतने गम्भीर प्रश्न पर अपनी नियम देने के लिए किस तरह कह सकते थे ।

परतु हमने अनुभव कर लिया कि बोस को बचाने का और कोई रास्ता नही है क्योंकि ब्रिटिश दूतावास के किराये के गुप्तचर उनका बडी मतकना से पीछा कर रहे थे । बोस बहुत खतरे में थे ।

हमने भगवान से प्रार्थना की कि तोशिको इस खतरनाक मिशन को, इस खतर को चालीस करोड भारतीया के लिए उठाना स्वीकार कर ले ।

अत मे मैंने श्री तायामा के प्रस्ताव के बारे में तोशिको से बात की ।

ताशिको न उत्तर दिया मा मुझे इस पर सोचने का समय दीजिए ।

एक महीने के बाद वह दिन आ गया जबकि मुझे श्री तोयामा को जवाब देना था । मैंने तोशिको को अपने कमरे में बुलाया और उसके नियम के बारे में पूछा । मैंने उससे अपनी स्तन इच्छा से जो कुछ उसको नियम करना हा नियम करने के लिए कहा । उसने मुझसे दृढ शब्दों में कहा 'मा मुझे बोस के पास जाने दीजिए उनके शरीर की रक्षा के लिए उनकी ढाल बनने दीजिए । मैंने निश्चय कर लिया है ।

उसके उपरांत हमने बोस से पूछा कि क्या वे तोशिको स विवाह करेगे और क्या वे अविवाहित हैं । क्योंकि हमने सुना था कि भारत में बहुत जल्दी विवाह हो जात है ।

* ब्रिटिश दूतावास ने निजी गुप्तचरो के एक दल को श्री रासबिहारी बोस को पकडन क लिए रक्ता था और उनकी गिरफ्तारी के लिए एक बडे पारितोषिक की घोषणा की थी परतु श्री तोयामा ब्रिटिश दूतावास के एजेन्टा को परास्त करते रहे ।

नहीं मैं विवाहित नहीं हूँ। पंद्रह वर्ष की आयु में मैं अपना सम्पूर्ण जीवन भारत को स्वतंत्र बनाने के लिए अर्पण करने का निश्चय कर लिया था। तब से मैंने कभी विवाह के बारे में सोचा ही नहीं क्योंकि मेरी पत्नी और बच्चे मेरे भारत से बन जाने के पश्चात् ब्रिटिश सरकार द्वारा यातना के शिकार बनते। इसका अतिरिक्त मैं अब वैवाहिक जीवन की किस प्रकार कल्पना कर सकता हूँ। परन्तु यदि श्री तोयामा की इच्छा है और कुमारी तोशिको सहमत है तो उनकी इच्छा मुझे शिरोधार्य है।

जब श्री तोयामा ने सुना कि दोनों विवाह करने के लिए दृढ़ निश्चय हैं तो वह बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा कि मैं उन दोनों की रक्षा करने का प्रयत्न करूँगा। अस्तु श्री रासबिहारी बोंस और तोशिको का जुलाई १९१८ में विवाह हो गया। विवाह श्री तोयामा की अग्र्यक्षता में हुआ पर विवाह गुप्त रूप में हुआ। क्योंकि मैं बीमार था मर १९ वर्षीया पुत्र टिकावा न विवाह की सारी तैयारी की। सारा सामान गुप्त रूप से भेजा गया। तोशिका अपने पिता के साथ गई। सोमा परिवार की सबसे बड़ी सदस्यी था यह बसा एकाकी प्रस्थान था। मैं उसका साथ नहीं जा सकी। मैंने उसको अपने सोने के कमरे की खिड़की से जाते देखा और बिना किये। यदि कोई भी जो जापान में सात वर्ष रह लेता है तो जापान का नागरिक बनने का दावा कर सकता है। नागरिकता का यही कानून है। परन्तु इसका कोई राजकीय प्रलेख नहीं था कि श्री बास जापान में सात वर्ष रहे हैं। श्री तोयामा ने इस बात को प्रमाणित कर दिया कि वह जापान में जाठ वर्ष रहे हैं। उनके लेख को राजकीय प्रलेख मान लिया गया और उन्हें जापान की नागरिकता मिल गई।

२ जुलाई, १९२३ को आठ वर्षों की लम्बी अवधि के उपरांत जब रासबिहारी बोंस को जापानी नागरिकता मिली और एकाकी जीवन तथा गोपनीयता से स्वतंत्रता मिली फिर भी वे निरापद नहीं थे। उन्हें ब्रिटिश दूतावास के दलालों के हाथ मारे जाने तथा अपहरण कर्त्तों से बचने के लिए सत्रह बार से अधिक प्रपना मरान बालना पड़ा था। नागरिकता प्राप्त कर लेने के उपरांत वे स्थाई रूप से एक मकान ले सके थे।

[किसी मकान में तो वह केवल दो चार दिन ही रह सके। कुछ मकानों में वे केवल कुछ महीने ही रह सके और किसी भी मकान में दो वर्ष से अधिक नहीं रहे सके।]

परन्तु उनकी पत्नी तोशिको इस तनाव भरे जीवन के भार को वह नहीं सह सकी और चल बसी। तोशिको की ४ माघ, १९२५ को मृत्यु हो गई। वह उस समय केवल अठारह वर्ष की थी। उन्होंने वैवाहिक जीवन के सुख और आनन्द को नहा जाना के अपने पीछे एक पुत्र और एक पुत्री को छोड़ दिया। उनका जीवन अत्यंत अल्प और कष्टकर रहा।

(यह ठीक है कि वे गोपनीयता तथा मारे जान या अपहरण के भय से वैवाहिक जीवन का सुख नहीं भोग सके। परन्तु उनके रास्ते में दूसरी रुकावट रुढ़िवाद तथा विभिन्न देशों के होन की भी थी।)

तोशिका की मृत्यु के उपरांत हमने उनके बच्चा के पालन का उत्तर दायित्व ले लिया जिससे कि बोंस अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के वायु का पूरा सम्पन्न लक्षण कर सकें।

दस वर्षों के उपरान्त मैंने श्री बोस से कहा 'अब तुम्हें नए बवाहिक जीवन में प्रवेश करना चाहिए। हम दोनों बच्चों की देखभाल बिना कठिनाई के कर सकते हैं। वे अब बड़े हो गए हैं।'।

वास्तव में ऐसी अनेक जापानी युवतियाँ थीं जो श्री बोस के व्यक्तित्व तथा उनकी उदात्त भावना से प्रभावित थीं, उनसे विवाह करके उनके महान् काय में उनकी सहायता करने के लिए तैयार थीं।

दूसरा विवाह करने के प्रस्ताव का सुनकर वे हँसे। उन्होंने कहा —

"माँ, तोशिको का प्यार पुनः पा सनना असम्भव है। यह विचार ही मुझे अपना पीडाजनक प्रतीत होता है। मेरे प्रिय माता पिता हैं। यह यथेष्ट है मैं सुखी हूँ। जिस प्रकार मेरे माँ प्रिय वर्षों में जबकि मैं छिप कर रहता था तोशिको मेरे साथ थी वह माँ भी सदैव मेरे साथ है। इसके अतिरिक्त मेरा जीवन मेरा नहीं है मैंने उसे अपनी मातृभूमि को समर्पित कर दिया है। तोशिको के साथ जो मैंने माँ वप व्यतीत किए उस जीवन से मैं उस समय सतुष्ट था और आज सतुष्ट हूँ। वह मेरे लिए यथेष्ट से अधिक है।

श्री रासबिहारी बोस के यह शब्द सुनकर मैंने अपनी स्मृति में रहने वाली तोशिको से कहा। "तोशिको तुम कितनी भाग्यशाली और सुखी लड़की हो। श्री बोस वास्तव में महान् हैं वे तुम्हारी अपेक्षा अधिक ऊँचे व्यक्ति हैं। क्या ऐसा नहीं है? तुम लकी हो, क्या ऐसा नहीं है?"

बोस का भी कहना ठीक था "कि तुम जापानियों के प्रेम और सहानुभूति के बिना मैं कभी का मर गया होता।"



अध्याय दसवां

इण्डियन इण्डियनडैस लीग

१९२४ में रासबिहारी बोस ने एशियाई लोगों को संगठित करना आरम्भ किया। १ अगस्त को उन्होंने नागासाकी में एशिया के प्रतिनिधियों की एक सभा बुलाई। चीन के भ्यारह, भारत के आठ, अफगानिस्तान का एक, फिलीपाइन्स का एक और जापान के बीस प्रतिनिधि उसमें सम्मिलित हुए थे। अपने भाषण में रासबिहारी बोस ने कहा "कुछ लोगों का कहना है कि एक दूसरा अंतर्राष्ट्रीय संगठन खड़ा करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन विद्यमान है और हम उसके सदस्य होने के नाते संगठित हैं। परंतु दोनों में कोई साम्य नहीं है दोनों एक दूसरे में मकरा भिन्न हैं। पहला अंतर्राष्ट्रीय संगठन पचास करोड़ श्वेत जाति के लोगों के लाभ और कल्याण के लिए है जबकि यह संगठन एक अरब से अधिक एशियाई लोगों के कल्याण के लिए है। हम जो संगठन खड़ा कर रहे हैं उससे एक नई पूर्वीय सम्प्रदाय को जन्म देने और उसको स्थापित किया जा रहा है। उसका आधार एशिया के लिए प्रेम और विश्वास होगा। अस्तु हमको मानव जाति को सुखी बनाने में सहायता करने के लिए काय करने के लिए संगठित होना चाहिए।"

वाद को उठाने जापान में "भारतीय समिति" भी संगठित की उनके माध्यम से वे जापान में रहने वाले भारतीय तरणों को संगठित कर उनको नेतृत्व प्रदान करते थे। १९३३ में टोकियो में उठाने 'विला ए शियन' नामक एक एशिया के छात्रों के लिए एक छात्रावास स्थापित किया। वे उस छात्रावास के द्वारा एशिया के छात्रों में एशियाई लोगों की एकता की भावना जागृत करते थे। उस एशियाई छात्रावास को १९४१ तक वे स्वयं चलाते रहे तथा उसका संचालन करते रहे। अपने जापानी मित्रों की सहायता से उन्होंने "भारत जापानी मित्री संधि" की स्थापना की। उस संगठन ने जापानी और भारतीयों में सहृदयता तथा मित्र भाव उत्पन्न करने का प्रथमनीय काय किया। आज तक जापान के भारतीय और जापानी

उसकी सेवाया को आदर के साथ मान करत हैं। उस सगठन को खडा करने तथा बाद को उनका संचालन करने में रासबिहारी बोस को जापान के विभिन्न भागों में भ्रमण करना पडा। वे जापानी भाषा धारा प्रवाह बोलत थे। जब वह जापानी भाषा में जापानिया को भाषण देत थे तो जापानी श्रोता मंत्र मुग्ध होकर उनके भाषण को सुनते थे। अपने भाषणों में भारत और जापान के प्राचीन सम्बन्धों, भारतीय सभ्यता भारतीय सभ्यता, भारत का वर्तमान जीवन, ब्रिटिश शासन की निन्द्यता तथा ब्रिटिश शासन का शोषण तथा योरोप के साम्राज्यवाद द्वारा एशिया यासिया के शोषण की कहानी अत्यन्त प्रभावशाली शब्दों में कहते थे। श्रोता उनके हृदयस्पर्शी भाषणों का सुनकर भाव-विरेक हो उठते और उनके सगठन के सदस्य बन जाते। १९३४ में रासबिहारी कोरिया गए वहा भी उन्होंने एशिया की एकता की आवश्यकता तथा योरोप में एशिया की एकता की आवश्यकता तथा योरोप से एशिया की मुक्ति पर अपने भाषणों में बल दिया। उनके उपासकान इतने प्रभावशाली होते थे कि कोरिया के बुद्धिवादी तथा मुसलमान लोग उनके प्रशंसक बन गए। रासबिहारी वास ने कोरिया के बुद्धिवादियों को अपने भाषणों से बहुत अधिक प्रभावित किया।

केवल एशिया यासिया का श्वेतांग लोगो से मुक्ति पाने के लिए रासबिहारी बोस न सगठन ही खडा नहीं किया उसके लिए उन देशों में जाकर भाषण ही नहीं दिए उनके साम्राज्यवाद के विरुद्ध जागृत ही नहीं किया और उन देशों से सम्पर्क ही स्थापित नहीं किया वरन् उन्होंने अपनी लेखनी से एशियाई लोगो को अपनी स्थिति को सुद्ध करने के लिए तथा साम्राज्यवाद के जुगल से निकलने के लिए प्रेरणा दी।

रासबिहारी वास जापान की प्रमुख मासिक पत्रिका "जापान तथा जापानीज" का प्रमुख लेखक थे। "यू एशिया" पत्रिका का तो वे स्वयं सम्पादन करत थे। वे एशियन रिव्यू के सम्पादन विभाग में काम करते थे। यूएशिया ब्रिटिश नीति की ऐसी कठोर आलोचना करती थी कि भारत सरकार ने उसका भारत में प्रकाश बन्द कर दिया था।

रासबिहारी वास लेखनी के धनी थे। उन्होंने एशियाई देशों तथा विशेषकर भारत के सम्बन्ध में बहुत अधिक लिखा। यही नहीं कि उन्होंने एशिया तथा विशेषकर भारत के सम्बन्ध में बहुत अधिक लिखा वरन् उनकी लेखनी से जो साहित्य निकला वह अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। उन्होंने भारत के सम्बन्ध में जो बड़ी समस्याओं में पुस्तकें लिखी उनमें से कुछ नीचे लिखी हैं पुस्तकें अंग्रेजी में लिखी हैं —

- १ पतोरमिन्स यूज आफ एशियन रिवल्यूशन (१९२९)
- २ विट एण्ड ह्यूमर आफ इण्डिया (१९३०)
- ३ इण्डिया आफरस (१९३३)
- ४ स्टोरीज आफ इण्डियन फ्यूचर (१९३५)
- ५ इण्डिया इन रिवल्यूशन (१९३६)
- ६ विक्टरीज आफ यंग एशिया (१९३७)
- ७ इण्डिया काइज (१९३८)
- ८ भगवत गीता (१९४०)
- ९ ट्रिजिक हिस्टरी आफ इण्डिया (१९४२)
- १० दी रामायण (१९४२)
- ११ इण्डिया आफ इण्डियन (१९४३)
- १२ लास्ट साग १३ बोस अपील्स (१९४४)

अमेरिका ने चियांगमाई शेक को अपन प्रभाव में लाने के लिये उसको सैनिक सहायता दी। चियांगमाई शेक अमेरिका के प्रभावित हो गया। जापान ने द्वारा

अमेरिका का विरोध किया। अमेरिका द्वारा सैनिक सहायता के विरोध स्वरूप जापान ने चीनी सेना पर गोली बर्षा की अस्तु जापान चीन मध्य का विस्तार हुआ। रासबिहारी बोस ने टोकियो में भारतीय स्वतंत्रता मण्डल का गठन किया और उसने मंच न घापणा की कि एशिया एशियावासियों के लिए है, श्वेत लोगों को बहा रहने का कोई अधिकार नहीं है। श्वेत लोगों को अपने देश जाना चाहिए।

२८ अक्टूबर, १९३६ को रासबिहारी बोस ने अखिल एशियाई तहलण सभ की मीटिंग टोकियो में बुलाई और उसमें भी एशिया, एशियावासियों की प्रभावशाली आवाज उठाई। उस सम्मेलन में भारतीय, थाई, इंडोनेशियन, मंगोलियन तथा अरब प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

५ अक्टूबर, १९४१ को जापान तथा अमेरिकन तथा एंग्लोगुट में युद्ध छिड़ गया। जापानी की नौ सेना न पलहारबर पर आक्रमण कर दिया तथा अमेरिका की पसपिक सेना को नष्ट कर दिया। पलहारबर तथा वहा स्थिति अमेरिकन सेना को नष्ट करके वह मलाया में उतरी।

रासबिहारी बोस जो ब्रिटेन के विरुद्ध जापान में बहुत दिनों से प्रचार कर रहे थे। उ हे यह अनुकूल अवसर मिला और उ होने अपने मित्रों को तथा सहयोगियों-डॉ. एस. देशपांडे, गुसा, सिंगम, रामभूति, नारायण तथा अन्य सहयोगियों के सहयोग से २६ दिसम्बर, १९४१ को टोकियो में एक मीटिंग बुलाई। उस सभा में उ होने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की कि विश्व युद्ध के कारण भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त होने का स्वयं अवसर मिला है। उसे उसका लाभ उठाना चाहिए और अपनी स्वतंत्रता को प्राप्त करना चाहिए।

१५ जनवरी, १९४२ को टोकियो में रासबिहारी बोस ने एशियन इटरनेशनल सगठन की मीटिंग बुलाई और एशियाई देशों को अमेरिका और इंग्लैंड को एशियाई देशों से निकाल बाहर करने का जोरदार शब्दों में आह्वान किया। २४ जनवरी, १९४४ का उहाने एशियाई प्यूपिर्स काफ़ेंस की सभा बोसाका में बुलाई और उसमें भी अमेरिकन तथा ब्रिटिश शक्ति को एशियाई देशों से निकाल बाहर करने के लिए अपील की।

रासबिहारी बोस द्वारा एशियाई देशों की स्वतंत्रता के लिए ऐसा परिश्रम करते देख जापान के क्रांतिकारी नेता तोयामा ने उनका परिचय जापान के सैनिक अधिकारियों तथा सेना के मुख्य कार्यालय से कराया दिया।

२७ फरवरी, १९४२ को रासबिहारी बोस ने सत्रो होटल में पत्रकारों के द्वारा भारतवासियों के नाम नीचे लिखी अपील निकाली "भारत के बंधुओं पिछले एक सौ वर्षों में हमने भारत में तथा विदेशों में ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध करते हुए हजारों देश-भक्त भारतीयों को देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान चढ़ा दिया। अब जापानी सेना ब्रिटेन के विरुद्ध हांगकांग और मलाया में युद्ध कर रही है। हम उनके इस प्रयत्न से बहुत अधिक प्रभावित हुए तथा द्रवित हैं। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप भारत को भारतीयों के लिए सुरक्षित करन उसे स्वतंत्रता करन के लिए इस प्रयत्न में हमारा

माय दीजिए। इस प्रयत्न में साथ देने के लिए हम सब को तयार हो जाना चाहिए और अपने समान हित के लिए साथ साथ लूच करना चाहिए। हम भगवान् कृष्ण के द्वारा दी गई निष्काम काम की शक्ति, भगवान् बुद्ध द्वारा बताई हुई निस्वाद्य मन तथा भावना तथा शिवाजी तथा गुरु गोविन्द सिंह की शिक्षा को ध्यान में रखकर देश का स्वतंत्र करने के इस महान् सद्य को सफल बनाने में लग जाना चाहिए।”

यह अपील एशिया भर में प्रचारित की गई जिससे कि प्रत्येक क्षेत्र से माथी इण्डियन इन्डिपेंडेंस लीग के प्रधान कार्यालय में आकर जमा हो सकें। इनका परिणाम यह हुआ कि सभी प्रदेशों से भारतीय इण्डियन इन्डिपेंडेंस लीग के प्रधान कार्यालय टोकियो में जमा हुए और लीग की शाखाएँ सभी एशियाई देशों में गठित की गईं।

दक्षिण पूर्व एशिया के सभी देशों में जो कि जापान के अधिभार में आ गए थे उनमें भारतीय के जीवन, उनकी जायदाद तथा धन, उनकी इज्जत की रक्षा करने का कामबिहारी ने प्रशस्तोद्यम किया। उनको भय था कि वही जापानी सेना के सैनिक भारतीयों को शत्रु देश के व्यक्ति मानकर उनका साथ दुष्प्रवृत्त न करें और उनका दंडित न करें अस्तु उन्हां जापानी सेना के प्रधान सेनापति से इन आशय की एक मधि की कि जिन प्रदेशों पर जापान का सैनिक अधिभार हो जाय उस क्षत्र में सभी भारतीय जन एक मित्र राष्ट्र के निवासी स्वीकार किए जावें और उनसे मित्र राष्ट्र के नागरिक का व्यवहार किया जाय। इस प्रकार दक्षिण पूर्व एशिया में रहने वाले बीस लाख भारतीय की उन्हां रक्षा की और वे भारतीय सैनिक जा कि युद्ध में बन्दी बनाए गए वे बन्दी तो बनाए गए पर युद्ध में बन्दी नहीं माने गए। मजर फ्यूजीवारा को समझकर इस उद्देश्य से भेजा गया कि वे इस बात का पना लगावें कि बड़ा भारतीय क्रान्तिकारियों और विद्रोहियों को संगठित करने की सम्भावनाएँ हैं। वह श्री प्रीतम सिंह से मिले और बार बार भारतीय क्रान्तिकारियों से बातचीत करने के परिणाम स्वरूप वहाँ इण्डियन इन्डिपेंडेंस लीग स्थापित हो गई।

जब स्लिम नदी के युद्ध में ब्रिटेन की पराजय हो गई तो पीछे हटने वाली भारतीय सेनाओं की रसद तथा युद्ध सामग्री उनके पास पहुँचना कठिन हो गया। जापानी सेनाओं के अधिभार में वह क्षेत्र आ गया। उस समय तक जापान ने काता-लाम्बुर को विजय कर लिया। उसका परिणाम यह हुआ कि कई हजार भारतीय सैनिकों ने भारतीय क्रान्तिकारियों से मिल कर भारत की प्रथम राष्ट्रीय सेना का निर्माण किया। वास्तव में आजाद हिंद सेना का यह श्री गणेश था। जब सिंगापुर का पतन हुआ तो ब्रिटिश सेना ने जापानी सेना को अत्मसमर्पण कर दिया। ब्रिटिश सेना में बहुत बड़ी संख्या में भारतीय सैनिक थे। उनमें से बहुत बड़ी संख्या में भारतीय सैनिकों ने आई एन ए (आजाद हिंद सेना) में प्रवेश लेना स्वीकार किया। और आजाद हिंद सेना का संगठन किया गया।

प्रीतमसिंह ने ब्रिटिश मलाया भारतीय स्वतंत्रता सघ का संगठन किया था। वे मलाया में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के सूत्रधार थे श्री रासबिहारी बोस ने तार द्वारा उन्हें सदेश भेजा कि वे भारत को स्वतंत्र करने के उद्देश्य से टोकियो में भारतीयों का एक सम्मेलन बुला रहे है अस्तु उन्हां की इण्डियन इन्डिपेंडेंस लीग अपने प्रतिनिधि

उस सम्मेलन में १६ भाष के पूरे भेजे । यह तार पाकर प्रीतम सिंह, गुहा, मनन, स्वामी सत्यानन्दपुरी, जगन और अय्यर, इण्डियन इण्डिपेंडेंट लीग के और आजाद हिन्द सेना के मोहन सिंह, अण्णाम और गिल सिगापुर से टोकियो को चले । स गांव पर उ हाने टोकियो जान के लिए हवाई जहाज लिए । इवानुरा, पयूजीवारा, मोहनसिंह, गिल, रायवन, गुहा तथा मेनन पहले वायुयान से गए और प्रीतमसिंह, पुरी, अय्यर, अण्णाम और चिनापुरा ने दूसरा वायुयान लिया । दुर्भाग्यवश दूसरा वायुयान दुर्घटनाग्रस्त हो गया । वह नष्ट हो गया और उसमें यात्रा करने वाले यात्रियों की मृत्यु हो गई । तायामा ने उनका अंतिम संस्कार करवाया । उसमें जापान के सभी मंत्री आए उनका अतिरिक्त पत्रहू सो जापानियों ने उन भारतीय क्रांति वीरों को श्रद्धांजलि प्रदान की ।

२० मार्च, १९४२ को टोकियो के युवनी पाव में एक सम्मेलन हुआ । उस सम्मेलन में तायामा सहित तीन से सत्तर प्रमुख जापानी राजनीतिज्ञ बाईस भारतीय प्रतिनिधि आठ से अधिक भारत के गांव साहानुभूति रखने वाले जापानी उपस्थित थे । एक सप्ताह पश्चात् टोकियो के सना होटल में भारत के बाहर सभी देशों में रहने वाले भारतीयों ने अट्टारह प्रतिनिधियों की औपचारिक मीटिंग हुई । वह तीन दिन तक चलती रही उस सभा ने इंडियन इण्डिपेंडेंट लीग को मान्यता प्रदान कर दी और श्री रामबिहारी बोस का उसका नेता स्वीकार कर लिया गया ।

२६ अप्रैल, १९४२ को श्री बी एस देशपांडे, सहाय, एस सेन रावल तथा कुछ अन्य प्रतिनिधियों को साथ लेकर श्री रामबिहारी बास जापान से बगदाद गए । वहां एक ती से अधिक भारतीय प्रतिनिधि, पूर्वी तथा दक्षिणी एशिया के विभिन्न भागों से एशिया मायनर बर्मा, श्याम (थाईलैंड) मल्लेशिया, नानकिंग, शंघाई कैटन तथा हांगकांग से आए हुए थे । उस सम्मेलन के स्वागतार्थ्य श्री देवनाथ दास थे । वह सम्मेलन श्री रामबिहारी बास की अध्यक्षता में १ जून, १९४२ को "आरम्भ हुआ । उस सम्मेलन में रामबिहारी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रतिनिधियों से कहा कि हम याद रखना चाहिए कि 'हमारा एक अविभाज्य राष्ट्र भारत है, एक शत्रु शक्ति है और एक लक्ष्य पूर्ण स्वतंत्रता है ।"

उस सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधियों ने भारतीय सैनिक तथा भारतीय नागरिक तथा वाद को जो सना में भर्ती किए जावे । उनकी आजाद हिन्द सेना (आई एन ए) गठित करने का प्रस्ताव पारित किया । उस सेना का एकमात्र उद्देश्य भारत को स्वतंत्र करना था ।

उस सम्मेलन में इंडियन इण्डिपेंडेंट लीग का एक विधान भी स्वीकार किया गया । विधान के अनुसार उसकी एक कौंसिल आफ एक्शन, एक प्रतिनिधि समिति प्रादेशिक शाखाओं और स्थानीय शाखाओं बनाई गई । लीग के प्रथम अध्यक्ष श्री रामबिहारी बोस थे और कौंसिल आफ एक्शन में चार सदस्य थे । श्री एन रायवन (पनाग) कप्टेन मोहन सिंह के पी के मेनन और सप्टीमेंट कनल गिलानी आजाद हिन्द सेना सीधे कौंसिल आफ एक्शन के अधीन थीं ।

वह सम्मेलन नौ दिन तक चलता रहा । सम्मेलन ने इस आशय का प्रस्ताव भी पारित किया कि जापान की सरकार को इस आशय की घोषणा कर देनी चाहिए

कि जो भारतीय जापान द्वारा विजित प्रदेशों में रह रहे हैं उन्हें शत्रु राष्ट्र के नागरिक न माना जावे जब तक कि वे कोई ऐसा कार्य न करें जो जापान के हितों के विरुद्ध हो या भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के विरुद्ध हो। और भारत में तथा अन्य देशों में जा भारतीयों की सम्पत्ति हो, उसे शत्रु राष्ट्र की सम्पत्ति न माना जावे।

उस समय नेताजी सुभाषचंद्र जर्मनी में थे और भारत को स्वतंत्र बनाने के लिए जर्मनी की सहायता से प्रयत्नशील थे। उन्होंने जर्मनी से श्री रासबिहारी बास को बर्खास्त और शुभकामनाएं भेजी।

श्री रासबिहारी बास की जापान में बहुत अधिक प्रसिद्धता थी। जापान के अग्रणी व्यक्ति उनका बहुत आदर और सम्मान करते थे। तोगामा जो जापान के महान् क्रांतिकारी र जनोत्तिक नेता था। उनके बड़े प्रशंसक थे। उनका मानना था कि जब तक भारत ब्रिटेन के अधीन है वह ब्रिटिश साम्राज्यवाद का एक अंग है तब तक जापान की युद्ध में अंतिम और निर्णायक विजय नहीं हो सकती। इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के माध्यम से भारतीय क्रांतिकारियों का जापान की सना के उच्च अधिकारियों से तथा नागरिक प्रशासन के सर्वोच्च राजनीतिको से निबट या सम्बन्ध स्थापित हो गया था। बहुत से जापानी इस आवश्यकता को अनुभव करते थे कि जापान को भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की सहायता करना चाहिए। इस वातावरण का प्रभाव यह हुआ कि जनरल ताजो जापान के प्रधानमंत्री ने जापान की पार्लियामेंट (डाइट) में यह घोषणा कर दी कि जापान की सरकार भारतीयों को अपने देश का परतंत्रता से छुटकारा दिलाना के लिए स्वतंत्रता आंदोलन का सफल बनाने और भारत को स्वतंत्र करने में हर सम्भव सहायता देगी।

१ सितम्बर, १९४२ का आजाद हिंद सेना (आई एन ए) की औपचारिक रूप से स्थापना हुई। इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के अध्यक्ष श्री रासबिहारी बास ने कप्तान मोहन सिंह को कप्तान से पदावृत्ति कर जनरल नियुक्त किया और आजाद हिंद सेना का सनापति नियुक्त किया। आधुनिक ढंग पर सेना का संगठन किया गया। सेना के सभी विभागों को संगठित किया गया। अंग्रेजी के सभी शब्दों का हटाकर हिंदी के शब्दों को प्रचलित किया गया जनरल ए सी चटर्जी सेना के चिन्तित विभाग के अध्यक्ष थे। मान प्रकाश तथा संस्कृत विभाग द्वारा भारतीयों में ईश्वर में विश्वास तथा मानवजाति के प्रति प्रेम की भावना को पाठों का प्रचार किया जाना लगा। भारतीयों में अनुशासन, समय की महत्ता ऊंचे चरित्र की आवश्यकता मातृभूमि के प्रति गहन प्रेम और श्रद्धा, एकता विश्वास, और बलिदान तथा त्याग की भावना की शिक्षा दी जाने लगी।

१९४२ के पतझड़ काल में लीग की कार्यकारिणी समिति में एक विवाद उठ पड़ा हुआ। श्री रासबिहारी उनके कारण चिन्तित थे। सिंगापुर की समिति श्री रासबिहारी के विरुद्ध थी। मोहन सिंह, गिल और गिलानी कार्य समिति के चुने हुए सदस्य थे। उनको आजाद हिंद सेना ने चुना था। गोही और मेहन की भांति उन्हें ही के अपना नेता मानते थे।

यद्यपि सिंगापुर की समिति रासबिहारी बास की विरोधी थी। परंतु पनांग

समिति के राधवन आदि सब ही रास बिहारी को ही नेता स्वीकार करते थे ।

इस विरोध तथा विवाद का वास्तविक कारण जापानी सेना द्वारा इंडियन इंडिपेंडंस लीग के प्रति अपनाया गया शवास्पद दृष्टिकोण था । जापानी सेना का दृष्टिकोण था कि आजाद हिंद सेना जापानी सेना की सहायक सेना है जबकि बगदाव सम्मेलन में जा ६३ वार्ते तय की गई थी । उनमें आजाद हिंद सेना कौंसिल आफ एक्शन के आधीन थी । इस विवाद का कारण श्री रासबिहारी बोस नहीं थे ।

कौंसिल आफ एक्शन के अध्यक्ष होने के नाते १९४३ के अपने वक्तव्य में श्री रासबिहारी बोस ने सारे मामले का स्पष्ट कर दिया था । उन्होंने सभी देशभक्त भारतीयों को इस स्वतंत्रता युद्ध में सहयोग देने के लिए आह्वान किया । उनके आह्वान पर प्रीतम सिंह ने मलाया युद्ध में भाग लिया था । १२ दिसम्बर, १९४१ को मोहन सिंह अपने थोड़े से साथियों के साथ प्रीतम सिंह से आकर मिले क्योंकि प्रीतम सिंह सैनिक अधिकारी नहीं थे और मजर फ्यूजीबारा जापानी अधिकारी थे व भारतीय सैनिकों के बारे में अधिक जानकारी नहीं रखत थे अस्तु भारतीय सेना का प्रशासन तथा कमांड मोहन सिंह का दे दिया गया । कौंसिल आफ एक्शन के चुनाव के पूर्व मोहन सिंह ने अपने भाषण में जो वक्तव्य दिए थे वस्तुस्थिति के सम्बन्ध में भ्रामक प्रतीत होते हैं । उन्होंने शपथ पूर्वक कहा कि भारतीय सेना के अविनाश सैनिक बिना किसी घमकी या श्वाब के स्वेच्छा से इन आंदोलन में आना चाहते हैं । मजर फ्यूजीबारा ने कहा और लिखा है 'कि मैं यह जानकर अत्यंत दुखी हुआ कि भारतीय सेना के अधिकारियों तथा सैनिकों को आंदोलन में साथ देने के लिए दबाया गया और उन पर अत्याचार किए गए । जिसके बोधी एक मान मोहन सिंह थे । कुछ को गोली मार ली गई तथा अन्यो पर अत्याचार किए गए । कुछ को बंदी शिविर भेज दिया गया और बड़े-बड़े किया गया । मोहन सिंह ने दबाव डाल कर उनको आंदोलन में लाने का प्रयत्न किया ।

नवम्बर के अंत में यह बात हुआ कि आजाद हिंद सेना का सेनापति होने के नाते मोहन सिंह ने जापानी मेनाध्यक्ष इनाबुरा किबन से आजाद हिंद सेना के कुछ सैनिकों को सैनिक प्रशिक्षण के लिए बरमा भेजना का तय कर लिया । मोहन सिंह ने अग्रिम सैनिक दल बिना कौंसिल आफ एक्शन की जापान के बरमा भेज दिया । वास्तविकता यह थी कि कौंसिल आफ एक्शन को आजाद हिंद सेना के बारे में बिल्कुल अंधकार में रखा गया । मोहन सिंह बिना कौंसिल आफ एक्शन से जापान लिए मन माने ढंग से आजाद हिंद सेना के बारे में निरायण करत थे । विधान के अनुसार उन्हें कौंसिल आफ एक्शन के आदेशानुसार उसकी आधीनता में कार्य करना था परंतु वे इस प्रकार का आचरण करते थे मानो वे ही आजाद हिंद सेना के सर्वोच्च हैं । उन्होंने सेना के अधिकारियों तथा सैनिकों व ऊपर यह प्रभाव डालने का प्रयत्न किया कि सेना उनकी ही और वे ही उसके सर्वोच्च हैं ।

कौंसिल आफ एक्शन की अंतिम मीटिंग में रासबिहारी बोस ने मोहन सिंह पर यह दबाव डाला कि कुछ प्रश्नों के सम्बन्ध में जापानी सेना तथा सेना से तुरंत सफाई जाय । परंतु यह सम्भव नहीं था क्योंकि मलाया में कोई अधिकारी नहीं था जो

का उत्तर दे सकता ।

मोहन सिंह जापानी सेना अधिकारिया का उन प्रश्ना का उत्तर देने के लिए दबाव नहीं डालना चाहते थे व उन प्रश्ना का उत्तर न मिलने पर मोहन सिंह तथा ग्रय दोना ने कौंसिल आफ ऐक्शन में त्यागपत्र दे दिया । वप्टेन गिलानी क्योंकि मोहनसिंह के नीचे आजाद हिंद सेना के अधिकारी थे उनके लिए मोहन सिंह की इच्छा के अनुसार काय करने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं था । क्याकि मेनन का कौंसिल आफ ऐक्शन में चुनाव मोहन सिंह के कारण हुआ था । वे भी त्यागपत्र देने पर विवश थे ।

रासबिहारी बोस ने लिखा है कि मोहन सिंह ने केवल मेरे निर्देशन की उपेक्षा ही नहीं की वरन अपने पत्र में जो उहाने १३ दिसम्बर, १९४२ को मुझे लिखा यह दावा किया कि आजाद हिंद सेना के सनिका ने केवल मेरे (मोहन सिंह) नाम से शपथ ली है । वे केवल मेरे प्रति भक्ति और आस्था रखते हैं ऐसी दशा में आजाद हिंद सेना इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के माध्यम से मातृभूमि की कोई सेवा नहीं कर सकती । अस्तु सेना इंडियन इंडिपेंडेंस लीग से अपना सम्बन्ध विच्छेद करती है । यही नहीं मोहनसिंह बनल इवानुरा से मिले और उह इस जाशय का पत्र दिया । उस पत्र में लिखा था कि इंडियन नेशनल आर्मी उसकी निज की है और वे उसको भग करना चाहते हैं । ऐसी परिस्थिति में रासबिहारी बोस ने लिखा है कि मुझे अत्यन्त कष्टकर और खेद जनक निराश लेना पडा कि मोहन सिंह को आजाद हिंद सेना के प्रधान सेनापतित्व पद से हटाया जावे । उसके अतिरिक्त उस परिस्थिति में और कोई विवल्प नहीं था ।

क्याकि मोहन सिंह ने आजाद हिंद सेना को भग करने का पड्यत्र किया था । रासबिहारी ने मोहन सिंह को जनरल से पद अवनत कर कप्टेन कर दिया । और २३ दिसम्बर, १९४२ को उनको तथा एन एस गिर को गिरफ्तार किए जाने की आज्ञा निवाला दी ।

जब याद की नेताजी सुभाषचन्द्र बास ने आजाद हिंद सेना आई एन ए की सर्वोच्च कमान सभाकी । उ होने मोहन सिंह के मामले को पुन देखा और श्री रासबिहारी बोस के निगम को स्वीकृत किया । उन्होंने मोहन सिंह के सम्बन्ध में नीचे लिखा 'आजाद हिंद सेना को भग करने का मोहनसिंह का पड्यत्र तथ्यो से सिद्ध होता है अतएव उनको सेना में पुन लेने का प्रश्न ही नहीं उठता । उनके इस नोट को आजाद हिंद सरकार के मंत्रिमंडल ने स्वीकार कर लिया ।

अगले दो महीनों में इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के ऊपर जो विद्रोह का तूफान आया वह शांत हो गया और इंडियन इंडिपेंडेंस लीग तथा आजाद हिंद सेना पुनसंगठन किया गया । फरवरी १९४३ में जनरल भासले को आजाद हिंद सेना का कमांडर नियुक्त किया गया । रासबिहारी बोस, राघवन, मेजर जनरल भोसले और नारायण स्वामी को कौंसिल आफ ऐक्शन का सदस्य चुना गया ।

अप्रैल १९४३ में तिरापुर में एक सम्मेलन में रासबिहारी बोस को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत करने का अधिकार दिया गया । उन्होंने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का नाम प्रस्तावित किया । एक सनिक प्रतिनिधि ने इस सम्बन्ध में एक प्रश्न उनसे पूछा कि यदि अख्यक्ष ने देश के हित में काय नहीं किया अथवा योग्य उत्तराधिकारी नहीं चुना तो क्या होगा । रासबिहारी बोस का उत्तर एक देशभक्त

प्रातिकारी का उत्तर था। उन्होंने एक देशभक्त सच्चे प्रातिकारी की भांति स्पष्ट उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण आदालत प्रातिकारी आदालत है अस्तु यदि अध्यक्ष अपने कर्तव्य से च्युत हो जाता है और प्राति की सच्ची भावना से दश या दाय नहीं करता तो उसको गोली मार दी जाती चाहिए। उससे अनुयायियों को उसको मार देने में तनिक भी सकोच नहीं होना चाहिए। अपने प्रातिकारी लक्ष्य को तिलाजलि देने वाला अध्यक्ष प्राण तण्ड के योग्य है। श्री रासबिहारी बोस ने ऊपर लिखे वाक्यों से उस सम्मेलन में आए हुए सभी लोग अत्यंत प्रभावित हुए और उनकी भावना में सभी को आशावित कर दिया।

उससे पूर्व एक सभा में श्री रासबिहारी बोस से पूछा गया कि क्या वे भारतीय हैं? फिर उन्होंने अपने पुत्र को जापानी शाही सेना में भर्ती होने दिया। उन्होंने उत्तर दिया कि मेरा पुत्र शस प्रतिशत भारतीय है और वह भारत को स्वतंत्र बनाने के प्रयास में किसी से भी पीछे नहीं रहने वाला है क्योंकि मेरा पुत्र जापान में उत्पन्न हुआ है वह जापानी नागरिक ही गया इस कारण उसे जापानी सेना में भर्ती होना पडा। इस देश का कानून यह है कि जो इस देश में जन्म लेता वह इस देश का नागरिक होगा। पर मुझे पूरा विश्वास है कि जब वह समय आवेगा तो मेरा पुत्र आजाद हिंद सेना का मन्त्र बन कर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध तत्तवार उठाकर भारत के स्वतंत्र युद्ध में भाग लेगा।

रासबिहारी बोस की ऊपर लिखी स्पष्टोक्ति से ब्रिटिश साम्राज्यवाद के एजेण्ट जो उनके सम्बन्ध में जन समाज में भ्रातिया फलाते थे वे निरुत्तर हो गए और उस महान् देशभक्त और प्रातिकारी का उज्ज्वल स्फटिक मणि के सामने निरकलक प्रातिकारी चरित्र अपने पूण तेज और प्रकाश से उद्भावित हुआ। वे एशियाई देशों के सभी देशों के भारतीयों के हृदय मन्नाट और श्रद्धा के के द्र बन गए।

जब रासबिहारी बोस ने देखा कि भारत के राजनीतिज्ञ तथा भारतीय कांग्रेस जापान के घुरी राष्ट्रों से मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में ब्रिटेन तथा उसके मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध कार्य करने की नीति की निंदा करते हैं और रासबिहारी बोस की नीति को स्वीकार करने के लिए तयार नहीं है तो उन्होंने जापान तथा पूर्विय एशिया में बसे भारतीयों को समठिन कर उनके द्वारा अपनी नीति का प्रचार करने का भागीरथ प्रयत्न किया।

नवम्बर १९३८ में रासबिहारी ने एक लोक घोषणा पत्र प्रकाशित किया जिसमें उन्होंने भारतीय राजनीतिज्ञ तथा भारतीय कांग्रेस की विदेशी नीति में परिवर्तन करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने अपने लोक घोषणा पत्र में लिखा 'कि कुछ वर्षों से विशेषकर चीन-जापान संघर्ष छिड़ने के उपरांत कतिपय भारतीय राजनीतिज्ञों में यह फैशन बन गया है कि वे घुरी राष्ट्रों की बिना सोचे बटु निन्दा करते हैं। वे नहीं जानते कि वे इस बुद्धिमत्ताहीन कार्य से, वे भारत की स्वतंत्रता को कितनी अधिक हानि पहुंचा रहे हैं। उनके इस कार्य में वे भारत के शत्रु-विषम देश बन रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है भारत के कितने देश मित्र बनें उतना ही भारत का हित होगा। उन्हें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि 'ब्रिटेन के शत्रु भारत के मित्र

हैं। "वे लोग यह भ्रूण जात है कि सैनिक दृष्टि से प्रथम श्रेणी के बलवान देशों को भारत का शत्रु बनाने से वे ब्रिटेन की सहायता करने हैं और भारत में ब्रिटेन शासन को बल देते हैं।"

जापान द्वारा गेंगो सनसनी के विरुद्ध युद्ध छेड़ने से तथा मात दिसम्बर, १९४१ का पत हारवर पर बम डालकर जापान ने एशिया के देशों के पश्चिमीय राष्ट्रों के साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघन म एन गया परिच्छेद जोड़ दिया है। जापान द्वारा इंग्लैंड और अमेरिका के विरुद्ध युद्ध मगम से वे शक्तियां विकसित हुईं। जिनका रास बिहारी भारत की स्वतंत्रता के लिए उपयोग करने का प्रयत्न करना चाहते थे।

उन्होंने इस सम्बन्ध में जो लिखा है उनमें शब्दों में ही पढ़िए। "अन्तर्राष्ट्रीय क्षम में पिछले दस वर्षों में जो घटायें घट रही थी वह इस बात की घोषणा थी कि इस प्रकार का विश्व युद्ध अनिज्वाय है और यह स्पष्ट लगना था कि भारत की स्वतंत्रता का प्रश्न तभी सफलता पूर्वक हल हो सकेगा जब जापान ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध शस्त्र धारण करेगा। इस महत्वपूर्ण तथ्य को ध्यान में रखकर तथा अपनी मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्य का विचार करके हम लग ८ दिसम्बर, १९४१ को टोकियो के रेनबोमिल में मिले और इस महत्वपूर्ण समय में हम क्या करना चाहिए इस पर विचार किया। मेरे साथियों ने एक कमटी बनाई और मुझसे आदोलना का नेतृत्व करने को कहा जिसे मैंने प्रसन्नता से स्वीकार किया। हमने सब प्रथम पूर्व एशिया में भारत-शीमा की समीक्षा करने का निश्चय किया। जापान तथा अ प पूर्व के एशियाई देशों में भारतीयों की समाज आंदोलन की गई और उनमें भारत की स्वतंत्रता करने की घोषणा करने की आवश्यकता पर बल दिया गया। यह भी तथ्य उद्घोषित किया गया कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विनाश करने के लिए भारत की स्वतंत्रता अत्यन्त आवश्यक है।

रासबिहारी ने २६ दिसम्बर, १९४१ को टोकियो के रेलवे होटल में जापान के चार नगरों को, ओपाला, याकोहाम तथा टोकियो के पचास प्रतिनिधियों का जहाँ भारतीय बसे हुये थे एक सम्मेलन बुलाया। उस सम्मेलन में एक प्रस्ताव पारित किया गया। उस प्रस्ताव के द्वारा भारतीयों से कहा गया कि वे स्थिति की गम्भीरता को समझें तथा भारत के सामने जो खतरा है उसको अनुभव करें। रासबिहारी ने कुछ प्रतिनिधि शर्माई भेजे और कहा भी भारतीयों की सभा बुलाकर इसी प्रकार का प्रस्ताव पारित किया गया। भारतीयों की यह सभा शर्माई के मग में ऐमोसियेशन के हॉल में हुई थी।

रासबिहारी केवल भारतीयों को समीक्षा करके ही भात नहीं हो गए। उन्होंने जापान के उच्च सैनिक तथा प्रशासनिक अधिकारियों से सम्पर्क किया और उनको बतलाया कि जापान ने जिस उद्देश्य से ब्रिटेन और अमेरिका के विरुद्ध युद्ध छेड़ा है तभी पूरा हो सकता है जब भारत स्वतंत्र हो। अतएव अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए जापान को भारत की स्वतंत्रता के सघर्ष में उसे सहायता करना चाहिए। रासबिहारी ने जापान के उच्च अधिकारियों से स्पष्ट कहा कि जब तक ब्रिटिश साम्राज्यवाद भारत में विद्यमान है तब तक जापान की इस युद्ध में अन्तिम विजय की प्राप्ति नहीं की जा

सकनी रामबिहारी के प्रयत्न सफल हुए। जापान के तत्कालीन प्रधानमंत्री जनरल तोजो ने जापान की इम्पीरियल डाइट (प्रतिनिधि सभा) में घोषणा की कि जापान सरकार भारत को स्वतंत्र करने में सहायता करेगी। इस वाक्य में रामबिहारी बोस के मुख्य सहायक स्वामी सत्यानंद पुत्री (जो पहले प्रफुल्ल सेन के नाम से जाने जाते थे) और जो अनुबोलीन समिति (भारत के प्रमुख नातिनारियों का संगठन) और सरदार प्रीतम सिंह थे। दोनों भारत को स्वतंत्र करने के लिए बैंगकाक (श्याम) को अपना मुख्य केंद्र बनाकर राजनीति का कार्य कर रहे थे।

जब जापान सरकार ने भारत के मुक्ति आंदोलन की सक्रिय सहायता करना स्वीकार कर लिया तो रामबिहारी ने मार्च, १९४२ में टोकियो में घोर पूजा, १९४२ में बैंगकाक में भारतीयों के दो सम्मेलन बुलाए और यह निश्चय किया कि भारत से वापस रहने वाले भारतीयों को भारत की स्वतंत्रता का युद्ध लड़ें। बैंगकाक सम्मेलन में उसी कायकारिणी (बोसिल आफ ऐजशन) का गठन किया गया और रामबिहारी बोस सर्वसम्मति से उसके अध्यक्ष चुने गए। आजाद हिंद सेना जिसका विभाजन १९४१ में गठन किया गया था उसका पुनर्गठन किया गया और उसको बॉसिल आफ ऐजन्स के नियंत्रण में रखा दिया गया। इस प्रकार राष्ट्रीय भारत की स्वतंत्र सेना का गठन हुआ और उसके मुख्य प्रवक्ता रामबिहारी बोस थे। रामबिहारी ने इस समय में लिखा "मेरा इस समय में निःसन्देह हिंद सेना एक स्वतंत्र राष्ट्र की सेना है जापान सरकार से स्पष्ट समझौता हो गया था। यही कारण था कि मेजर फ्यूजीवारा ने भारत के उनके माथ मनाया युद्ध में सहयोग मांगा था और हमारे स्वर्गीय मित्र प्रीतम सिंह

प्रीतम सिंह ने आ मिले। सरदार प्रीतम सिंह मणि रामबिहारी तभी थे। उनको सेना संचालन का कोई अनुभव नहीं था। वे प्रशासनिक अधिकारी थे और मेजर फ्यूजीवारा जापानी मंत्रि अधिकारी थे। वे प्रशासनिक अधिकारी थे और मेजर फ्यूजीवारा मोहन सिंह का दे दिया गया।

बैंगकाक सम्मेलन के उपरांत रामबिहारी बोस अपना दृष्टिकोण तीव्र और भाजाद हिंद सेना के कार्य में ऐसी लगन से जुट गए कि उन्हें अपने स्वास्थ की चिंता नहीं रही। वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का प्रारंभिक समय राजनीति का एक महत्वपूर्ण अंग मानते थे। जब दूसरा महायुद्ध आरम्भ हुआ और उसका विस्तार आरम्भ १९४१ में मुद्र पूव में हो गया तब नाज आर्यन की स्वतंत्रता के लिए आजाद हो उठी। वे यह विश्वास नहीं करते थे कि अहिंसा के द्वारा भारत स्वातंत्र्य प्राप्त हो सकेगा। वे चाहते थे कि जापान जर्मनी के साथ मिलकर जो गिटेन और प्रमोन्टा के साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध कर रहा है। भारत को उसका उपयोग अपनी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए करना चाहिए। यही कारण था कि जापानी सरकार से उन्होंने 'बासिल आन रेकनन' को भारतीय स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में स्वीकार करवाया। फ्यूजीवारा रामबिहारी का साथ करने में तैयार था। उसी समय जनरल मोहन सिंह जिन्हें रामबिहारी ने 'बाजाद हिंद सेना का कमांडर बनाया था। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षों के बनीभूत होने

'म्राजाद हिंद सेना' को अपनी जिज की सेना कहने लग गौर वे ही उसने सर्वोत्कर्ष है इस प्रकार का आचरण करने लग ।

रासबिहारी बोस एक जन्मजात यादव थे और उ हाने अपना जीवन मातृभूमि का स्वतंत्र करने के लिए अग्रणी कर दिया था । अस्तु उ ह जापान की आग्रिकता मिलते ही उ हाने भारत की स्वतंत्रता के लिए काम करना आरम्भ कर दिया । उ होन १९२४ म इंडिया इंडिपेंडेंस लीग का संगठन किया । उ होन इंडिया इंडिपेंडेंस लीग का प्रधान कार्यालय टानियो मे रखा और पूव एशिया म उसकी शाखायें स्थापित कर दी । उनका इम संगठन को खटा करन का एकमात्र उद्देश्य भारत की स्वतंत्रता का लिए कार्य करना था । ये सत्रह वर्षों तक इस संगठन के द्वारा पूव एशियावासियों का भारत की शासनीय राजागि दशा स जवगत करात रहें और इस बात पर बल दित रहें कि एशिया तभी राजनीतिक दृष्टि से जीव सैनिक दृष्टि से बलवान बन सकेगा । जबकि भारत स्वतंत्र बना जावेगा । ये एशिया के उदय के लिए भारत को स्वतंत्र और शक्तिशाली बनाना आवश्यक मानते थे । "एशिया एशियावासियों के लिए" का नारा उ हाने ही राय प्रथम दिया । यह उाका ही प्रयत्न था कि एशियावासी जा गहरी दासता की निन्दा म पड़े थ जाग उठे और पश्चिमीय साम्राज्यवाद का एशिया से निकाल बाहर करवा की बात माचा लग । यह बोस के प्रयत्नों का ही परिणाम था कि एशिया के राजनीतिक मद् मानत लग कि महान एशिया का निर्माण करन के लिए भारत की स्वतंत्रता निता त आवश्यक है । उ हाने भारत द्वारा जापान के साथ राज-नितिक स्तर पर सहयोग बढ़ान का प्रसनीय काय किया । वे पक्के यथायवादी थे । ब्रिटेन के शत्रु का वे भारत का हित और मित्र मानते थे फिर वह चाहे किसी राजनीतिक नीति और आदर्शवाद को मानन वाला हो ।

यही कारण है कि १९१० के उपरांत जब जापान की सैनिक शक्ति आश्चर्यजनक ढंग से बढ़ी यह ससार का सैनिक दृष्टि से बलशाली राष्ट्र बन गया और १९३७ मे वह धुरी राष्ट्रों के संगठन का सदस्य बन गया तो रासबिहारी बोस मन म प्रसन्न हुए क्योंकि धुरी राष्ट्रों का संगठन ब्रिटेन के साम्राज्यवाद के विरुद्ध था । ससार की राजनीति म यह एक महत्वपूर्ण घटना थी । अंतर्राष्ट्रीय जगत मे धुरी राष्ट्रों के इस ब्रिटेन विरोधी संगठन म उ ह अपनी मातृभूमि भारत की मुक्ति की सम्भावनाओं के दशन हुए इस कारण के बहुत प्रसन्न थे । उनसे राजनीतिक दशन म ब्रिटेन का शत्रु भारत का मित्र था । ये कल्पना जगत मे विचरण करन वाले पुस्तकीय राजनीतिक दशन तथा सिद्धांतों को मानन वाले राजनीतिक नहीं थे । वे हड़ यथायवादी राजनीतिक थे । मातृभूमि का जिसमे हित हो वही उनका मा य था यही कारण था कि जब जापान द्वारा चीन के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही की गई तो मानवीय दृष्टिकोण से सब प्रश्ना को देखने वाले भारतीय राजनीतिज्ञ ने जापान की इस सैनिक कार्यवाही की निन्दा की परंतु रासबिहारी बोस ने भारत म जापान विरोधी प्रकार को भारत के हितों के विरुद्ध माना और उ हीने गुरुदेव रवी द्र नाथ टगोर को नीचे लिखा कबिल भेजा ।

भारतीय व्यापारी, विद्यार्थी तथा भारतीय आग्रिक जा जापान म निवाम फरत है आरामे पाधना करत है कि जाप काग्रेस तथा पंडित जवाहर नाथ गहट को

महा शानिकारी रासबिहारी बोस

८४

भारतीय हितो तथा भारत-जापान की मित्रता के लिए जापान विरोधी वाय करने से राके। यह केविल १० अक्टूबर, १९३७ ना या।

रासबिहारी न जापान म भारतीयो की सभाग जुलावर भारतीयो और जापानिया के आरियन तथा राजनतिक स्वार्थो की गमानता पर बन दिया और भारत व जापान की मित्रता को घावप्रयव बतनाया। उ हाने एशियाई देशो के तर्फा का टाकियो म "सननेडो" म एक सम्मेलन २८ अक्टूबर, १९३७ को बुलाया और उस "एशिया एशियावाकिया के लिए श्वत लाग अपन पर जावो" आदि नारा का प्रब बिया। रासबिहारी बोस न एशियावासी युवको म योरोप के श्वेतो द्वारा एशियाई देना का शोषण करने के विरुद्ध गहरा रोप उत्पन्न कर दिया।



अध्याय ग्यारहवा

रासबिहारी बोल जापान के

जब रासबिहारी जापान में भूमिगत थे तब ब्रिटिश गुप्तचरों से उनकी रक्षा करने का श्रेय मुख्य रूप से उनकी पत्नी का था। ब्रिटिश सरकार उनके पीछे पड़ी थी। यह उनका अपहरण या मरजा देना चाहती थी। भारत सरकार भी उनके पीछे थी उसने भी अपने गुप्तचरों को जापान दूरी काय ब लिए भेजा हुआ था। भारत सरकार ने एक प्रत्यक्ष कुशल पुलिस उच्च नमचारी का, जो पुलिस विभाग में प्रत्यक्ष प्रसिद्ध था और बहुत उच्च अधिकारी था इसी काय के लिए जापान भेजा था। उस पुलिस अधिकारी ने भी रासबिहारी बोल के सम्बन्ध में जा रिपोर्ट भारत सरकार को भेजी उसका सारांश यह था कि रासबिहारी भूमिगत हैं। जुलाई के अंतिम दिना में रासबिहारी टोकियो से मिलकुल लापता हो गए। क्योंकि ब्रिटिश अधिकारियों और गुप्तचरों का उनके छिपने का स्थान मान्य हो गया था। ब्रिटिश गुप्तचरों ने जापान की पुलिस की सहायता से अत्यन्त कुशलता पूर्वक खानगीन करने पता लगा लिया था कि जापान के पूर्वी समुद्र तट पर स्थित "बस्तुरा" नगर के समीप "शान्ति-सू" ग्राम में रासबिहारी टोकियो छोड़कर जा छिप हैं। बोल का जस ही यह बात ज्ञात हुई कि ब्रिटिश गुप्तचरों का उनके छिपने का स्थान ज्ञान हो गया है व "शान्ति सू" से पुरत भाग कर "टाकियो" आ गए और जापान के सम्राट के महला और सम्राट यह व महा अधीक्षक के विशाल प्राहाता में नहीं छिप गए। जो चाहे उनके पत्र हाथ लग उनसे पता चला कि वे अमेरिका में भारतीय पत्रकारियों के प्रमुख "नरेन मट्टाचाय के थे या पूर्वोक्त दशा में रहने वाले भारतीय क्रांतिकारियों के थे।

रासबिहारी बोल का सब भारतीय क्रांतिकारियों से चाहे वह भारत में ही या विदेशों में सबसे सम्भव बना हुआ था। वे जापान से भारतीय क्रांतिकारियों का नतुत्व करते थे। उनके नतुत्व और लोकप्रियता में जापान चले जाने से तनिव भी बनी नहीं हुई थी। उन पत्रों से ब्रिटिश गुप्तचरों का यह पता हो गया कि रासबिहारी बोल आज भी भारतीय क्रांतिकारियों के सर्वमान्य नेता हैं। जब श्री तारकनाथ दास जापान में थे

दिया। जापान न उस समय ब्रिटिश विरोधी भावना अत्यन्त तीव्र हो उठी क्योंकि ब्रिटेन ही उस प्रस्ताव को पारित करवाने में अग्रणीय था। रासबिहारी बोस ने उस ब्रिटेन विरोधी भावना का पूरा ताभ उठाया। उन्होंने समस्त जापान का दौरा किया प्रत्येक स्थान पर मन्त्रियों की ओर जापानियों से कहा कि परतंत्र भारत ब्रिटेन की महान शक्ति है। यदि एशिया में ब्रिटेन की शक्ति को कम करना हो तो उसकी शक्ति के आधार भारत का स्वतंत्र करना आवश्यक है। ब्रिटिश साम्राज्य भारत की परतंत्रता पर टिका है। जब भारत स्वतंत्र हो जावेगा तो ब्रिटिश साम्राज्य ढह जावेगा। एशिया में यदि ब्रिटेन की शक्ति को कम करना है तो भारत की स्वतंत्रता आवश्यक है।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध एशियाई राष्ट्रों के संगठन को अधिवक्ता तेजवान बनाने के लिए रासबिहारी बोस ने २८ अक्टूबर, १९३७ को 'एशियाई युवक सम्मेलन' बुलाया और पश्चिमीय साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक प्रभावशाली और सबल मोर्चा खड़ा कर दिया।

दूरदर्शी रासबिहारी बोस ने देखा कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तेजी से घटनाएँ घट रही हैं और भावी युद्ध में ब्रिटेन और जापान में युद्ध होगा। जब जापान और ब्रिटेन में युद्ध हुआ तब भारत को महासैन्य विद्रोह के द्वारा स्वतंत्र करने का असंभव और अनुपलब्ध अवसर होगा। इस उद्देश्य से वे दक्षिण-पूर्व एशिया के सभी देशों में बस भारतीयों का संगठन कर लेना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने 'इंडियन इंडिपेंडेंट लीग' की सभी दक्षिणी पूर्वी एशिया के देशों में शाखाएँ स्थापित कीं। वे स्वयं वहाँ गए और 'ही एम पाडे तथा देवनाथ दास का उन देशों में लीग की शाखाएँ स्थापित करने के लिए भेजा। उन लोगों ने दक्षिण पूर्वी एशिया में भारतीयों का एक प्रभावशाली और सबल संगठन खड़ा कर दिया।

३ मितम्बर १९३६ को द्वितीय महायुद्ध आरम्भ हो गया। इंडिया इंडिपेंडेंट लीग की एक कामिनी बनाई गई। रासबिहारी उनके अध्यक्ष और देवनाथ दास तथा प्रान्त द मोहन गहाय उसके सदस्य थे। रासबिहारी बोस ने श्री देवनाथ दास को आई-लैंड तथा इंडोचीन के विभिन्न भागों इन्डो, फेफान, नुई, कम्बोडिया तथा सुबन भूमि (लण्णाम) में भारतीयों में सम्पन्न करने भेजा। श्री रासबिहारी बोस ने श्री प्राणलाल कपाडिया को पत्र देकर भारत भेजा। वे श्री रासबिहारी बोस की ओर श्री महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, राजेन्द्र बाबू तथा भारत चन्द्र से मिले। उन्हीं ने, श्री सुभाषचन्द्र से १ मितना नहीं हुआ क्योंकि वे जेल में थे। रासबिहारी बोस ने महात्मा गांधी तथा अन्य राष्ट्रीय नेताओं को लिखा तथा कपाडिया द्वारा कहलाया कि शीघ्र ही दक्षिण पूर्व में युद्ध छिड़ेगा। जापान का ब्रिटेन से युद्ध होगा। भारत की स्वतंत्रता प्राप्त करेगा या यह दबी जग्दान सिद्ध होगा। जापान की सहायता मिल जावेगी। देश के अन्दर यदि कांग्रेस और दक्षिण पूर्व एशिया में इंडियन इंडिपेंडेंट लीग के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता के लिए सघन करें तो भारत स्वतंत्र हो जावेगा। किन्तु कांग्रेस के नेता तब तब कुछ निश्चय नहीं कर सके थे। वे जापान के साथ मिलकर ब्रिटेन के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं करना चाहते थे। महात्मा गांधी और नेहरू का मन था कि इस समय कोई आन्दोलन करने ब्रिटेन की

कठिनाइयाँ को बढ़ाना नहीं चाहिए। नेताजी सुभाषचंद्र बोस या इसी प्रश्न पर कांग्रेस से मनभेद हुआ था। त्रिपुरी कांग्रेस में उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि ६ महीने में द्वितीय विश्व युद्ध होगा। इस ब्रिटेन को चुनौती देकर मांग के लिए तयारी करनी चाहिए। परंतु कांग्रेस ने उनके सुभाष को स्वीकार नहीं किया और उनको कांग्रेस से हटा दिया। भारतीय नेतापान रासबिहारी ने प्रश्नान को समीक्षा पर लिया।

भारतीय कांग्रेस से निराश होने पर रासबिहारी बोस की दृष्टि सुभाषचंद्र बोस की ओर गई। जब वे आमरण भ्रमण करते जैन से छूट गए और एवान्तवास में भारत से विदेश जाने की तैयारी कर रहे थे तब रासबिहारी बोस ने उन्हें जापान लाने की योजना बनाई। उन्होंने जापान के स्थल, नम और जल सेना के सर्वोच्च सैनिक अधिकारियों से मिलकर सुभाषचंद्र बोस को जापान लाने की व्यवस्था कर ली। उद्गम वेश में गुप्त रूप से उन्हें जाने की देवनाथ दाम का एक जापानी समुद्री जहाज में 'अवसाय' भेजा।

श्री देवनाथ दाम अग्रयात्र में उतर गए तो भारत के जापानी कौंसिल जनरल ने उन्हें सम्पन्न कर यह विश्वास दिया गया कि वह सुभाषचंद्र बोस को एक जापानी स्टीमर में 'अवसाय' तक पहुंचा दे। योजना यह थी कि अवसाय पर जापानी एयर-टाइल सुभाषजी को टोकियो तक पहुंचा देगी। उस समय तक यद्यपि ब्रिटेन और जापान में विचार्य अग्रव्य था। परंतु जापान ब्रिटेन में युद्धरत नहीं था इस कारण जापान और ब्रिटेन के दौल्य सम्बन्ध पूर्ववत् थे। अग्रयात्र पर हवाई जहाज से श्री सुभाषचंद्र को टोकियो लाने की पूर्ण व्यवस्था थी। परंतु कलकत्ता में जापान का कौंसिल जनरल अंतिम क्षण पर हिचकिचा गया। उस महान् क्रांतिकारी (रासबिहारी बोस) की योजना यदि सफल हो जाती और नेताजी सुभाषचंद्र जापान से युद्ध छिड़ने के पूरे ही जापान पहुंच जाते तो भारत का इतिहास ही दूसरा होता परंतु यह होना नहीं था।

८ दिसम्बर, १९४१ को दक्षिण एशिया में युद्ध छिड़ गया तुरन्त ही रासबिहारी बोस ने अपने नाम से एक छाटी सी पुस्तिका प्रकाशित की और दावा की सरप्रा में उसको जापानी सेनाओं में बटवाया उसमें जापानी सैनिकों को बतलाया गया था कि वे भारतीयों और विशेषकर भारतीय स्त्रियों के साथ क्या व्यवहार करें। रासबिहारी बोस का जापानी सैनिकों पर ऐसा प्रभाव था कि उन्होंने ठाक कहे के अनुसार भारतीयों के साथ व्यवहार नहीं किया और किसी भी भारतीय महिला के साथ अश्लील व्यवहार नहीं किया।

युद्ध छिड़ते ही रासबिहारी बोस ने एक भारतीय सेवान्वय का निमाण किया जिम्मेदार श्री देवनाथ और अग्र्यक्ष स्वामी सत्यानन्द पुरी थे। वह सेवादल मन्वाया सिमापुर, प्रयाग जहाँ-जहाँ जापानी सेना पूँच करती थी उनमें साथ बूँच करता था। उन प्रश्नों में लाखा भारतीय रहते थे। यह संगठन भारतीयों के जीवन और धन सम्पत्ति की सुरक्षा करता था। इस सेवान्वय ने भारतीयों की अद्भुत

सेवा की उससे पत्र स्वरूप समस्त दमिण्ण पूर्वीय एशिया में रासबिहारी के नेतृत्व में इंडिया इंडिपेंडेंस लीग में गहरा विश्वास उत्पन्न हो गया ।

जब ८ दिसम्बर, १९४१ को जापान ने मिय राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी तो रासबिहारी सचेत हो गए । वे जान गए कि भारत की स्वतंत्र करने का समय आ गया है । उन्होंने तुरन्त घोषणा की कि इंडिया इंडिपेंडेंस लीग का सत्य भारत से ब्रिटिश शासन उखाड़ फेंक कर त्रिज प्रदेशों पर जापान का अधिकार हो जाय वहां बसे हुए भारतीयों की मरवा और उनकी सुरक्षा का प्रबंध करेगा ।

बहुत शीघ्र ही १३ दिसम्बर, १९४१ को 'कोटा बार्' में भारतीय क्रांतिकारी राजनीतिक नेताओं ने ग ब्रिटिश भारतीय सेना के बलिष्ठ मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रियों का ऐति-हासिक मिलन हुआ और 'आजाद हिन्द सेना (आई एन ए) का एक प्रथम गठन हुआ सिंगापुर का १५ फरवरी १९४२ को पतन हो गया ।

श्री रासबिहारी बोस न यद्यपि जापानी सैनिकों से भारतीयों के साथ सहयोग-हार करने की अपील निवाली भी परन्तु वे जानते थे कि केवल अपील निवाली ही पर्याप्त नहीं है । वे जापानी सेना के सर्वोच्च सेनापति फील्ड मार्शल सुगीयामा से मिले और उनसे प्रार्थना की कि वे आज्ञा प्रचारित कर दें कि वरिष्ठ पक्षों में भारतीयों को शत्रु न माना जाये । फील्ड मार्शल सुगीयामा ने रासबिहारी की इस प्रार्थना की प्रसवीकरण कर दिया । उन्होंने कहा कि भारत ब्रिटिश साम्राज्य का एक अंग है । जिससे जापान युद्ध कर रहा है अतएव भारतीयों को शत्रु माना जावेगा । तब रासबिहारी बोस युद्ध में भी से मिले और उन्हें यह आज्ञा प्राप्त करने के लिए तैयार कर लिया ।

जब जापानी सेनाओं ने चाईलैंड (ब्याम) पर अधिकार कर लिया तो स्वामी सत्यानंद पुरी ने बंगलादेश में "इंडियन इंडिपेंडेंस लीग स्थापित की । इसके उपरांत लीग के प्रतिनिधि जापानी सेना के साथ जाते और भारतीयों के हितों की रक्षा करते । इसके अतिरिक्त वे स्थानीय भारतीयों के नेतृत्व में लीग की वहाँ शाखाओं स्थापित करते अथवा अज्ञान के सभी राज्यों, फिलीपीन्स द्वीप समूह, चाईलैंड, डच, ईस्ट इंडीज, फ्रेंच इंडोचाइना, बर्मा, कोरिया और मल्लोरिया में भी इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की शाखाओं स्थापित हो गई जो रासबिहारी बोस के नेतृत्व में काम करने लगीं ।

श्री रासबिहारी बोस जापान के प्रधानमंत्री से मिले और उन्हें जापान सरकार द्वारा यह घोषणा करना तैयार कर लिया कि जापान सरकार भारत का स्वतंत्र करने के लिए भारतीय स्वतंत्रता युद्ध की सहायता करेगी । १६ फरवरी १९४२ को प्रधानमंत्री 'श्री तोजो' ने जापान की राष्ट्रीय सभा में इस आश्वासन की घोषणा कर दी ।

इसके उपरांत श्री रासबिहारी बोस ने भारत की स्वतंत्रता के युद्ध को अधिक बलशाली तथा तेजवान बनाने के लिए तथा भारतीयों का सुदृढ़ संगठन बनाने के लिए

पूर्वीय एशिया में बसे हुए प्रमुख भारतीय देशभक्ता और क्रांतिकारियों का २८ मार्च से ३० मार्च, १९४१ तक 'टोकियो' में एक बड़ा सम्मेलन बुनाया। इस सम्मेलन में नीचे लिखा निश्चय किया गया।

“भारत पर आक्रमण भारत की राष्ट्रीय सेना भारतीय सेनापति की माधीनता में करेगी। वह जापान से केवल उतनी ही सैनिक सहायता लेगी जो कि इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की कार्यकारिणी परिषद आवश्यक समझेगी। वह उसके लिए जापान सरकार से प्रार्थना करेगी। स्वतंत्र भारत का भावी विधान केवल मात्र भारत के प्रतिनिधियों द्वारा बनाया जावेगा।”

उक्त सम्मेलन में यह भी निश्चय किया गया कि १९४२ के जून मास में बंगलाका में एक बड़ा और अधिक प्रतिनिधि भारतीयों का सम्मेलन बुलाया जावे।

रासबिहारी बोस ने अगस्त में उपयुक्त समय पर टोकियो में भारतीयों का वह सम्मेलन बुनाया जिसमें इंडिया इंडिपेंडेंस लीग का नवीन मगठन किया गया। भारत के स्वतंत्र होने की घोषणा की गई और भारत को स्वतंत्र बनाने का कार्यक्रम भी तयार किया गया।

जहां इस ऐतिहासिक सम्मेलन में पूर्वीय एशिया के रहने वाले सभी भारतीयों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। वहां भारत की स्वतंत्रता के लिए अथक परिश्रम करने वाले स्वामी सत्यानन्दपुत्री तथा उनके क्रांतिकारी वीर सानो ज्ञानी प्रीतम सिंह कप्टेन अफरम खा और नीलकण्ठ अय्यर नहीं थे। वे बंगलाका से टोकियो सम्मेलन में भाग लेने के लिए आ रहे थे कि उनका विमान दुबटना घटन हो गया और वे चारा भारत माता के वीर सपुत्र भारत माता को स्वतंत्र बनाने के लिए बलिदान हो गए। महाबिप्लवी नामक श्री रासबिहारी बोस ने उन वीर क्रांतिकारियों और देशभक्तों की प्रशंसा करते हुए कहा हम इस महायज्ञ शोक की ज्वाला में उन दिवंगत देशभक्तों की श्रावण स्मृति में प्रणय करना चाहिए कि हम मृत्यु पथ में मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए जूझते रहेंगे।

इस सम्मेलन के निष्पत्ति के अनुसार १ जून, १९४२ का बंगलाका में एक वृहत् भारतीय सम्मेलन हुआ। उसमें सभी प्रदेशों से भारतीय प्रतिनिधि बड़ी संख्या में आए थे जिन्हें जापानी सेनाओं ने ब्रिटेन की दासता से मुक्त कर दिया था। आजाद हिन्द सेना का भी एक प्रतिनिधि मंडल उस सम्मेलन में आजाद हिन्द सेना का प्रतिनिधित्व करने के लिए सम्मिलित हुआ था।

बंगलाका सम्मेलन में इंडियन इंडिपेंडेंस लीग का नया विधान स्वीकार किया गया। आजाद हिन्द सेना उसकी सेना थी। इस सम्मेलन में लीग की एक कार्यकारिणी परिषद बना दी गई जो लीग के कार्य का संचालन करती और भारत की स्वतंत्रता के युद्ध का निर्देशन करती। महाबिप्लवी क्रांतिकारी श्री रासबिहारी बोस उसमें अध्यक्ष चुने गए। उसमें दो सदस्य आजाद हिन्द सेना के रखे गए। जनरल मोहनसिंह और कप्तान एम एस गिल और दो वर सैनिक सदस्य रखे गए। उनमें हैं एक श्री राधवन थे।

बैंगकाक सम्मेलन के अवसर पर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने जर्मनी से रेडियो सन्देश भेजा था कि वे शीघ्र ही भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध में भाग लेने के लिए आगे बढ़ेंगे।

बैंगकाक सम्मेलन से जब प्रतिनिधि वापस अपने प्रदेशों की गए और उन्होंने सम्मेलन के निष्कर्ष लोगों को बतलाए तो पूर्वोत्तर एशिया में बसे भारतीयों में आश्चर्य-जनक उत्साह उत्पन्न हो गया और भारतीय युवक बहुत बड़ी संख्या में आजाद हिंद सेना में प्रवेश पान के लिए उत्सुक हो उठे। श्री रासबिहारी बोस ने समस्त पूर्वोत्तर एशिया का दौरा कर भारत की स्वतन्त्रता के इस निष्ठापूर्ण युद्ध में प्रत्येक भारतीय को भाग लेने की प्रेरणा दी।

श्री रासबिहारी बोस केवल इंडियन इंडिपेंडेंस लीग तथा आजाद हिंद सेना को संगठित करके ही संतुष्ट नहीं हो गए। उन्होंने आकाशवाणी के द्वारा देश में विद्रोह फैला कर देश के लिए आह्वान किया। वे भारतीयों के नाम से देश प्रसारित करते, उन्होंने महात्मा गांधी तथा भारत के अन्य सभी नेताओं (नहरू, पटेल, राजेन्द्र प्रसाद, सीमांत गांधी, राजगोपालाचारी आदि) से अपील की कि वे सब मिलकर फिर चाहे वे किसी भी आदेश को स्वीकार करते हों देश के शत्रु ब्रिटिश शासन के विरुद्ध उठ खड़े हों। भारत में जब स्वतन्त्रता का युद्ध छिड़ेगा तो इंडियन इंडिपेंडेंस लीग बाहर से युद्ध करेगी और उनकी सहायता करेगी।

जबकि महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस देश को स्वतन्त्र करने के लिए मूढ़ रचना कर रहे थे तथा अपने चके हुए जजर शरीर को देश की स्वतन्त्रता के युद्ध का मजाल बनकर रात दिन बिना विश्राम किए और अधिक थका रहते, तभी दुर्भाग्यवश जनरल मोहन सिंह और रासबिहारी बोस में तीव्र मतभेद उत्पन्न हो गया। वास्तव में जनरल मोहन सिंह इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के आधीन रहना नहीं चाहते थे। वे इस प्रकार आश्चर्य करते थे कि मानो आजाद हिंद सेना स्वतन्त्र संगठन है और वे उसके सर्वोच्च सेनापति हैं। बैंगकाक सम्मेलन में जो प्रस्ताव पारित किए गए थे, उसमें जापान सरकार से कुछ स्पष्टीकरण मांगा गया था। जापान सरकार का जो उत्तर आया वह बहुत स्पष्ट और सतोपजनक नहीं था। रासबिहारी जापान सरकार की भलीभांति जानते थे। वे यह भी जानते थे कि जापानी सरकार से किस तरह अपनी बात स्वीकार कराने पर मोहन सिंह अड़ गए। जब मतभेद अधिक तीव्र हो गया तो रासबिहारी ने मोहन सिंह को अपदक्ष कर दिया। जनरल मोहन सिंह ने आजाद हिंद सेना का विघटन कर दिया। उस समय स्थिति बहुत बिगड़ गई थी। इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की कार्यकारिणी परिषद के सदस्यों ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया परस्पर संदेह और अविश्वास का वातावरण गहन होता गया।

जनरल मोहन सिंह तथा उनके कतिपय साथियों ने उस महान क्रांतिकारी जिसने देश के लिए अपना सबकुछ निछावर कर दिया उसकी देशभक्ति पर भी संदेह किया। परंतु मातृभूमि के लिए प्रति क्षण जीवित रहने वाले महान क्रांतिकारी देशभक्त ने इसकी तनिक भी चिंता नहीं की। उसने कठोरता पूर्वक अपने अधिकार का उपयोग

किया। कायकारिणी परिषद के सभी सदस्य ने त्यागपत्र दे दिया था। प्रस्तुत बोस ने सर्वाधिकार अपने म निहित कर लिए। उन्होंने जनरल मोहन सिंह को केवल अध्यक्ष ही नहीं किया वरन् उन्हें नजरबंद भी कर दिया उनके साथ ही बाल एम एम गिल को भी गिरफ्तार कर लिया। श्री रासबिहारी बोस आजाद हिंद सेना को विघटन से बचाना चाहते थे। इस कारण उन्हें ऐसे बठोर काम उठाने पड़े।

उसके उपरांत उन्होंने मेजर जे. के. भासले, ए. सी. बटर्जी, लोचनाथन, जमन कियानी और शाहनवाज की सहायता से आजाद हिंद सेना का पुनर्गठन किया। इस प्रकार आजाद हिंद सेना का विघटन होने से बच गया। लीग का प्रधान कार्यालय बंगाल से सिंगापुर लाया गया।

रासबिहारी बोस बहुत पहले से चाहते थे कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस जर्मनी से जापान आकर भारत की स्वतंत्रता के इस युद्ध में सहयोग दें। उन्होंने जापान सरकार से नेताजी को जापान लाने की व्यवस्था करने का आग्रह किया। आरम्भ में जापान सरकार असमजस में पड़ गई। उसके सामने यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि नेताजी सुभाष चंद्र के जापान आने पर बरिष्ठता का प्रश्न खड़ा हो जावेगा। परन्तु रासबिहारी का विश्वास आग्रह पर तथा नेताजी की जापान सरकार ने जापान आने की तीव्र इच्छा देखकर, जापान सरकार ने जर्मन सरकार से बात की और नेताजी को जापान लाने की व्यवस्था की।

अप्रैल, १९४२ में महाविप्लवी रासबिहारी बोस अपने प्रधान कार्यालय सिंगापुर से टोकियो गए। १३ जून को नेताजी सुभाष चंद्र टोकियो पहुंचे। ४ जुलाई, १९४३ को समस्त सुदूर पूर्व के भारतवासियों का प्रतिनिधि सम्मेलन सिंगापुर में बुलाया गया। रासबिहारी बोस के साथ नेताजी १३ जुलाई को सिंगापुर पहुंचे।

श्री रासबिहारी बोस तथा नेताजी सुभाष चंद्र बोस, भारतीय स्वतंत्रता युद्ध के उन दोना महान् सेनानायकों ने, सिंगापुर के सिटी हाल के सामने भारत की राष्ट्रीय सेना का एक साथ निरीक्षण किया। उसने उपरांत वह ऐतिहासिक भारतीयों का प्रतिनिधि सम्मेलन आरम्भ हुआ।

सुदूर पूर्व के सभी देशों में रहने वाले भारतीयों का विशाल जन समूह जिसमें बड़ा बड़ी संख्या में स्त्री-पुरुष तथा बच्चों एकत्रित हुए। दोनों क्रांतिकारी नेताओं को सुनने के लिए बड़ा उपस्थित था। उस विशाल जन समूह के सामने भारत की स्वतंत्रता के लिए जीवन पय त सघष करने वाले दोना महान् क्रांतिकारी नेता खड़े थे।

श्री रासबिहारी बोस ने आवेश में भावना से भरे शब्दों में नेताजी का इन शब्दों में परिचय दिया।

“मित्रा और भारत की स्वतंत्रता के युद्ध में मेरे साथिया आप सब मुझसे

पूछ सकते हैं कि मैंने भारतीय स्वतन्त्रता के लिए क्या काम किया। मैं आपके लिए क्या उपहार लाया हूँ। फिर उ होने नेताजी की ओर सकेत करके कहा "मैं आपके लिए यह उपहार लाया हूँ।" सुभाषचन्द्र का आप भारतीयों को परिवर्तन देने की आवश्यकता नहीं है, भारत की तरफाई में जो कुछ सवश्रेष्ठ, अनुकरणीय, सराहनीय है और गतिशीलता है वे उसके प्रतीक हैं।

"भारत में जो कुछ सवश्रेष्ठ और सर्वोत्तम है वे उसका प्रतिनिधित्व करते हैं।" "मित्रों और भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध में मरे साधिया राज आपकी उपस्थिति में मैं अपने पद को छोड़ता हूँ और श्री सुभाषचन्द्र बास को पूर्व एशिया ती इण्डियन इन्डिपेंडेंस लीग का अध्यक्ष मनाने का फैसला करता हूँ।"



अध्याय चारहवा

नेलाजी का आगमन

पिछले दिना में जनरल मोहन सिंह की महानकाशा के कारण जो आजाद हिंद फौज की बिना समस्या खड़ी हो गई थी। जगदी बडता तथा एक चतुर राजनीतिज्ञ की तरह हल करने में तथा इंडियन इंडिपेंडेंस लीग का एक तेजीस्वी संगठन बनाने के लिए रासबिहारी बाग अत्याधिक काम करने से बहुत अस्वस्थ बन गये और प्रसक्त हो गये। वह शरीर और मन से बहुत थक गए थे और उनका पुराना रोग क्षय पुन उभर आया था। डाक्टरों ने उनको आराम करने तथा काम न करने के लिए बहुत बर्हा परतु जिसने अपना समस्त जीवन मातृभूमि की सेवा के लिए तथा उसका स्वतंत्र बनाने के लिए प्रयत्न कर दिया हो वह अपने प्राणों तथा शरीर की बर्बाद करना चाहें। इसका परिणाम यह हुआ कि उनका भय रोग गम्भीर रूप से जोर पकड़ गया।

रासबिहारी बोस का अब इस बात की चिंता थी कि उनका स्वास्थ्य तो बचाने नहीं देता अस्तु किसी प्रकार नेताजी सुभाषचंद्र बोस को जापान लाया जावे जिससे की व उहें इंडियन इंडिपेंडेंस लीग तथा आजाद हिंद सेना का भार सौंप सकें। उन्होंने जापान से गुप्त रूप में भारत में वीर सावरकर के पास यह संदेश भेजा कि वे किसी प्रकार नेताजी सुभाषचंद्र का जापान भेज दें। भारत से निकलने के पूर्व नेताजी सुभाषचंद्र बोस वीर सावरकर से मिले थे तभी वीर सावरकर ने रासबिहारी बोस का संदेश उहें दिया था। वीर सावरकर ने उनके विदेश जाकर आजाद हिंद सेना का संगठन कर देश को स्वतंत्र करने का विचार का समर्थन दिया।

रासबिहारी बोस का संदेश पाकर उन्होंने विदेश जाकर ब्रिटेन व शत्रु राष्ट्रों का सहायता लाने आजाद हिंद सेना खड़ी कर देश को स्वतंत्र बनाने का संकल्प कर लिया। जिस प्रकार व जिवाउद्दीन का बेश घोरण कर एक पठान के छद्म बेश में

अफगानिस्तान, इटली होते जर्मनी पहुँचे यह सचविदित है। जब वे जर्मनी में थे तब रासबिहारी बोस उनको जापान लाने के लिए और अधिक सक्रिय हो उठे। रासबिहारी बोस के प्रयत्नों का ही परिणाम था कि बैंगकाक सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को जर्मनी में जापान सरकार ने निमन्त्रण भेजा था। यही नहीं बल्कि सम्मेलन में उनकी प्रेरणा से एक प्रस्ताव निम्नलिखित आशय का पारित किया गया।

“यह सम्मेलन श्री सुभाषचन्द्र बोस से प्राथम्यता करता है कि यह दृष्टा करके पूव एशिया में आर्वे और जापान सरकार से अपील करता है कि यह जर्मन सरकार से श्री सुभाषचन्द्र बोस को जर्मनी से जापान आने की सभी सुविधायें प्रदान कर जिससे कि श्री सुभाषचन्द्र बोस पूव एशिया में सकुशल पहुंच सकें। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि जर्मनी और जापान में गुप्त मन्त्रण तथा प्रबंध के कारण ही श्री सुभाषचन्द्र सकुशल जून, १९४३ में टोकियो पहुंचे।”

श्री रासबिहारी बोस ने लण्डन में जनरल “सीजो हरिस्वे” को जा जापान के सूचना विभाग के सर्वोच्च अधिकारी से अपने पास बुलाया और कहा कि जापानी अधिकारियों को शीघ्र से शीघ्र श्री सुभाषचन्द्र बोस को जापान बुलाने का प्रयत्न करना चाहिए। जापानी अधिकारियों को यह भावना थी कि यदि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जापान में आए तो यह प्रयत्न उठ सकता है कि उन दोनों में वरिष्ठ बौन हो। सर्वोच्च अधिकारी ने रासबिहारी बोस से स्पष्ट पूछा कि मुझे तथा मेरे माधियों को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को जापान बुलाने में कोई आपत्ति नहीं है पर प्रयत्न यह है कि हम इस बात के लिए चिंतित हैं कि दोनों बौम नेताओं में से वरिष्ठ बौन होना। जापानी अधिकारी इसी कारण नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को जापान बुलाने में मशकित तथा विवक्षित हैं। उस महान् देशभक्त ने कहा इसकी आपत्ति भी बिना न करें। मैं नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व में देश की स्वतंत्रता के लिए काम करने के लिए तयार हूँ। मैं उनकी आधीनता में काम करूँगा। लण्डन में जनरल “सीजो हरिस्वे” रासबिहारी बोस की बात सुनकर आश्चर्य में पड़ गए। उन्होंने लिखा है “कि मैं उनके आश्वासन से बहुत प्रभावित हुआ, उनके महान् व्यक्तित्व के प्रति मैं श्रद्धावत हो गया। अब मैं समझा कि रासबिहारी बोस कितने महान् देशभक्त हैं। अपने देश की स्वतंत्रता को वे मान प्रतिष्ठा ही नहीं अपने प्राणों से अधिक मानते हैं।

सन हिगुची जर्मनी (बर्लिन) में जापानी राजदूत के अटची थे। उन्होंने सन् १९४१ में रासबिहारी बोस की पुस्तक ‘भारत की पुकार’ (क्राई आफ इण्डिया) पढ़ी थी। वे उस पुस्तक को पढ़कर रासबिहारी बोस के भक्त बन गए थे। वह पुस्तक उनको ऐसी प्रेरणादायक और रुचिकर प्रतीत हुई कि उन्होंने उसे कई बार पढ़ा। वे उनके महान् प्रशंसक बन गए थे। जब नेताजी सुभाषचन्द्र बोस बर्लिन में पहुंचे तो हिगुची को भी रासबिहारी बोस की तरह यह लगा कि यदि नेताजी जापान जाकर भारत की स्वतंत्रता के लिए कार्य करें, तो बहुत अच्छा हो। उनके भी मन में नेताजी को जापान भिजवाने की इच्छा बलवती हो उठी। अतएव सन् १९४१ के अंत में वे

स्वयं जापानी राजदूत ओहसिमा से मिले और उनसे प्रार्थना की कि वे शीघ्रातिशीघ्र नेताजी को जापान भिजवाने की व्यवस्था करें।

राजदूत ने टोकियो को नेताजी के जापान आने का गणेश भेजा। उसने नेताजी के जापान आकर भारत की स्वतंत्रता के लिए काय करने की इच्छा का जोरदार धारणों में व्यक्त किया और अपनी सहमति भी व्यक्त की। परंतु जापान के उच्च राजनीतिक अधिकारियों ने इस प्रस्ताव की उपेक्षा की। उनका मानना था कि जापान में एक महान भारतीय क्रांतिकारी पहले से ही मौजूद है इसलिए बर्लिन से नेताजी सुभाषचंद्र बोस को आमंत्रित करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

इसके स्वयं नेताजी सुभाषचंद्र बोस प्रति सप्ताह जापानी राजदूत से मिलते थे और उनसे प्रार्थना करते थे कि उनको शीघ्र जापान भिजवाने की व्यवस्था करें। जापानी राजदूत ने जब उन्हें रासबिहारी बोस के बारे में बताया कि वे वहाँ भारतीय स्वतंत्रता के सम्बन्ध में पहले से काय कर रहे हैं, उन्होंने वहाँ 'इंडियन इण्डिपेंडेंस लीग' का संगठन किया है और आजाद हिन्द सेना का गठन किया है तो नेताजी ने जापानी राजदूत को उत्तर दिया—वह उनकी महान देशभक्ति का उदाहरण है। उन्होंने जापानी राजदूत से कहा "मुझे अत्यंत हृष्य होगा यदि मैं उनके नेतृत्व में एक सैनिक के रूप में भारत की स्वतंत्रता के लिए युद्ध कर सकूँ।" नेताजी के ऊपर लिखे वाक्य जब जापानी राजदूत ने जापान के राजनीतियों को लिख भेजे तो जापानी राजनीतियों की बुद्धिवादी समाप्त हो गई। नेताजी के जापान जाने का मामला जो जापानी राजनीतियों की बुद्धिवादी के कारण रूका हुआ था, खुल गया।

अब रासबिहारी बोस ने नेताजी को जापान जाने के लिए जापान के सैनिक अधिकारियों के परामर्श से सारी व्यवस्था की।

जापान का स्वर अब बदल गया। जापानी अधिकारियों ने जर्मन अधिकारियों से कहा कि हमें अत्यंत हृष्य होगा कि यदि वे नेताजी को जापान भेजने की व्यवस्था कर सकें। उन्होंने जर्मन अधिकारियों से यह भी कहा कि नेताजी एक अत्यंत महत्वपूर्ण राजनेता हैं। अस्तु उनको जापान भेजने की व्यवस्था करते समय उनके मनुष्यगत सुरक्षित जापान पहुंचाने की व्यवस्था का ध्यान रखा जावे। उनके जापान सुरक्षित पहुंचाने की गारंटी होनी चाहिए। जापानी अधिकारियों ने सीधे हिटलर से इस सम्बन्ध में बात की और यह तय हुआ कि नेताजी को जर्मन पनडुब्बी (सब मैरीन) में भेजा जावे।

हिटलर ने नेताजी को जापान जाने से विमुख करने का बहुत प्रयत्न किया। पर नेताजी भारत की स्वतंत्रता का अपने प्राणा से भी अधिक मूल्यवान मानने से इस कारण उन्होंने हिटलर से परामर्श को अस्वीकार कर दिया। हिटलर ने नेताजी से कहा "महामहिम आपके मनुष्यगत जापान पहुंच सकने की पांच प्रतिशत भी सम्भावना नहीं है। क्योंकि जापान जाने का समुद्री मार्ग शत्रु राष्ट्रों के समुद्री जहाजों से भरा हुआ है। आखिर पनडुब्बी (सब, मैरीन) को कभी-कभी तो जल के ऊपर आना ही होगा। उसका शत्रु राष्ट्रों के डेस्ट्रॉयर्स (सैनिक जहाज) से बच सकना सम्भव नहीं होगा।"

नेताजी ने जो हिटलर को उत्तर दिया वह ऐतिहासिक है और उनकी भारत की स्वतंत्रता के लिए सम्पूर्ण त्याग करने की तयारी का एक उदाहरण है। नेताजी ने हिटलर को उत्तर दिया "यदि भगवान चाहता है कि मैं अपने देश की सेवा करू तो यह देखना भगवान का काम है कि मैं जापान सफल पहुँचू। मुझे अपनी सुरक्षा की चिंता भी नहीं है। उसकी व्यवस्था करेगा कि मैं सफल जापान पहुँचू मंगलमय भगवान का काम है।"

फरवरी, १९४३ में एक भोज में नेताजी ने अपने परिचितों से कहा कि वियना में कुछ महत्वपूर्ण शानिकारी हैं। हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के लिए उनसे मिलने में क्या वियना जाऊँगा। मैं घबराहट से एक महीना बाहर रहूँगा।

परन्तु भोज की समाप्ति पर उन्होंने नाम बेयर और हिगुची से एकांत में गोपनीय बातचीत की। उन्होंने उन दोनों से कहा कि मेरा जापान जाना खतरे से खाली नहीं है किंतु मेरा विश्वास है कि मैं वहाँ सफल पहुँच जाऊँगा मैं वहाँ अपने मित्रों और भारतीय सैनिकों (३ हजार भारतीय सैनिक जिन्हें युद्ध में जर्मनी ने बंदी बनाया था और नेताजी ने उन्हें देश की स्वतंत्रता के सपना के लिए युद्ध करने के लिए देशभक्ति की भावना से प्रेरित कर आजाद हिंद सेना में भर्ती कर लिया था) को भी ले जाना चाहता हूँ पर उन्हें जापान से जाने के लिए कोई यातायात की व्यवस्था नहीं हो सकती, मैं उनके प्रतिनिधि के रूप में जा रहा हूँ। यदि मेरा माग नहीं मिला जावे तो तुम मेरी प्रतिष्ठित वसीयत रासबिहारी बोस को देना और उनकी सफलता के लिए मेरी प्रतिष्ठित इच्छा बतलाना। मेरे जर्मन से जाने के उपरांत भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के नेता श्री नामबेयर हीमे तुम उनका सम्पर्क श्री रासबिहारी बोस से करा देना जिसे कि हमारा आंदोलन तथा स्वतंत्रता सपना चलता रहे।"

नेताजी सुभाष चंद्र बोस उम सब मैरीन में तीन महीने की खतरनाक यात्रा करके ८ मई, १९४३ को सुमाना पहुँचे। 'हिंदी' के अध्यक्ष श्री यमामाद्वा वायुमान से सुमाना उनका स्वागत करने ८ मई, १९४३ को गए। जब नेताजी टोकियो पहुँचे तो उनका भावभीन स्वागत हुआ।

इडीमन इंडिपेंडेंस लीग का प्रधान कार्यालय माच, १९४३ में ही सिंगापुर ले जाया गया था। नेताजी सुभाषचंद्र बोस १३ जून को जापान की राजधानी टोकियो पहुँचे। रासबिहारी बोस वहाँ पहले से ही उपस्थित थे। समस्त सुदूर पूब के भारतीयों का एक प्रतिनिधि सम्मेलन ८ जुलाई, १९४३ को सिंगापुर में बुलाया गया। रासबिहारी बोस नेताजी के साथ ३ जुलाई १९४३ को सिंगापुर पहुँचे।

महाविप्लवी रासबिहारी बोस तथा नेताजी सुभाषचंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता युद्ध के उन दोनों महान नेताओं ने सिंगापुर के सिटी हाल के सामने भारत की राष्ट्रीय सेना का एक साथ गिरीक्षण किया उसके उपरांत भारतीयों का वह ऐतिहासिक सम्मेलन आरम्भ हुआ।

रासबिहारी ने समस्त सुदूर पूब के भारतीयों का यह प्रतिनिधि सम्मेलन ४ जुलाई १९४३ को सिंगापुर में बुलाया था। अस्तु सुदूर पूब के समस्त देशों में रहने वाले भारतीय स्त्री पुरुषों का विशाल जन समूह वहाँ एकत्रित था। उस विशाल जन

समूह के सामने भारत की स्वतंत्रता के लिए जीवन पयन संभव करने वाले दोना महान क्रांतिकारी नेता खड़े थे ।

श्री रासबिहारी बोस ने आदेश और भावना से भरे शब्दों में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का उस विशाल जन समूह को इन शब्दों में परिचय दिया ।

मित्रा और भारत की स्वतंत्रता के युद्ध में मेरे साथियों आप अब मुझे पूछ सकते हैं कि मैंने भारतीय स्वतंत्रता के लिए क्या काम किया । मैं आपके लिए क्या उपहार लाया हूँ । फिर उन्होंने नेताजी की ओर संकेत करके कहा मैं आपके लिए यह उपहार लाया हूँ । सुभाषचन्द्र बास का आपको तथा भारतवासियों को परिचय देने की आवश्यकता नहीं है । भारत की तरफाई में जो कुछ सर्वश्रेष्ठ अनुकरणीय साहसिकता है और सर्वाधिक गतिशीलता है वह उसका प्रतिनिधित्व करते हैं, उसके प्रतीक हैं ।

भारत में जो कुछ सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम है वे उसने प्रतिनिधि और प्रतीक हैं । मित्रो और भारत की स्वतंत्रता के युद्ध में मेरे साथियों आज आप की उपस्थिति में मैं इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के अध्यक्ष पद को तथा आजाद हिंद सेना के सर्वोच्च सेनापतित्व के पद को छोड़ता हूँ और श्री सुभाषचन्द्र बोस को इंडियन इंडिपेंडेंस लीग का अध्यक्ष और आजाद हिंद सेना का सर्वोच्च सेनापति नियुक्त करता हूँ ।

उपस्थित जन समूह स्तब्ध था । ऐसा आराम त्याग और निरप्रहारा तो इस भौतिकवादी युग में सुनी और देखी नहीं गई थी । सत्ता और अधिकार के लिए सत्ताधारी राजनीतिक नेता कौम से जयजय काय नहीं करते । सत्ता प्राप्त करने के लिए कुबक्र दशाद्रोह, और विश्वासघात जैसे भयकर नीच काम करने से भी राजनेता नहीं घृणते । स्वतंत्र भारत में आज जो सत्ता प्राप्त करने के लिए जसोभनीय आचरण देखने को मिलता है वह इसका ज्वलंत उदाहरण है । पर उस समय लोग ने देखा कि जीवन पयन तिर निरंतर अपने को देश की स्वतंत्रता के लिए मिटा देने वाला वह महान क्रांतिकारी नेता सत्ता दूर करने को सौंप कर हादिक प्रमत्तता अनुभव कर रहा है । वह धर्म देव दुलभ था । सत्कार के इतिहास में ऐसे उदाहरण अधिक नहीं हैं । महाविप्लवी रामबिहारी बोस का यह त्याग उनकी महान देशभक्ति और उनके महान और उच्च व्यक्तित्व का परिचायक है ।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने उस महान उत्तरदायित्व को स्वीकार करते हुए श्री रासबिहारी बोस के प्रति अपनी महान श्रद्धा व्यक्त करते हुए अपने भाषण में कहा ' विद्वाने महायुद्ध के समय भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणा को जोखिम में डालकर उठने का अद्भुत काम किया वे हमारी स्मृति में ही ताजे नहीं हैं ब्रिटिश साम्राज्यवाद के बागजा और फाड़ता में भी ताजे हैं ।

एक एक क्षण ने श्री रामबिहारी बोस के उस भाषण के सम्बन्ध में तिरा है कि जिस उच्च भावना से प्रेरित होकर श्री रामबिहारी बोस ने उग पतिहासिक आरोला का नेतृत्व श्री सुभाषचन्द्र बोस को सौंप दिया वह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक अविस्मरणीय अध्याय है । उन समय श्री रामबिहारी बोस का व्यक्तित्व उच्चता के शिखर पर पहुंच गया था । पूव एशिया हजायों प्रतिनिधि जो सिंगापुर के से मिनेमा हाल के सामने उनके इस भाषण को सुन रहे थे उनकी दृष्टि में श्री रासबिहारी बोस

बोस बहुत ऊंचे उठ गए। यह उनका घटितम सावजनिक भाषणा था।

बाद को जब नेताजी ने अस्पष्ट आजाद हिंद सरकार का गठन किया तब श्री रासबिहारी बोस को सरकार का सर्वोच्च परामर्श दाता बनाया। वे उनसे सभी महत्वपूर्ण प्रश्न पर परामर्श लेते थे।

एस ए अथर नेताजी सुभाषचंद्र के बड़े भक्त और प्रशंसक थे वे किसी भी भारतीय जातिकारी तथा स्वतंत्रता के सपने में भारतीय राजनीति का नेताजी के समकक्ष मानने को तयार नहीं थे। उन्होंने स्वयं लिखा है कि जब वे रासबिहारी के भाषण का सुन रहे थे तब वे इस असमझ में पड़ गए कि वे उन दोनों देशभक्तों में किसीको बड़ा माने।

रासबिहारी बोस की महानता

रासबिहारी बोस का जापान में बहुत ऊंचा पद था जापान में लोग उनको अत्यंत आदर और श्रद्धा भी दृष्टि से देखते थे। जापान के सम्राट में लहर साधारण प्रकार तथा राजनीति उनका अत्यंत श्रद्धा की दृष्टि से दमना था। वे आजाद हिंद सेना के सर्वोच्च नियंत्रक तथा "इंडियन इंडिपेंडेंस लीग" के अध्यक्ष थे। जापानी सरकार उनको भारत की स्वतंत्रता के नेताओं में अग्रणी मानती थी। वे यदि चाहते। स्वयं इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के अध्यक्ष और आजाद हिंद फौज के नियंत्रक बन रहे सकते थे। परंतु उन्होंने सब कुछ त्याग दिया क्योंकि वे वास्तव में सच्चे अर्थों में देशभक्त थे। उन्होंने देखा कि नेताजी सुभाषचंद्र बोस भारत के स्वतंत्रता सपने में अधिक दाय कर सकते हैं। उनका भारत में स्वतंत्रता के लिए सपने करने वालों से अधिक सामीप्य का सम्बन्ध है। राजनितिक नेताओं में ऐसा त्याग इतिहास में पृष्ठों में देखने को नहीं मिलता। इतिहास के पृष्ठों में इस प्रकार की घटनाएँ जम कि एक राजनीतिक नेता में अथवा दशा में या अथवा अथवा देश के हित में त्याग दिए हो नहीं मिलते। रासबिहारी बोस ने भारत की स्वतंत्रता के लिए सब कुछ त्याग दिया। यह उनकी महानता थी।

वास्तव में रासबिहारी बोस भारत को स्वतंत्र बनाना चाहते थे। उसका ध्येय किसी का मिले इसको उद्धान विचारिता नहीं की। ऐसा निस्वार्थ देशभक्त इतिहास के पृष्ठों में अंकित नहीं मिलता। ऐसे थे महान क्रांतिकारी रासबिहारी बोस।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अध्याय तेरहवा

दो विद्रोहो का नेता

नेताजी के जापान में आने और लीग के अध्यक्ष बनने के थोड़े समय उपरांत महान ब्रानिहारी का युद्ध का नेता महान विप्लवी ब्रानिहारी रासबिहारी वाम गम्भीर रूप से बीमार हो गए। रासबिहारी मधुगढ़ के रोगी थे। उनकी प्रिय पत्नी जिहाने ने ब्रिटिश गुप्तचरों से उनकी रक्षा करने में अपने शरीर का ध्यान नहीं रक्खा वे अस्वस्थ हो गईं। एक दिन में उनको कई बार बचाने के लिए मानसिक दृष्टि से सतत रही। रासबिहारी उनको बहुत प्रेम करते थे। वे पहले ही मर गईं। उनका शत्रु द्वारा जापानी जहाज डुबो दिए जाने के कारण उनके प्रिय पुत्र मशोहिदे के समुद्र में डूब जाने के कारण उनको दो भयंकर आघात लग चुके थे। उनको यह दोनों भयंकर आघात लग चुके थे। फिर पिछले दिनों लीग और आजाद हिंद सेना के बाय ने उनको बहुत पका दिया था। उ हान अपने स्वास्थ्य की तनिव भी चिंता नहीं की। वे मातृभूमि की स्वतंत्र बनाने के लिए कृत सकल थ। उनको लीग तथा आजाद हिंद सेना के पुनर्गठन के कार्य में इतना बठार परिश्रम करना पडा कि उनका शरीर निबल हो गया वह इतने श्रम का सहन न कर सके और वे गम्भीर रूप से बीमार हो गए। जनवरी १९४५ में वे टोकियो के हास्पिटल में चिकित्सा के लिए गए। जब वे हास्पिटल में गम्भीर रूप से बीमार थे तब जापान के सम्राट ने दोहरी किरणों वाले उगते सूर्य के द्वितीय आडर के जापान के उच्चतम राष्ट्रीय सम्मान से उन्हें विभूषित किया। सम्राट का प्रतिनिधि श्री सीजो उसे लेकर अस्पताल गए जहां थी रासबिहारी मृत्यु त रण घनस्या में थे। वह पदक जब उन्हें दिया गया तो वह वीर प्रातिहारी भावातिरक से विह्वल हो उठा उसकी आवा से मश्रु टपकन लगे। उ होने बहुत धीमे स्वर में कहा "अपने राष्ट्रीय स्वतंत्रता के युद्ध में जा गत वर्षों में आपने सहयोग और सहायता दो उसका मैं मृत्यु त कृतज्ञ ॥ और इसके लिए अनक धन्यवाद" अभी तक किसी विदेशी को जापान सम्राट ने वह पदक नहीं दिया था। जापान सम्राट स्वयं भी महाविप्लवी रासबिहारी

बोस की प्रतिष्ठा करते थे परंतु उनके प्रति जापानी जनता की भी प्रगाथ श्रद्धा थी इसका जो उनको ध्यान था। यही कारण था कि जब उस क्रातिकारी का निधन हुआ तो उन्होंने उस वीर के शव को अंतिम सस्कार के लिए ले जाने के लिए वह मांग भेजा जिसमें जापान के सम्राट का शव अंतिम सस्कार के लिए ले जाया जाता था। यह महाप्रयाण करने वाले उस क्रातिकारी का अधिकतम सम्मान था।

२१ जनवरी, १९४५ को भारतीय स्वतंत्रता के लिए दो विद्रोहा का वीर नेता चिर निद्रा में सो गया। २१ जनवरी, १९४५ को वह महान क्रातिकारी देशभक्त वीर अपने हृदय में यह इच्छा लिए हुए कि दूगरे ज. म. म. व. म. म. म. भूमि, यक्षपा की छोटी भूमि और जीवन की समाप्त, भूमि भारत के दशन करेगा। महाप्रयाण कर गया। उसका पवित्र शरीर भारत माता की मिट्टी में नहीं जापान में भस्मतात हुआ।

जापान में उनको जा थड़ा और आर मिले वह इसी धान से प्रगट होता है कि उनका शव का अंतिम सस्कार के लिए ले जाने का जापान के सम्राट ने उस वाहन को भेजा जिसमें बवल सम्राट के शव ले जाए जाते थे।

उनका निधन पर नेताजी सुभाषचंद्र ने उनकी महान मेधाका का उल्लेख करते हुए कहा 'व सुदूर पूर्व में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के जनक थे। उन्होंने इंडियन इंडिपेंडेंस लीग और भारत की राष्ट्रीय सेना (आजाद हिंद सेना) का निमाण करके भारत की जा महान सभा की हे वट चिरस्मरणीय रहगी। जब उनकी बीमारी के दिनों में नेताजी उन्हें देखने आए तो उनकी एवमात्र चिंता भारत की स्वतंत्रता की थी। वे असीम आशावादी थे। इम्फाल का प्रथम आक्रमण विफल हो चुका था परंतु रासबिहारी बास निराश नहीं थे। उन्होंने नेताजी को विश्वास दिलाया कि उनका प्रयत्न सफल होगा भारत अक्षय्य स्वतंत्र होगा।

२१ जनवरी, १९४५ को जब उस महान देशभक्त का टोकियो में अंतिम सस्कार हुआ तो नेताजी ने इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की सभी शाखाओं के भारतीयों को सामूहिक सभाएं करने का आदेश दिया। २५ फरवरी को आजाद हिंद सरकार के मंत्रिमण्डल की बैठक में रासबिहारी बोस के निधन पर शोक प्रगट किया गया और सब सम्मति से "आडर ऑफ सग आजाद हिंद" जो कि उस सरकार का सर्वोच्च सम्मान था, सर्वप्रथम रासबिहारी बोस को मृतभूमि के लिए की गई महान सभा के उपलक्ष में मृत्यु-परान्त दिया गया। मंत्रिमण्डल ने यह भी निश्चय किया कि टाकिया की सनिक एकेडेमी से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले सर्वश्रेष्ठ भारतीय कैडेट को 'रासबिहारी' पदक दिया जाय। उस महान देशभक्त के लिए उन भारतीयों ने जो उस समय ब्रिटिश साम्राज्यवाद से जूझ रहे थे जिनका जीवन प्रतिपल संकट में था उन्होंने तो उस वीर देशभक्त और भारत की स्वतंत्रता के लिए अनवरत सघष करने वाले वीर सेनानों के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित की किंतु स्वतंत्र भारत की सरकार ने उस महान देशभक्त और भारत की स्वतंत्रता के लिए जनवरत सघष करने वाले वीर सेनानों के प्रति किसी प्रकार की श्रद्धा या सम्मान व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं समझी।

कृतघ्न भारत

स्वतंत्र भारत में सरकार के द्वारा उनका जन्म दिन या पुण्य तिथि नहीं मनाई

जाती, उनका नाम राष्ट्रीय स्मारक नहीं बताया गया। मोरगभा की दीवारों में उनका चित्र नहीं लगाया गया। दलही में उस स्थान पर जहाँ उर्दू का शाही दरवाजा था वहाँ पर हम फेंककर शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य को खतबारा था और उस मुनीनी दी की कोई राय सदा रही किया था जिसका लक्ष्य महात्मा था। टाक विभाग ने उनका सम्मान में टाक टिपट नहीं निकाला। रासबिहारी बाग की एकमात्र जीवित छात्रावली धीमती हिमूची का भारत सरकार ने उनके पिता की मातृभूमि में धामयत्रिन कर सम्मानित नहीं किया। हम भारतीयों की इस खरम सीमा की वृत्तघटा देवदर स्वयं वृत्तघटा की लज्जा अनुभव हाती होगी। जो छात्रावली है हम उनका सम्मान करण नहीं करना पर उन दशमकाल का याद करने का भार भी उठाना नहीं चाहते ब्रिटिश अवन का दश की स्वतन्त्रता के लिए बल-बल कर गला दिया और जिनकी हृदयों पर भारत की स्वतन्त्रता का यह भवना लड़ा है। हम भारतीय वृत्तघटा में बनी है सर्वोपरि है।

अपने मरण के दशक में मूल तत्व का स्वयं करने हुए उग महान् देवदशक न २/ अग्रत १९४२ का कहा था —

"I was a fighter one fight more
the last and the best"

"मैं एक याज्ञा रहा हूँ, एक और
अन्तिम और सर्वोत्तम"

रासबिहारी का लेखन तथा प्रकाशन

रासबिहारी बाग प्रचार और प्रकाशन का महत्त्व जानते थे। यही कारण था कि उन्होंने दो पत्र निकाले "शू एशिया" तथा "एशिया रिब्यू" उनमें से भारत तथा परतन्त्र एशियाद्वय का सम्बन्ध में लिखते थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद तथा पाराधीय साम्राज्यवाद की ध्वजियाँ उठाते थे। वे जपान के प्रभुत्व तथा में भारत तथा एशिया के पराधीन दशा के सम्बन्ध में लिखते रहते थे। और बलिष्व जपानी पत्र में सम्पादकीय लेख भी लिखते थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने भारत के सम्बन्ध में जपानी भाषा में अनेक पुस्तकें भी लिखी जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं —

१ एशिया की क्रांति का सिद्धान्तोन्मूलन (१९२९) २ भारत (१९३०) ३ उत्पीडित भारत (१९३३) ४ भारतीयों की कहानियाँ (१९३५) ५ भारत में क्रांति (१९३६) ६ सचका एशिया की विजय (१९३७) ७ भारत का रुदन (१९३८) ८ भगवत गीता (१९४०) ९ भारत का इतिहास (१९४२) १० दासता की शृङ्खलाओं में जनता भारत ११ स्वतन्त्र भारत, १२ स्वतन्त्रता के लिए सपना (१९४२) १३ रामायण (१९४२) १४ भारतीयों का भारत (१९४३) १५ अन्तिम गान (दण्ड की शरार कविता) (१९४३) १६ बोस की प्रपील (१९४४)।

यथा ही अष्टु हो कि भारत का शिवा मन्त्रालय बोस की लिखी पुस्तकों में से कुछ का हिंडी, अंग्रेजी और बंगाली में अनुवाद कराकर प्रकाशित कराये। एक विद्वान् जाया भेजा जावे जो जपान के पत्रों तथा उनके पत्रों में से रासबिहारी के लेख दूरे विगले उनके अनुवाद कराकर उनका पुस्तकाकार प्रकाशित करे। उन्होंने जो भारतीय राजनतिक मसाला के नाम तथा भारतीयों के नाम अपने भाषण प्रानायायणी

से प्रसारित किये उनका संकलन किया जावे और उन्हें प्रकाशित किया जावे । जिसे भारतीय जान सकें कि भारत की जटिल राजनीतिक समस्याओं के बारे में उनकी क्या सम्मति थी । यह अत्यन्त खेद की बात है कि जो जीवन पयन्त मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए मघस्य करना रहा और भारत की स्वतन्त्रता के लिए उसने दो बार समस्त भारत में सशस्त्र विद्रोह का आयोजन किया उसके विचारों में सामान्य भारतीय जाभिन्न रहे ।

वास्तव में भारत सरकार ने महाविप्लवी रासबिहारी बोस के साथ जसी उदासीनता का व्यवहार किया वह आश्चर्यजनक और अत्यन्त खेदजनक है यदि वे किसी अन्य देश में पैदा होते और उसकी स्वतन्त्रता के लिए इतना काम करते तो वृत्तव्य देशवासी उनकी पूजा अचना करते । देशभर में उनका जन्म दिन मनाया जाता और उनका एक सुन्दर और भव्य स्मारक बड़ा किया जाता और उनके लेखा का अनुवाद करके उनके विचारों का प्रचार किया जाता । किन्तु स्वतन्त्र भारत में यह सब कुछ नहीं हुआ । यह दुर्भाग्यपूर्ण है ।

परिशिष्ट

सिंगापुर में कोई तनाव नहीं था वह शिथिल और आनन्दमग्न था। चीन कैलेडर के अनुसार सोमवार पंद्रह फरवरी नव वर्ष का दिवस था। शनिश्चर स। इस नगर ने व्यापार और व्यवसाय, आयात और निर्यात, जहाजा पर माल लादने के अनुमोचियों, कोयले की आवश्यकता और जहाजा के प्रस्थान समय के सम्बन्ध विचार करना बाद कर दिया था। सिंगापुर का अस्तित्व ही धन कमान के लिए था सन् १८१६ से जबकि स्टम्फोर्ड रैफिट्स ने २०६ बग मील के जंगल और वायुमि दलदल के उस अल्प जन सन्ध्या वाली भूमि पर यह व्यापारिक स्थान स्थापित किया सिंगापुर यही करना आ रहा था। उस स्थान पर व्यापारिक क्षेत्र स्थापित कर का उसका उद्देश्य ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी को इच कम्पनी से जो मुमाना जाव अधिन मुद्रर पूष ईस्ट इंडीज के लाभदायक समीपवर्ती क्षेत्र में लम्बे समय से अर्द्ध तरह स जमी हुई थी, निकट प्रतिस्पर्द्धा म लाया था।

सिम्पल पहरेदारों के अतिरिक्त जो सुरक्षा के लिए नियुक्त किए गए थे सिंगापुर के बड़े व्यापारिक मस्थानों के भवना म और कोई नहीं था। वे जन था ये। व दरगाह क नौस्वल (डाक) और गोदाम सूतसान थे और कपल व दरगाह क जल प्रशात तथा भ्रष्टना था। वह कालियर घाट से बिना किसी रकावट के स्वतंत्रत पूर्वक टकरा रहा था। १९१५ के इस वर्ष में सिंगापुर और मलाया स्टेट म व्यापारिक जहाजों से कम ही लौगा को वास्तु पडा था क्वाकि विश्व व्यापी महायुद्ध ने रबर और टिन की कल्पनातीत अधिकतम राशि का सोप लिया था। अम्नु लाम और हानि को सामाय व्यापारी भून गए थे। चीनिया न कुछ घंटे अपने परिवारा म अदम्य उत्साह के साथ नववष का गमारोत् मनाया और योरोपियन मलाया और भारीया तथा अ य जातियों ने इस सावजनिक अवकाश का लाभ अपने हय से जान न मनाने और उस नम (आन) यवा देन वाले और कष्टकर जलवायु म आरम्भ करने में व्यतीत किया।

वतिपय वृद्ध यारोपिया घनी चीनिया के घरा पर उह नववष की वधाई देने

गए। उनकी आर्थिक सम्पन्नता जो उस द्वीप के मध्यपत्तन व्यापार के द्वारा निर्मित हुई थी तथा उनके द्वारा बाह्य रूप में पश्चिमीय ढंग के रहन-सहन को प्रगोकार करके व कारण (कम से कम अवसायिक कारखानों के समय) ने उस औपनिवेशिक समाज में उनकी एक सीमा तक सामाजिक मान्यता दिला दी थी। उन सम्पन्न व्यापारिक प्रतिद्वंद्वियों को प्रभिवानन करके, उन्हें परम्परागत नववर्ष की शुभकामनाएं अर्पित कर और परिवारों को भेंट और उपहार देकर बरिष्ठ योरोपियन या तो अपने बलवों में मददगार, ताश खेलन तथा विलिग्रंडस के लिए अथवा अपने बड़े दगलों के ठेकेदारों में गहरी और जारामदायक बातचीत सुनाने के लिए वापस लौट आते थे।

तरुण योरोपियन जिनकी संख्या पिछले वर्ष से बहुत कम हो गई थी। क्योंकि उनमें से बहुत से किचनर की गई सेनाओं में भर्ती होने के लिए स्वदेश वापस लौट गए थे। अपनी निजी गोदों बना लेते थे जो मुख्यतः अविवाहिता के संगठन थे। वे गोष्ठियां इस बात पर बल देती थीं कि अज मदस्य को नौकरी मिल जाय तो भी वह अविवाहित ही रहगा क्योंकि उसमें अधिकांश के लोग होते थे जो नियुक्त के लिए प्रार्थी होते थे। सदस्य का कई वर्षों तक अविवाहित ही रहना पड़ता था। यह कोई अधिक बठिन बात नहीं थी क्योंकि द्वीप में बहुत कम संख्या में महिलाएं थी और समय या तकाजा था कि अन्य किसी जाति की स्त्री से केवल गुप्त सम्बन्ध रक्खा जा सकता था। अस्तु इन तरुणों के लिए सिगापुर में सावजनिक अवकाश का अर्थ था कि वे कोई न कोई खेल खेलें। अवकाश के दिन के क्रिकेट, गालफ तथा तैराकी में समय व्यतीत करते थे। तत्पश्चात् वे अपने बलब में जाकर मद्यपान में अधिक लम्बा समय व्यतीत करते थे।

स्टेट सैटलमट के मूल निवासियों मलयालिया के लिए तीन दिनों का अवकाश था ह या तो अपने घरों में रहन अथवा नगर के बाहर जंगल और नदिया के तट पर बस हुए अपने गांवों जो अधिक दूर नहीं थे, जाने का अवसर प्रदान कर देता था। परिव्रमों भारतीय लोग बठिन श्रम की धनान मिटाने के लिए विश्राम करते थे। यद्यपि कुछ भारतीय दुपानदार अपनी दुकानें खोलते थे।

नव वर्ष के दिन या प्रातः काल स्वच्छ आवाश और सूप की किण्वों से प्राञ्जादित या परतु अपराह्न के पश्चात् आवाश भेधाच्छन्न हुआ गया और एक-एक कर द्वीप में हटकी वर्षा होती रही। यह उत्तर पूर्वी मानसून के लुप्त होने का आर्थिक संपन्न था। चीनिया ने मोमम की इस खराबी की तनिव भी परवाह नहीं की और अपने पक्ष को पूर्ववत् उत्साह और उत्साह से मनाया। नगर के जिस भाग में चीनी रहते थे उसकी तग मलिया आतिशबाजी के गोला भी आवाज से प्रतिध्वनित हो उठी। आठ घण्टों ने जली हुई बाष्प की तज गंध का अपने में समाहित करके दूबान गृहों के नीचे महाराजदार तग रास्ता का जिहे पाव फिट के माग भी कहा जाता है उन रग-बिरगी मलिया की चलाई हुई आतिशबाजी की चमकती हुई राख से पाट दिया।

रात्रि का भोजन करके योरियन मुहल्ले में लोग आराम कुर्सी में धीरे चलते

हुए पखो के नीचे या अपने पलग के चारा ओर मच्छरदानी लगा कर उस मुक्काम और आराम देने वाली कारावाम म मोत थे। व्यापारी जहाजों के मालिक बैंकर और बगीचा के स्वामी बड़े-बड़े टिफिनो से उपनती हुई ठंडी वियर से अपने गल का सींचते थे। दूर पर प्रातिशवाजी का शोर उनके आराम म बाधा नहीं डालता था। वे उस शोर के धम्पस्त हो गए थे। वे इसके लिए विवश थे। क्योंकि बिना विस्फोट और फोलाहल के किसी चीनी स्पीडर या ममारोह की वल्पना ही नहीं की जा सकती थी।

उा लोगों म जिन्होंने उस नीरस और चिपचिपे दिन मध्याह्न के बाद कुछ घंटे विश्राम करने का निश्चय किया था। स्टेट सेंट्रलमट की सेना के जनरल आफिसर कमांडिंग प्रिगेडियर जनरल डी एच रिडाऊट भी थे। उनकी तबियत ठीक नहीं थी। मलेरिया एवर के भयंकर प्रसोप ने उन्हें अब भी प्रभावित कर रक्खा था। पूरा और प्रोजेक्सी स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए उनकी आत दिनचर्या म उस दिन प्रातःकाल अपने शामकीय गृह टागतिन से अलकजैडिया खैरका म जाने की अनिवाय आवश्यकता ने विघ्न उपरिधत कर दिया था। वहा उन्होंने इटियन रजिमेण्ट पाचवी लाइट इन्फैंट्री का जहाज पर जाने के पूव का निरीक्षण किया जो 'नाने' सैनिक जहाज से दूसरे दिन हागकाग को जाने वाली थी। प्रिगेडियर विदाई की उस परेड से बहुत प्रसन्न हुआ और रजिमेण्ट के माच पास्ट तथा प्रदशन के सम्वंध मे उसने कमांडिंग आफिसर लैपटीनट काल मार्टिन से साराहना की। उसने सैनिको को भी सम्बोधित किया उनकी पूव सेवामा की उसने भूरि-भूरि प्रशंसा की और उनकी गई नियुक्त पर शुभकामनाएं अर्पित कीं। दुर्भाग्यवश रिडाऊट अपने भाषण म पाचवी लाइट इन्फैंट्री का कहा जाना है इसका उल्लेख करता भल गया। यह ऐसी घुक् थी जिसके कुछ ही घंटा म सम्भौर परिणाम सामने आए।

प्रिगेडियर ने पाचवी लाइट इन्फैंट्री के अफमरा के साथ दिन का भोजन किया और मोटर कार से टै गलिन गोट आया। वह अपने कमरे म अधिवक्त्र देर विश्राम नहीं कर सका होगा कि ३ बजे सायनात को टेलीफोन की आती है उसके विश्राम में बाधा पहुचाई। पाचवी लाइट इन्फैंट्री के कनल मार्टिन टेलीफोन लाइन पर थे। उन्होंने अत्यंत आश्चर्य व्यक्त कर देने वाली रिपोर्ट दी। उसकी पाचवी लाइट इन्फैंट्री "राजभक्त पाचवी" ने सैनिक विद्रोह कर दिया और सैनिको न कुछ अधिकारियों को मार दिया।

यद्यपि रिडाऊट यह जानता था कि बटालियन म कुछ अस तोप बराम है पर इस समाचार ने अवश्य ही उसे भौचक्का बना दिया होगा। क्योंकि उसी दिन प्रातःकाल उसने एक तेजस्वी और दिखती हुई अच्छी अनुशासित रजिमेण्ट का निरीक्षण किया था। अब उससे कहा जा रहा था कि जिन सैनिको ने परेड ग्राऊंड पर उस इतना अधिवक्त्र प्रभावित किया था, विद्रोही हो गए उहां कुछ अधिकारियों का गोली मार दी और मार्टिन के बगले पर घावा बोलन की तयारी कर रहे हैं। टेलीफोन का यह संदेश जहा तक प्रिगापुर का सम्बंध था व्यापक फलितार्थों मे भयभीत कर देने वाला था। अगो की अपेक्षा रिडाऊट का अधिक अच्छी तरह ज्ञात था कि नगर आंतरिक सुरक्षा के लिए किसी आतंरिक खतरे का सामना करने के लिए सैनिक भी सज्जत

नहीं था। उस द्वीप में पाचवीं ही नियमित इफ़ैट्री बटालियन थी। उस द्वीप में सामान्य दो बटालियन रहती थी। मित्तु पहली बटालियन अर्थात् क्रिश्चम प्रोन याव-सायर लाइट इफ़ैट्री कुछ ही समय हुआ स्वदेश का वापस लौट गई थी। पश्चिम के मार्च पर लाइया में अपना स्थान ग्रहण करने के पूर्व उसको स्वदेश भेज दिया गया था। अब जबकि पाचवीं बटालियन न सैनिक विद्रोह कर दिया तो रिडजेंट के पास केवल शाही सेना के साथ यान "रायल गारिबन्ड आरटिलरी" के कुछ तोपची सैनिक, मलाया स्टेट गार्ड्स की एक सचकर बटरी जोहोर स्टेट सेना की एक छोटी टुकड़ी और स्थानीय बड़ी उमर के स्वयं सेपक (वासटियर) थे।

यदि विद्रोही सैनिक वृत्त निरवयव हो और उतना नतृत्व ठीक प्रकार का हो तो वे ब्रिटेन के अत्यंत महत्वपूर्ण और साम्राज्य व जीवित-आवश्यक इस विदेशी उपनिवेश पर अधिकार कर सकते थे, जिसका भयकर परिणामो की कल्पना नहीं की जा सकती थी। विद्रोही सैनिक द्वीप को अग्रशयभावी ब्रिटिश प्रत्याक्रमण के विरुद्ध अपने अधिकार में रण तकनीकी आशा नहीं कर सकते थे। परंतु इस बीच वे स्थानीय युद्ध की तयारी को पगु बना सकते थे, अत्यन्त सुरभार जातीय सम्बन्धों को उस अनेक जातियों व समाज में बिगाड़ धोर उलट सकते थे तथा अधिक सरथा में अंग्रेजों को भारत के प्रतिरिक्त सम्पत्ति को तहस नहस कर सकते थे। छियानवे यथा तय सिंगापुर ने ब्रिटेन के शांतिपूर्ण शासन का उपयोग किया था। घाट बिनने कम समय के लिए ही सही उस पर से ब्रिटेन का नियंत्रण हट जाने से एशियावासियों में ब्रिटेन की प्रतिष्ठा कम हो जाने के रूप में बहुत महंगा पड़ेगा, इनके भी अनेक महत्व की सम्भावना यह थी कि जर्मनी और टर्की इस स्थिति का उपयोग ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध प्रचार करने में कर सकते थे।

रिडजेंट के मस्तिष्क में यह सब विचार बीँध गए हांग। उतने शीघ्रता पूर्वक अपनी सैनिक बर्दी पहनी और उसी उस फाट काँग के सैनिक गुप्तयात्रा को ले जाने के लिए अपनी कार का मगवा भेजा। परंतु कुछ एस आवश्यक था कि वह उस क्षण उसे छोड़ना पड़ रहा था। उनका पहला कृतक्य यह था कि वह अपने बाड़े से सैनिकों का संगठित करता और विद्रोही सेना पर शीघ्रता पूर्वक आक्रमण करता तथा अनन्त को सावधान करता और उन्हें जो कुछ घटित हो रहा था उससे अवगत कराता। अपनी माटर कार में बैठने से पूर्व उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह जर्मन और आस्ट्रियन कैदियों के शिविर के कमांडर को फोन करने जा कुछ घट रहा है उससे सावधान कर दे।

जनता को उस क्षण से सावधान करना सरल नहीं था, द्वीप में रेडियो की सुविधा नहीं थी, केवल कुछ ही निजी व्यक्तियों के यहाँ फोन थे। अपने बगलों में वे अलग अलग थे। यारापियनों का इस बात का सैनिक भी ज्ञान नहीं था कि अललेट्रिया बरिया में क्या हो रहा है। बहुतों ने विद्रोही सैनिकों द्वारा राइफल से गोली चलाने की आवाज का भूल से आतिशबाजी चलना समझा। जबकि विद्रोही सैनिक सड़कों पर घूम रहे थे। तब भी वे योरोपियन वही समझन रहे कि यह आतिशबाजी चलन तथा उत्थव का शोर है। इस भूल के कारण बहुतों का प्राणा स हाथ घोना पड़ा।

वह कौन था जिसने पहली गोली चलाई इसका कभी पता नहीं लगाया जा सका। यह निश्चिन्त है कि एक सैनिक को यह काय गुप्तद किया गया था कि पाचवा लाइट इफंटर बटालियन के ८१५ सैनिकों को विद्रोह करने के लिए, अपने ब्रिटिश अधिकारियों को मार डालने के लिए तथा उनके बाद सिंगापुर पर आक्रमण करने के लिए तैयार करने का सन्देश देने के लिए वह एक राउंड गोली चलाए। सैनिक विद्रोह स्वतः अपने आप नहीं हुआ था। कुछ समय पूर्व उसकी योजना तैयार की गई थी। रजिमेंट की आठ कम्पनियों में जो लोग सैनिक विद्रोह में सम्मिलित होने के लिए राजी थे उहें क्या करना है यह तय कर दिया गया था और उन्हें बतला दिया गया था। पहली गोली लगभग तीन बजे सायंकाळ का अलधेद्रिया करिका के प्रवेश द्वार पर स्थित गाड रूम के समीप चलाई गई। जहाँ कुतूबल छोटे प्रस्त्र-गहना तथा गाली बालू के केस दूफा में लाद रहे थे। कुछ अधिकारी गोली की आवाज सुनकर अपने बग़ारों से यह पता लगाने के लिए निकल भागे कि जिन गम्भीर घटना-व्यस्तता का उन्हें बहुत दिना संभव था, क्या आरम्भ हो गया ?

फिलिप मैसन के शब्दों में इस सैनिक विद्रोह में भी वे पुराने और प्रतिष्ठित तत्व मौजूद थे जो प्रत्येक भारतीय सैनिक विद्रोह में देखने को मिलते हैं। जयन्त प्रभावहीन अधिकारी, बाहर का विघटनकारी प्रभाव तथा सत्ता की शिकायतें यह तीनों कारण वास्तव में विस्फोटक थे जिनका सम्मिश्रण हो गया था। परंतु जब हम देखते हैं कि रजिमेंट की इस उत्तरदायक स्थिति में सैनिक और नागरिक अधिकारी अलग-थलग थे तो सामान्य जन को यह अनुमान प्रतीत होता है कि उस स्थिति को भ्रष्ट उन कारणों को असंग-थलग करने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। एक अस्पष्ट और आत्मतुष्टि की भांशा पर भरोसा रखता गया कि पाचवी बटालियन की नतिक मन स्थिति में इस तथा जलवायु के परिवर्तन से सुधार हो जायेगा।

जहाँ तक अधिकारियों (अफसरों) का प्रश्न था बटालियन में शीव स्थान अर्थात् कमांडिंग आफिसर से ही कठिनाई और गड़बड़ की शुरुआत थी। वह पहले उसी रजिमेंट में मेजर के रूप में था कम्पनिया का नेतृत्व कर चुका था। मेजर के रूप में उसकी कर्तव्यपालन की कुशलता इस प्रकार की थी कि उसका कमांडिंग आफिसर ने अपने बरिष्ठ अधिकारियों से इस बात का शासकीय रूप में संदेह प्रकट किया था कि वह उसके उत्तराधिकारी के रूप में रजिमेंट का कमांडिंग आफिसर होने का योग्य नहीं है। यह स्थिति भद्दी थी उसमें आत्मविश्वास नहीं था, इस कारण वह दूसरों को संदेह की दृष्टि से देखता था। तथा कमांडिंग आफिसर अपने सैनिकों तथा आधीनस्थ अधिकारियों की श्रद्धा और आदर पाने में असफल रहा और कुछ अवलोकन करने वालों का कहना था कि कुछ ब्रिटिश और भारतीय अधिकारी उस घृणा की दृष्टि से देखते और उसके साथ अनुमानवत्ता का व्यवहार करते थे। मार्टिन के सम्बन्ध में कनल के प्रतिकूल प्रतिवेदन (रिपोर्ट) के परिणाम स्वरूप मार्टिन को अपमानजनक अनुभव को सहन करना पड़ा। उसे तीव्र महीने के लिए रजिमेंट से विशेष परीक्षा के लिए भेज दिया गया। आवश्यक को बात है कि परीक्षा का परिणाम यह निकला कि रजिमेंट का कमांड करने के लिए वह योग्य पाया गया और वह वापस अपनी रजिमेंट को

कमाड करने के लिए भेज दिया गया। यह स्वयं उसके लिए तथा उसके नीचे काम-करन वाले घ्रादमिया के लिए 'यायपूण' नहीं था। सामाज्य बुद्धि तथा प्राज्ञता का तवाजा था कि यदि उसे अपनी अपनी याम्यता को प्रमाणित करने का 'यायपूण' अवसर देना था तो उसको अथ किसी रजीमेट में भेजा जाना चाहिए था। परन्तु उच्च अधिकारियों ने इसके विपरीत आज्ञा दी।

नया पदोन्नति पाया हुआ सपटीनेट कनल पाचवी बटालियन में इस विश्वास को लेकर वापस लौटा कि उसको अपने अजीबस्थ अधिकारियों का समर्थन प्राप्त नहीं है। और एन समूह ऐसा है जिसने उस बटालियन का कमांड प्राप्त करने से रोकने के लिए पढ्यत्र रिया था। वह पुरानों बानों को भूल जाने के लिए तैयार नहीं था। उसने अपनी गिनयता को छिपाना नहीं और उन अधिकारियों को जि हे वह अविश्वाम की दृष्टि से दत्तता था उनके सनिकों के सामने ही उन्हें अपमानित कर देता था। कुछ अधिकारी उनमें सम्बन्ध में अपने विचारों को अपने तर्क ही रखते थे, परन्तु जय अपने प्रस ताप को गुल कर सिगापुर में सामाजिक पार्टिया तथा सम्मेलना में व्यक्त करते थे। सिगापुर के मलबो और जय सावजनित स्वारी पर रजीमेट की गिरी हुई स्थिति चर्चा का विषय बन गई थी। पाचवी बटालिया की दशा बिजने नीचे स्तर पर पहुंच गई थी यह दृष्टी से स्पष्ट हो जाया है कि बटालिया के अधिकारी रजीमेट की आंतरिक समस्याओं को अनिब नामरिक्तों के सहानुभूति पूण बानों को सुनाते थे। इस पर टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है।

यदि बटालिया युद्धरत क्षेत्र में होती तो मन्भवत स्थिति इससे कुछ अच्छी हो सकती थी। परन्तु १९१५ में सिगापुर रैजिमेंट दृष्टि से पिछड़ा हुआ क्षेत्र था। भातिवाल में यद्यपि चर्चा की निमुक्त अशक्तता के कारण होती थी, सिगापुर सुवद था। वहाँ का सामाजिक जीवन यद्यपि विभिन्न प्रकार का था, परन्तु गनिशील था। जबकि सेली के लिए यहाँ बहुत सुविधा थी। मलाया के बनों में बड़े जानरों के शिकार से लेकर सिद्धाते पादग में क्रिकेट और स्थानीय भद्र जनो के सुंदर घास कटे हुए तानों पर क्रिकेट खेलने की सुविधा थी। सनिक ड्यूटी बठार और बचा देने वाली नहीं थी। अधिकतर सभारोह सम्बन्धी सनिक ट्यूटी हाती थी। सिगापुर की गरम और आद्र जलवायु में अधिक ओजस्वी रैजिमेंट प्रशिक्षण की गुजाइश नहीं थी फिर वहाँ सनिक बचाव मद करान के लिए क्षेत्र भी कम थे यदि चाई उनको आवश्यक समझता। केवल प्रसाधारण सनिकों शिवाही ही जमला में शिवाार खेलने जाता था और अभी हाल में लगाए गए बहुमूल्य रबर के बाग उद्द सनिका की पहुंच के बहार थे। वे उनमें नहीं जा सकते थे। अतएव सिगापुर की सनिक व्यवस्था में परब तथा अच्छे और मध्य माच पास्ट का महत्व बहुत अधिक था।

पाचवी बटालियन सिगापुर में कई वर्षों तक रही थी निस्सदेह उसका लग पर प्रभाव पडा। यथा देन वाले इस जलवायु में एन छोटे समूह में जिन घेर में रख दिया गया था। आपनी भेन जोन तथा सदभाव रख पाना एक कठिन समस्या थी। यदि छोटी-छोटी शोभ उत्पन्न करने वाली बानों को बहुत अधिक तन नहीं देना हो तो अपने पर नियंत्रण रखना तथा सहिष्णु होना आवश्यक होता है। पाचवी बटालियन के

आफिसर भोजन ग्रह (मेष) में इन गुणों का अधिकतर प्रभाव था। पर ॥ काल और उन अधिकारियों में जिन्हें वह कुचक्रों मानता था। दुर्भाग्यवश बहुत गहरी पठ गई थी। फिर भी सब ठीक हो जाता यदि पाचवी बटालियन की नियुक्ति उस क्षेत्र में होती जहाँ उसने अधिकारी चाहत थे। अर्थात् मसोपाटामिया के युद्ध मोर्चे पर परंतु उसका हागनाग सैनिक दृष्टि से पिछले और गतिहीन क्षेत्र में भेजा गया।

युद्ध से दूर रखे जाने की भावना और अधिक कष्टदायक हो गई जबकि "बिग्स भान लाइट इन्फैंटरी" ब्रिटेन के लिए रवाना हो गई और जर्मनी का विध्वंसक समुद्री जहाज "एमडन" ब्रिटिश जहाजों की हिंदुस्तान के महासागर में डुबी रहा था। उस स्थिति में सिंगापुर में मयेप्ट सेना का रखना आवश्यक था विशेषकर जब कि "एमडन" पाच सौ मील उत्तर पश्चिम में साहसिक घावा करने पनाग पहुंच गया और एक लसी ब्रजर और फ्रेंच इंस्ट्रायर (जहाजों का नष्ट करने वाला) कि तु ग्यारह दिनांक ६ नवम्बर, १९१४ को उसकी एच एम ए एस सिडनी जहाज से मुठभेड़ हुई और वह समाप्त हो गया।

एमडन-जहाजों को डुबाने वाला के समाप्त हो जाने पर सिंगापुर तथा उसके व्यापार का बड़ा खतरा समाप्त हो गया। एमडन के समाप्त हो जाने पर तत्पश्चात् दूर ही गया प्रत्येक व्यक्ति शिखर नीकरण का भ्रम में प्राप्त करने लगा और "बोवली" जहाज का नौ प्रस्थान की योजना दे दी गई। भारत में यह रीति थी कि जब कोई नियमित-रगुलर ब्रिटिश यूनिट ब्रिटिश सेना जाती थी तो उसके स्थान पर प्रादेशिक सेना (टरीटोरियल रजीमेंट) जाती थी। सिंगापुर में यह आवश्यक नहीं समझा गया यही नहीं वह योजना करने वाले उच्च अधिकारी एक पग आगे बढ़ गए। बर्मेस चीन के सधि बन्दरगाहों और चीनी समुद्र तट पर स्थित जर्मनी के प्रदेशों की चौकसी करने के लिए सेना की आवश्यकता थी। यह तय किया गया कि हागनाग से एक बटालियन का बड़ा लाकर वहाँ चौकसी करने वाली सेनाओं की संख्या में वृद्धि की जावे उस भारतीय बटालियन का स्थान पाचवी लाइट इन्फैंटरी ले ले।

पाचवी बटालियन के अधिकारियों ने इस प्रस्ताव का बुरी दृष्टि से देखा। जब कभी सैनिक कायवाही करनी होती थी तो राज्य भक्त पाचवी को पीछे छोड़ नहीं जाता था जिस प्रकार सेना के पीछे ड्रम बजाने वाला रहत है।

बंगाल नेटिव इन्फैंटरी * की बयानीसवी रजीमेंट होने के रूप में वह बंगाल और अफगानिस्तान और प्रथम सिक्ख युद्ध में तीन भयंकर युद्धों में लड़ी थी। १८५६ के सैनिक विद्रोह में बयानीसवी रजीमेंट सागर में विद्रोहियों की ओर जाती गई थी। किंतु किसी तरह वह उस घृणा से बच गई जाय विद्रोही सेनाओं पर बरसाई गई। १८६१ में उसका रजीमेंट बंगाल नेटिव लाइट इन्फैंटरी के रूप में पुनर्संगठन किया गया। जिनमें बरमा और अफगानिस्तान में विजय प्राप्त कर और अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त

* पाचवी लाइट इन्फैंटरी की उत्पत्ति का पूरा विवरण 'अ परिस्पेक्ट' में पाठक देख सकते हैं।

की थी उसको "राज्य भक्त पाचवी" की उपाधि से पुरस्कृत किया गया। १८५६ के सैनिक विद्रोह में उसके वास्तविक धाचरण का सम्भवतः मुला दिया गया। क्योंकि १८५७ के सैनिक विद्रोह पर १९१५ में की जाने वाली टिप्पणियों में ५८ वर्ष पूर्व के इस विद्रोह में उस सेना की उच्च राज्यभक्ति की निरंतर प्रशंसा की जाती थी। तब उसने विद्रोह नहीं किया तो अब उसने क्यों विद्रोह किया? यह एक सद्भावित प्रश्न था परन्तु उस समय उसने सिंगापूर के निवासियों को इस प्रश्न पर सोचने की विषय कर दिया।

वह रजिमेंट घग्गाधारण थी क्योंकि उसमें सभी सैनिक पूर्वीय पंजाब और दिल्ली के मुसलमान रगर तथा पठान थे और थोड़े से बिलोचो थे। सिंगापूर में नववर्ष के दिन जो घटना घटी उस पर सैनिका के घम का प्रभाव था।

महामुद्र के प्रथम दो वर्षों में जर्मनो, तुर्कों और भारतीय क्रांतिकारियों ने भारतीय सेनाओं के घटकों में असन्तोष फैलाने का भागीरय प्रयत्न किया था। * पान इस्लाम के एजेंटों ने यह प्रचार किया कि मुसलमानों को टर्की से मुद्र करना जो इस्लाम की शिक्षावत्त वा मुख्य स्थान है, गहन है। अस्तर्द्धिया बरिका के समीप स्थिति मस्जिद का मीनवी नियमित रूप से इस तब का उपदेश देता था और सैनिक उमको ध्यान पूर्वक सुनते थे। एक भारतीय व्यापारी नासिम मसूर भी सगमग इसी प्रकार का प्रचार करता रहता था। वह समुद्रतट पर पसौर पंजाब में एक बोंफी की दुकान चलाता था। जहां सैनिक बोंफी पीन बहुत करके जाते थे। इनके अतिरिक्त और भी बाणिया भी जो सैनिका के काना में इसी प्रकार की बातें फूसफुमाती थीं। बहूषा पाचवी पटालियन की दुबडिया मुद्र के कदियों की चौकसी करने के लिए मुद्र कदी सिबिर की रत्नवाली के लिए भेजी जाती थी जिनमें ऐमदन जहाज के कुछ नाविक भी थे। ऐसा प्रतीत होता है कि जर्मन कदिया ने भारतीय सैनिका को विदवास दिला दिया था कि * केवल जर्मनो तथा मध्य योरोप की शक्तिवा मुद्र में जीत रही हैं वरन कसर स्वयं मुसलमान हैं और पगम्बर मुहम्मद साहब का वधन है। सनियों के मस्तिष्क में यह बठ गया कि जर्मन कदी मुसलमान हैं और ब्रिटेन ने मुसलमानों के विद्रुद मुद्र छेवा है।

दो भारतीय अधिकारी टर्की के पक्ष में प्रचार करते थे अस्तु इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं थी कि सनिका में असन्तोष की गम्भीर स्थिति उत्पन्न हो गई थी। सनिका में इस बात का विता उत्पन्न हो गई कि उनको टर्की से लडने के लिए भेजा जावेगा और जब अपने अतिम निराक्षण के समय ब्रिगेडियर रिवाउट यह बहना भूल गए कि रजिमेंट को हायकाय भेजा जा रहा है तो सनिकों में तुरन्त यह कानाफूसी होने लगी की कि ब्रिगेडियर उह सब बात बतलाने से मयमीत हो गया कि उह तुर्की से लडने के लिए मंसोपोटमिया भेजा जा रहा है।

मानो यह सब कारण सनिकों में असन्तोष उत्पन्न करने के लिए यथेष्ट नहीं

* इन प्रयत्नो की कहानी अगले परिच्छेद में दी गई है।

थे पाचवी बटालियन में दो अय प्रभाव काम कर रहे थे। महायुद्ध के छिड़ने के समय से भारतीय क्रांतिकारी अमेरिका से पलायन आ रहे थे। उनमें से बहुत से अपने घर पलायन में जाते समय रास्ते में सिगापुर में रुक गए और उहाँने मस्जिदों और मंदिरों में यह प्रचार करना शुरू कर दिया कि सब भारतीय फिर चाहे उनका कोई धर्म क्यों न हो उन्हें ब्रिटेन के विरुद्ध उठ खड़े होना चाहिए और इस अवसर का कि जब ब्रिटिश राज्य का ध्यान महायुद्ध के कारण बड़ा हुआ है, लाभ स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए उठाना चाहिए। पुनः इस राष्ट्रवादियों की बात को सैनिकों ने ध्यान से सुना। अय सेनापति से पृथक पड़ी हुई उस सेना के सैनिकों को ऐसा लगा होगा कि बाहर की दुनिया टूट रही है, नष्ट हो रही है भाग्य ने उन्हें गलत पक्ष में ला खड़ा किया है जबकि इस्लाम पर आक्रमण किया जा रहा है और उनका देश स्वतंत्रता प्राप्त करने वाला है। अलक्षेत्रिया बरिबो ने किसी ने इसके विपरीत मित्र बात नहीं कही।

प्रति में पदावृत्ति के प्रश्न के भ्रमों को लेकर पाचवी बटालियन दो शिविरो या समूह में बंट गई। एफ ह्यल्लार जिसे कमीशन रैंक मिलने की आशा थी, वह कमीशन प्राप्त करने में असफल रहा। इसको लेकर सैनिक दो दलों में बंट गए एक दल उनका था जो कि उस महात्वाकांक्षी हवलदार को इस प्रकार अवमानित किए जाने पर बहुत क्षुब्ध था और दूसरा दल उन लोगों का था जो कि उसके प्रगति रोध पर बहुत प्रसन्नता था।

बटालियन की आंतरिक कठिनाइयों और बाह्य राजनीतिक प्रभावों को सैनिकों को प्रभावित कर रहे थे देखते हुए यह भावना की बात है कि सफट इससे पूर्व ही क्यों नहीं फूट पड़ा निश्चय ही इस बात की बहुत-सी चेतावनियाँ मिल चुकी थी कि अलक्षेत्रिया में खतरा मटार रहा है। नागरिक सैनिकों के आचरण में परिवर्तन हो जाने के सम्बन्ध में टिप्पणी करते थे। विशेषकर उन सैनिकों के आचरण में विशेष परिवर्तन हुआ था जो तजोम-मटाम जो योरापियन लोया के स्नान करने का प्रिय स्थान था जो जाने वाली सड़क की चौकनी करते थे। वे सैनिक अल्पतः नाराज दिख जाई करते थे। सैनिक विद्रोह के फूट पड़ने के कुछ दिनों पूर्व दो कप्तानों ने रजिमेंट में जो सफट की स्थिति उत्पन्न हो रही थी उसमें वारे में तुल शब्दों में कहा था। उनकी इस टिप्पणी ने श्रीमती ई एफ हाथल मध्य सिगापुर में मैथाडिट प्रकाशन गृह में रहने वाली गिराणपर जी गायकर्ता के कथन की पुष्टि कर दी थी।

यद्यपि सैनिक विद्रोह की योजना सावधानी से तयार की गई थी। परंतु योजना के अनुसार जग बह होना चाहिए था उसमें पूर्व फूट पड़ा। जब ब्रिगेडियर रिगाउट ने विदाई का निरीक्षण किया रजिमेंट का भारी सामान तथा उपकरण मशीन गनों सहित नौरे जहाज पर भेज दिया गया था। छूटे अस्थ-अस्थ तथा थाली बारूद दूसरे दिन प्रातः काल भेजी जाने वाली थी सैनिक विद्रोहियों की योजना थी कि उस रात्रि में दो बजे रात्रि को अज्ञात पर धावा बोला जावे। परंतु जब समाप्त हो गई तो मारिन का विचार बटन गया और उसने ऐम्पूनिश का उसी दिन दोपहर के बाद जहाज पर भेजे जाने की आज्ञा दे दी तो सैनिक विद्रोह के नेता अपने अनुसूचित कार्य

को नियत समय से पूर्व करने पर विवश हो गए। जब तीन बजे सायनाल को सकेत देने वाली गोली चलाई गई। तो एग मी ओ के एक समूह ने तथा सॉनो ने तुरन्त उन टुक़ा को घेर लिया जिन पर ऐम्बुनिशन लादा गया था और उ हाते उसे शीघ्रता-पूर्वक विद्रोही सनिका में बाट दिया। ऐसा अनुमात किया जाता है कि आठ कम्पनियों में से चार कम्पनियों ने विद्रोह पर दिया था। श्रीमती हावेल से कॅप्टेन बोयसी (एक अधिकारी) ने बटालियन की आतङ्क स्थिति के सम्बन्ध में चिन्ता प्रगट की थी वह उन विद्रोही सनिकों के पास गया और उनसे इस बाय का जब उसने प्रतिपद्य किया तो उसे गोली मार कर मार दिया गया।

शय अफसरा (अधिकारियों) जिहाते शीघ्रता पूर्वक पतरे का अनुमात कर लिया उन्होंने भारतीय अफसरों से हस्तक्षेप करने की वहा। उनसे उत्तर मिला कि वान बहुत आगे बढ़ चुकी है। यह सुनकर उन अफसरा ने तय-विता में समय को नष्ट नहीं किया वे नौरवैटा की ओर भागे वह सैनिक शिविर समीप ही था जहा मलाया स्टेट वालटियर राइफिन्स का सैनिकी का प्रशिक्षण चल रहा था। कॅप्टेन सिडनी स्मिथ ने अपने विद्यार्थी वालटियरों को एकजिन किश और यह पाचवी बटालिया के बगले की ओर चल दिया। वे लोग बिगोही सनिका से पहले वहा पहुंच गए और उससे बगले की प्रतिरक्षित कर दिया। उसी समय बनस ने शिगेडिपर आरल रिडाऊट को फोन किया। फोन ठीक समय पर कर दिया गया कुछ ही मिनटा में फोन की लाइन फाट दी गई और गोलियों की वीछार ने घोषणा कर दी कि उसके बगले की घेराब दी कर ली गई है।

रिडाऊट फोटो बनिंग पहुंचे और उन्होंने एग एस वउनस को सन्देश भेजा। सीमाव्ययण की सनिका का तट पर जाने की छुट्टी नहीं दी गई थी। कॅप्टेन बाल ने नागरिक पुलिस का पांचवी बटालिया के विश्राही हो जान की चेतावनी दे दी। किंतु किसी कारण से जिससे कभी व्याख्या नहीं की गई। श्रीमती रिडाऊट ने एग ओ डेन्नु शिविर से फोन पर सम्पर्क करने में देरी कर दी। जिसका परिणाम जसा कि हम आगे देखेंगे बहुत से गाडों (घोसनी करने वालों) के लिए घातक हुआ।

पाचवी बटालियन के पास ही मलाया स्टेट लक्कर बटरी के एक सौ सैनिक गाइड रखे हुए थे। जो कि प्रधानत एक निक्कल यूनिट थी। गाइड अर्थात् मागदशक नाम • होते हुए भी गाइड का एक दूसरा यूनिट था जो आनरिक कठिनाई से आजा-त था। उनकी कठिनाई मुख्यत धार्मिक थी। १९१० में मलाया में सिक्कल समुदाय जो मजाह मानवा के सघप के नाम से प्रसिद्ध हुआ, के कारण विघटित हो गया था। यह विभाजन आज भी मलाया में सिक्कलों को एक दूसरे से पृथक् किए हुए है। यह सघप एक धार्मिक सुधार आंदोलन के कारण उत्पन्न हुआ था जिसका पंजाब के माल-बाई जिले में प्रादुर्भाव हुआ। मालबाई लोग और परम्परा तथा रुढ़ियों को अधिक मानने वाले मजाह लोगों में भयकर द्वन्द उठ खडा हुआ। यह भगडा धार्मिक

• परिशिष्ट 'ब' को देखिए।

सिद्धांतों और रूढ़ियों के कतिपय बिन्दुओं को लेकर था। इस भगड़े ने गाइड (माग दशक सैनिक) में इतना भयंकर रूप धारण कर लिया कि सिक्खों को मजाह और मालवा कम्पनियों को पुनर्गठित कराया गया। ऐसा सदेह करने के कारण हैं कि परिभ्रामी क्रांतिकारियों ने इस भगड़े का लाभ उठाया उस और उत्तेजित किया क्योंकि १९१४ में गाइड माग दशक सैनिकों ने विदेशों में काम करने से इन्कार कर दिया। इनकी पूव प्रतीका में भेजे जान के लिए रखता गया था।

बटरी के सैनिकों ने थोड़े से समय के लिए विद्रोही सैनिकों का साथ दिया वे कप्तान मकलियन के नियाम स्थान पर गए जो रायल गरिसन आर्टिलरी जो गाइडों माग दशक सैनिकों के साथ जुड़ी हुई थी का एक अधिकारी था और उसे मार दिया। उस हत्या को करके माग दशक सैनिक गायब हो गए। वे अपनी तोपों को छोड़ गए। जिनको सौभाग्यवश विद्रोही सैनिक चलागा नहीं जानते थे। इस बात की सम्भावना है कि सिक्खों का हृदय परिवर्तन हुआ हो उनका विचार बदल गया हो और उन्होंने पंजाबी मुसलमानों का साथ देने के विरुद्ध निष्पत्ति किया हो। जिन्हें वे अपने से हीन समझते थे बाद की कुछ गाइड माग दशक सैनिक मरताया में उत्तर की ओर बूच करने हुए पाये गए। उनका कहना था कि वे पैराक म टॉप के सैनिक जिन्हें म रिपोट-हजारी देने जा रहे हैं। कुछ सिंगापुर में बैरिका और घातों में रिपाट की।

जबकि गाइड माग दशक सैनिक चले गए तो विद्रोह सैनिकों ने माटिन के बगले पर अधिनार करने और उसे बनी बनाने के लिए एक दल को पीछे छोड़ दिया। उसके उपरांत वे दो समूहों में बंट गए एक दल पासिर पंजाग के चक्करदार माग से सिंगापुर की ओर बढ़ा और दूसरा दल ग्रामीण क्षेत्र का पार कर 'टांगलिन' जा जर्मन सैनिकों का बंदी शिविर था, उसकी ओर गया।

पहले दल को सिंगापुर गिते क गिरा जज (यायाधीन) श्री मी की डायसन मिल जिन्हें उ होने मार दिया। उसके उपरांत उन्होंने चाइत म्युचुअल बीमा कम्पनी के श्री माशल और ईस्टन ऐक्सेटेशन टेलीग्राम कम्पनी के श्री वी एम वलकोम्ये तथा उनकी पत्नी को गोली से मार दिया एक सनकी श्री गिबसन उन्हें मिल जो सड़क पर स्वयं अपने से बात करते हुए टहलते हुए मिले। विद्रोही सैनिकों ने यह तप किया कि वे पागल हैं उन्हें अपने रास्ते जान दिया जावे। कुछ सैनिक नगर की ओर मुड़ने के बजाय पासिर पंजाग की ओर बढ़ गए जहां वे अपने गुरु दानी की दुकान के भातिक मसूर से सम्मिलन स्थान पर मिलने की आज्ञा करते थे। रास्ते में वे श्री मकलियन तथा श्री डन जो एक बहुत बड़े व्यापारिक मस्थान प्रयत्न वाघ के कमचारी थे के समुत्तट पर बने हुए बगना के पाग घाए। उन दोनों न उस दिन प्रात काल एक स्नान करने के लिए पार्टी को आमंत्रित किया था और उन स्नान करने वाले प्रतिभा में से श्री बट रवध जो उनके निकट पट्टी भी चाय पीने के लिए रुक गए थे। विद्रोही सैनिकों ने उन्हें बरामदे में सिगरेट पीते और घात करते हुए देखा उन्होंने तीनों को गोली मार दी। उन ने उससे बचने की कोशिश की परंतु जब वह बरामदे की रतिल पर खड़े का प्रयत्न कर रहा था, तब उसके गाली लगी।

जिन सैनिकों ने नगर का रास्ता बिया या वे पावनी बटालिया के लपटोनेट इलियट के पास घाए और उन्हें मार दिया। इस सड़क पर उनके पाच में से वह पहला था। एक अथवा दो नागरिक भाग्यवान थे उन पर गोली चलाई परंतु वे भागने में सफल हो गए और उंहों भागकर शहर में खतरे की सूचना दे दी।

इतने में विद्रोही सैनिकों का मुख्य दल नार बजे सायंकाल के लगभग टांगलिन पहुंच गया। युद्ध बंदी शिविर की चौकसी करने वाले रखवालों को उंहोंने नितांत प्रसावपात पाया।

वहां जाहौर राज्य की सेना के मलाया सैनिकों की सहायता से सिगापुर वालटियर राइफल्स के वालटियर स्वयं सेवक इगुटी कर रहे थे। मनीय सैनिक जाहौर सुल्तान की निजी सेना के सैनिक थे जो क्विटा का विक्ट मिन या और जेन्टलमैन के पार अपने राज्य का शासन करता था।

जिन समय विद्रोही सैनिक गाड (गाड) में उभरे उस समय गाड कमांडर लपटोनेट अब माटगोमरी ग श्रीमती रिडाऊट से मारा गया था। रिडाऊट के रिगोनेर का उठाया ही था। श्रीमती रिडाऊट ने फोन पर माली बसने की अथवा गुनी और फिर फोन बंद हो गया। फोन की लाइन बंद गई य सुम ११ गई, सब माटगोमरी घातक रूप में घायल होकर गिर पड़े और विद्रोही सैनिक उनके ऊपर स छनाग मर शिविर में घुस गए। वहां उंहोंने बमार्डेंट दो बटना, दो कारपोरली तथा चार वालटियरा को मार दिया। आरमी बसिस बीपस के साजेंट राबमटन, रायल गरिसन आरटिलरी के साजेंट वेगले एक मलाया अधिकाारी और दो मलाया सैनिक, एक जर्मन युद्ध बंदी मारे गए। उंहोंने तीन वालटियरों और एक कैदी को धारत कर दिया।

विद्रोही सैनिक शिविर में दौड़ रहे थे। और उनिया से हाथ मिला रहे थे जो कि प्रत्यंत भयभीत हो गए थे। यद्यपि शिविर के फाटक खोल दिए गए थे। जर्मन तथा जास्ट्रियन युद्ध बंदी शिविर में नहीं यरन वे घायल और मृतकों की सहायता करते गए। कारण यह था कि युद्ध बंदी मुक्त ब्यापारी थे जो यहाँ से सिगापुर में रह रहे थे। उनको उनके रखवाले (गाड) श्रद्धांजली तरह जानते थे उनमें युद्ध पूर्व के उनके बहुत से मित्र थे। बंदी अस्पता अधिन कठोर और अम साधन नहीं थी और शिविर की चौकसी बहुत ढीली थी। बाद को जैसे दिन चढता गया, सत्रह जर्मनों ने अपने भाग्य की परीक्षा करने का निश्चय, किया वे शिविर से निकल गए। बाद को उनमें से चार पुन गिरफ्तार कर लिए गए। परंतु शेष तटस्थ डच ईस्ट इंडीज में पहुंचने में सफल हो गए।

यह विडम्बना ही कही जावगी कि जर्मन कदिया का एक समूह शिविर में निकल जाने के लिए एक गुप्त सुरंग बना रहा था। जब विद्रोही सैनिक एकाएक शिविर में पहुंचे तो वह सुरंग सम्पूर्ण होने के समीप थी। कुछ दिना में ही वे बंदी शिविर में निकल जाने में सफल हो जाते। किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश बन्दिया ने सोचा कि सैनिक विद्रोह का साधन उठ कर व दीगृह से

मुक्त होना स्वतंत्रता प्राप्त करने का सम्मानजनक तरीका नहीं है अस्तु उ हाने उस प्रवृत्ति को अस्वीकार कर दिया ।

पर तु एक व्यक्ति जा व दी शिविर से निकल जाने के लिए ठुठ सकल्प था वह लैपटोनट जूल्स लाटरवैच था । वह ऐमडन जहाज का पूव अधिकारी था और उसने पाचवी बटालियन के सैनिकों के नैतिक बल को फिरने में बहुत काम किया था । पाचवी बटालियन ने विद्रोह कर दिया तो लाटरवैच का सारा प्रयत्न क्रिमी प्रकार सिगापुर से निकल जाना में केन्द्रित हो गया । वह अपने कतिपय नाविकों के साथ उस रात को निकल गया और स्टेट को पार करके जोहोर में पहुँच गया । वहाँ उसे एक नाव मिल गई जिसके द्वारा साहसिक यात्रा करके वह गंधाई पहुँच गया । बाद का वह समुद्र में धावा मारने वाले 'मोवे' जहाज का कमांडर बना की जिसमें एमड ही तरह बहुत से ब्रिटिशजहाजों को डुबो दिया ।

अधिकांश युद्ध बंदिया द्वारा शिविर से निकल जाना अस्वीकार कर देना सैनिक चर्चित हो गए उनमें से लिए वह एक पहली बात थी । जसा कि लाटरवैच और उसके मित्रों ने उनका परोक्ष रूप से आज्ञा दी थी । उ हाने उनके लक्ष्य का पूरा कर दिया था । पर तु उ हाने देता कि जिन् अंग्रेजों को उ हाने मोली मारी थी उन ब्रिटेन वासियों की जरूरत व दी सहायता कर रहे थे । आश्चर्य चर्चित होकर विद्रोही सैनिक बितर गए । आग क्या करे वे यह नहीं जानते थे । कुछ लोग उस टर्की के युद्ध पो की खाज में सिगापुर गए जो मसूर के कथनानुसार उ हैं उस द्वीप से ल जाने के लिए आने वाला था । अब विद्रोही सैनिक जो अधिक जागरूक थे और वास्तविक स्थिति समझते थे उ लोग अनुभव कर लिया कि खेन ममाप्त हो गया । वे समझ गए कि उ ह जरूरतों के बारे में गलत फहमी में रक्खा गया (खेद की बात यह थी कि कुछ विद्रोही सैनिक जरूरतों का तुक समझते थे) वे वहाँ से निकलने के लिए एक मात्र मार्ग स्ट्रेट के पार जो कि द्वीप को प्राय द्वीप से पृथक् करता था और जोहोर के जंगल में जाता था उसी मार्ग पर निकल पड़े ।

सैनिक विद्रोह का प्रारम्भ हुए कुछ ही प दे हुए थे कि तु विद्रोही सैनिक उद्देश्य विहीन होने लगे थे । उनका कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं था और न उनका कोई नेता था जो उनकी बतलाता कि उ हैं क्या करना चाहिए । शीघ्र ही वे बितरने लगे व यही अनुभव नहीं कर सकते कि उनका बल एक साथ सगठित होकर रहने में है । बिखरे हुए, छलम-छलम विद्रोही सैनिकों के दल नगर की सड़कों पर घूमने लगे उ होने कुछ नागरिकों को गाली मार कर मार दिया । यद्यपि उ हाने अधिकांश स्त्रियों को बिना छेड़छाड़ के जाने दिया । स्त्रियों ने जो कुछ हुआ उसकी बड़ा चढ़ा-कर कहा तो लोगों को सुनाई इस कारण जनता में भय और आतंक फैल गया और भगदड़ मच गई । पन्द्रह मई को अपनी टिप्पणी में 'स्टेट टाइम्स' समाचार पत्र ने लिखा कि यदि विद्रोही सैनिकों में एक भी योग्य नेता प्रगट होता तो वे सीधे सिगापुर में बूच कर सकते थे और जसा चाहते बंगा कर सकते थे । क्योंकि द्वीप इस प्रकार की घटना का सामना करने के लिए बिलकुल तैयार नहीं था । पर हुआ यह कि विद्रोही सैनिक विधिसा की भाँति चारों ओर दौड़ते रहे और उ होने विस्मय का जो लाभ उ है मिल सकता था वह उ हाने खो दिया । रात्रि पड़ते-पड़ते ब्रिटिश

लोग प्रारम्भिक घण्टे तथा घबराहट से स्वस्तीभूत हो गए और उन्होंने अपने को समर्पित करना आरम्भ कर दिया ।

ब्रिगेडियर रिडाऊट ने सभी सावजनिक और सरकारी इमारतों तथा नौका स्थलों पर सशस्त्र पहरेदार नियुक्त कर दिए । उसने वालटियरों को ड्रिल हाल पर तथा पुलिस को आरचड स्टेशन पर केंद्रित कर दिया । पुलिस की सहायता के लिए छत्तीसवीं सिखल रजिमेंट से मिलने के लिए यात्रा कर रही थी और मार्ग में थी । जापानी वास्तव अपने १६० देशवासियों को विशेष कास्टेबिल के रूप में नियंत्रण में रखते हुए था और पुलिस ने उनको रोकफिल्ले दे दी ।

बड़ी सरपट में नागरिकों से मोटर कारें अधिग्रहण कर ली गईं उन्हें घातुओं की छादों से आरक्षित करके उनका उपागरी से योरोपियन स्त्रियां और बच्चा का साने के काम में उपयोग किया गया । उन्हें अस्थायी शरण तो गवर्नमट हाऊस में दे दी गई । बाद का नफल ब दरगाह में लड़े जहाज पर उनमें से कुछ को ले जाया गया । पासिर पजाग क्षेत्र से विद्रोही सैनिकों का गजर में प्रवेश अवरुद्ध करने के लिए रिडाऊट ने कडमस जहाज के अस्थी राबिक रॉयरा के दल को आग भेजा । साढ़े ६ बजे सायंकाल को मागल ता फौजी वापस लमाण जान की घोषणा कर दी गई । सूयास्त होते-हात द्वीप में उचित सुरक्षा की व्यवस्था हुई ।

यह निष्पत्ति किया गया कि दूसरी प्राथमिकता पाचवी बटालियन के कनल के बगले में जो लाग पिये हुए हैं उनका जैसे ही यथेष्ट रोगनी हो जावे, पिकालम के काम को दी जावे । विद्रोही सैनिक रात्रि में बगले पर गोलियां दागते रहे परंतु वे बगल पर सोधा आक्रमण करने से अन्वयग माटी के पास एक सच लाइट का प्रकाश जो बगले और उसके कम्पाऊट पर पड़ता था, के कारण हिचक गए । बगले के अन्दर पांचवी बटालियन के एन मजर की पत्नी न १८५७ के सैनिक विद्रोह की परम्परा के अनु रूप ही काम किया वह रखा करने वालों में घायलों के जटमा पर पट्टी बाधती थी और बीच में रखकों का साथ भी देती थी ।

इस काम को करने के लिए एक कार्यकारी सेना जिसमें इक्कीस तोपची पचास वालटियर, पच्चीस सशस्त्र नागरिक तथा कडमस जहाज के आदमी थे । सैपरीनेट बनल ही डब्लू वारलो भार ए के नतृत्व में गठित की गई । उनको यह आशा दी गई कि पी पटते ही बगले की घरा ब दी का ताड कर बगले में पिये हुए लोगों को निकाला जावे ।

विद्रोही सैनिक पुलिस स्टेशनों पर और बगल पर गोली चला रहे थे । इस कारण अधवार के घंटों में गट-रह कर गोली चलाए जाने की आवाज आती थी । अलेक्षेड्रिया रोड पुलिस स्टेशन के डाक्टर ए एफ लगे (सिगापुर वालटियर मडिकल कम्पनी) जब मार जो ए की एन तोपची को जो घातक रूप से घायल हो गया था, धूपा करने गए तो मार गए ।

बकिट सिमाह पुलिस स्टेशन पर पाचवी बटालियन के १३८ सैनिकों ने अपने को पुलिस के हवाले कर दिया और आरचड रोड स्टेशन पर दो विद्रोही सैनिक गोलीयों के आदान-प्रदान में मारे गए ।

घाशय की बात थी कि उस सारे समय के अतयत नगर का जीवन सामान्य रूप से चलता रहा। चीनिया का माने उससे कोई सरोवर ही नहीं था कि जो कुछ उनके पास हो रहा था। चीनिया का क्षेत्र (बाइना टाउन) उम रात्रि को पर मनाता रहा। स्टेशन पर पनाग से डाक गाडी समय पर आई और रात्रि को डाक गाडी जो पनाग का जाती थी समय पर गई पनाग रल गाडी म जाहौर राज्य की सेना के १५० सैनिक, जाहौर सुल्तान के व्यक्तिगत गुरुत्व म सवार थे जो कि गवनमेट हाऊस द्वारा सहायता की प्राथना पर आए थे।

जब द्वीप पर प्रातःकाल का प्रकाश फूटा तो प्राऊनसा मोटर कारो म अपनी सहाय्य सेना का लेकर घिरे हुए बगले की ओर गया। घलसेद्रिया बरिका के समीप सैनिक मोटरों से उतरे और उन्होंने बरिका पर घावा बोल दिया और वे बगले की ओर बढे। एक ऊँची पहाडी म गोसिगो की मार से उहू थोडे समय के लिए रुकना पडा। पर तु उ होने पाशव घातन के द्वारा उस पर विजय प्राप्त कर ली और बगले पर पहुच कर घाऊनका म यह तय किया कि क्योकि विद्रोही सैनिको, गो शक्ति उदृत अधिब है अतः उनका (बगले) को निश्चय पूर्वक लगने अधिनार मे नही रक्खा जा सता अनापन र कि उन तथा सहायता के लिए गई सेना आवरण गोती की बाँधार मे यहा स हट गई। उन युद्ध म म गनेक मार गए और चार घायन हो गए और विद्रोही सैनिको म स स्यारह हताहत हुए।

जब ब्रिगडियर की सेना नगर की ओर वापस लौट रही थी तो उ होने टाग-लिन के गार्ड के मैदान तथा अ न स्वाना का साफ कर दिया और तीस चालीस विद्रोही सैनिको को पकड लिया। पानवी यदालियन के सैनिक जब सम्पूर्ण मिगापुर मे अत्म समपण कर रहे थे। म य बहुता ने मस्त्रिण म शरण रा ली। जब उ हँ भरोसा ली, हो गया कि जयगुन प्रगल् होने म बाई जातिम नही है सभी म बाहर निकले। उनमे से जि हान आत्म समपण कर दिया अधिकार का विद्रोह से कोई तरा कार नो था पर तु यह अस्वाभिक नही था कि ब्रिटिस अधिकारियो ने उन सभी के साथ सदेह का व्यवहार किया कि जब तक जाच पढताल से पता न चल जात कि कौन विद्रोही थे और कान राज्यभक्त थे।

सम्पूर्ण सातह तारोख और सयह तारोख म भी छुटपुट गोरों चलती रही और आरबड राड स्टेशन पर आक्रमण को मार कर विफल कर दिया गया। म त म सप्टीनेट साग-आग सियाग जो मिगापुर वाजटियर सेना म कमोशन पान वाता प्रथम चीनी या के नृत्व म एक अभीक्षण दल भेजा गया जिसन यह रिपाट दी कि समस्त टागलिन और आर्सेद्रिया का क्षेत्र विद्रोही सैनिको से साफ हो गया है। पर तु सोप के गश्त लगाने वाले दल का एक पुराने चीनी कनिस्तान म नीचे तहखानो, म अस्त्र सस्त्रो का बडा भंडार मिला।

समुद्र पर जहाजा का वायरलस स सूचना दी गई और सयह तारोख को म च नूबर 'माटगाम' जो मिगापुर से सैनिक विद्रोह के दिन चला था। १६० घाट मिया गया तो मशीनगनो को उतारने के लिए वापस आया-। नृहसनिवार अठारह तारोख को दही नूबर 'मारल' बरगाह म ज मा और अपने १४० घादमियो

को उतारा। शनिवार को जापानी क्रूजर "टिसुचमा" ने पृथ्वर आदमी उतारे। रविवार को रगून से 'ऐडवाना' जहाज आ गया उसमें किंग्स मोन शापशाइर लाइट इंफैंट्री की चौथी बटालियन ही आई थी। उस समय तक यह अनुमान था कि पाषवी बटालियन के ८१५ में से ६१५ आदमियों ने या तो आत्मसमर्पण कर दिया था, या गिरफ्तार कर लिए गए थे और ५२ मारे गए थे। बोरनियो से खोजी सैनिक मुलाए गए जो उन लोगों को खोज निकालें जो जोहार, वे जंगलों में छिप गए हा इस प्रकार थोड़े-थोड़े करके उस प्रतिष्ठित रजिमेंट के खोये हुए भयभीत और आधे भूखे बचे हुए सैनिक पकड़ लिए गए।

जबकि थोड़े से बचे हुए भगोड़ा की खोज हो रही थी। अधिकारी गिरफ्तार किए हुए विद्रोही सैनिकों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाही करने में व्यस्त थे। २४ फरवरी प्रोवोस्ट माशल मेजर ए एम 'बोमसन न घोषणा की कि पिछले दिन दो आदमियों को कोर्ट माशल किया गया और गान्धी मार दी गई। वे उन बहूतों से पहले थे। जिन्हें कोर्ट माशल किया गया। सब मिलाकर १२६ का कोर्ट माशल किया गया। ४६ को मृत्यु दंड दिया गया और उ ह आउटराम रोड की जेल पर सावजनिक रूप से गोली मार दी गई ४१ को आजीवा कारावास और कालापानी का दण्ड दिया गया। ८ को बीस वर्ष, १६ को पाट्टह वर्ष, १० को दस वर्ष दो को सात वर्ष और १२ को एक से पांच वर्षों के कारावास का दण्ड दिया गया। पहले यह घोषणा की गई थी कि वासिम मजूर को सावजनिक रूप से लटका कर फासी दी जावेगी परंतु बाद को अधिकारियों का विचार बदल गया और फासी की टिकटी जो अशकनी थी वह गिरा दी गई और फासी की दूरान के मालिक को आउटराम रोड के बमटिली के समान जेल में अन्दर फासी दे दी गई।

२१ अप्रैल को दो भारतीय अफसरा सूबेदार डू डे खा और जामादार चिन्ही सा जि होन सैनिक विद्रोह को भडकान में सहायता की थी आउटराम राड जेल से ले जाए गए उनके दाना और सिक्क पुलिस चत रही थी। वे 'गामरिको की पोशाक में थे। जब उनकी सजा को उडू मलाया और चीनी में पड कर सुना दिया गया उनको खम्भो से बाध दिया गया उनकी आखा पर पट्टी नहीं बांधी गई और रायल गैरिसन आर-टीलरी ने दस सैनिकों के दस्ते ने गोली मार दी। उनकी मृत्यु को हजारों भारतीयों चीनिया, मलाया और थारोपियना ने देखा। उस दिन दोपहर के बाद औरा को भी गोली मारी गई। गोली मारने वाले दस्ते को उन मूनिटा से लिया गया जिनके आदमी इस मुड में मारे गए थे।

सब से इस बात पर कि कितने विद्रोही सैनिक मारे गए कुछ विवाद खडा हो गया है। सरकार आबडा को प्रकाशित करने की अनिच्छुक थी और थी डब्लू ज्याज मैन्सवेल स्ट्रेट सेंटिलनेट के स्वानापत्र औपनिवेशिक सचिव ने सैनिक विद्रोह के सावध म अपनी राजकीय रिपोर्ट में मृत्यु दण्ड का कोई उल्लेख ही नहीं किया। सामान्य रूप से यह स्वीकार किया जाता है कि सैतालीस विद्रोही सैनिकों को मृत्यु दण्ड दिया गया, यद्यपि इस सम्बन्ध में राज्य द्वारा गोपनीयता बरती जाने के कारण यह अफवाह कि वास्तविक आंकड़े अधिक हैं, बहुत अधिक प्रचरित हो गई थी।

२५ मार्च को मृत्यु दण्ड के एक धरसर पर गोली मारने वाले दल में सिगा-
पुर वालटियर थारटिलैरी मैक्सिम कम्पनी और सिगापुर वालटियर राइफल के ११०
आदमी थे। उन्होंने चाईस विद्रोही सैनिकों को गोली से मार दिया। प्रत्येक विद्रोही
सैनिक को मारने के लिए पांच व्यक्ति नियत किए गए। अंतिम प्राण दण्ड सत्रह मई
को दिया गया।

सैनिक विद्रोह के सम्बन्ध में ब्रिगेडियर जनरल हाउटन ने राजकीय जाच की
जो भारत से भेजे गए थे परन्तु उनकी रिपोर्ट कभी प्रकाशित नहीं की गई लैफ्टीनंट
जनरल ब्राउनलो सैनिक आदालत के अध्यक्ष थे और मेजर ऐज (१/४ के एस एल चाई)
और कप्टेन बात (पाचवी लाइट इन्फैंटरी) उनके सहायक थे। उनकी सैनिक विद्रोह
के सम्बन्ध में तिज की रिपोर्ट में छोटकरी के इस विशेष कथन पर कि सशस्त्र नागरि-
कों में इतनी घबेराहट बुद्धि थी कि बगले पर आक्रमण करने की बहुत भद्दी भूल न की
जावे। इस विशेष कथन ने सिगापुर के नागरिकों में तीव्र रोष उत्पन्न कर दिया।
वालटियर नागरिकों की ओर से तेज आडन के रूप में प्रति उत्तर आया कि हम खेद
है कि हम इस समादर वाक्य को वापस नहीं कर सकते।

सिगापुर के निवासियों का आडनलो के प्रति रूठ होना समझ में आ
सकता है। जो कुल सतालीस व्यक्ति मारे गए उनमें जांचे से अधिक वालटियर और
नागरिक थे। परन्तु यह नाराजगी शीघ्र ही सुप्त गई। अधिकारियों ने सैनिक विद्रोह
की विभीषिका को कम करने दिखलाना आरम्भ कर दिया और सिगापुर के निवासियों
ने उसे यह समझ कर कि युद्ध काल में इस प्रकार की घटनाएँ घट सकती हैं अपने मन
से निजाल फेंका और अपने कामों में व्यस्त हो गए। सैनिक विद्रोह के समय तथा उसने
केई सप्ताहों बाद तथा समाचार पत्रों पर प्रविचय (संस्तर) लगा दिया गया था कि वे
केवल राजकीय वक्तव्यों को ही प्रकाशित करेंगे। जब यह अनिश्चय उठा लिया गया
तो स्टेट टाइम्स ने सिगापुर में भारतीयों की मामा य राज्य भक्ति पर एक मूडु (नरम)
टिप्पणी लिखी साथ ही इस बात का भी अनुरोध किया कि सरकार ने हीप में जितने
भी भारतीय हैं उनका पजीकरण किए जाने की जा आना नै है वह जितना सम्भव ह
विचार शीलता से किया जाये। जनता का विश्वास था कि सैनिक विद्रोह एक स्थानीय
मामला था। इस भावना को सरकार ने भी बढ़ावा दिया। परन्तु वास्तविक सच्चाई
यह है कि सैनिक विद्रोह भारतीय क्रांतिकारियों के उस बड़े पडयत्र का एक हिस्सा था
जो उन्होंने ब्रिटिश राज्य को सिगापुर मत्तया और बरमा से समाप्त कराने के लिए रचा
था। उसने बाद के भारत पर आक्रमण करते जहा उन्हें आशा थी कि दक्षिण पूर्व
से आक्रमण होने पर जहा विद्रोह खड़ा किया जा सकेगा। यद्यपि सैनिक विद्रोह असफल
हो गया परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से वह महत्वपूर्ण है। वह क्रांतिकारियों की महत्वाकांक्षी
योजना अर्थात् भारत पर आक्रमण की एक महान सफलता थी। भारत पर आक्रमण
करने का स्वप्न कभी समाप्त नहीं हुआ। जसा कि हम देखेंगे कि जब १५ फरवरी १९४२
का सिगापुर पर जापानियों का अधिकार हो गया। जबकि इस के सैनिक विद्रोह की
मत्ताइसवीं वर्षगांठ थी तब क्रांतिकारियों की एक नई पीढ़ी को भारत पर आक्रमण कर
ना नया अवसर प्राप्त हो गया।

